बागेश्वर धाम एवं मेहंदीपुर बालाजी के चरणों में समर्पित

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र

संस्कार उजाला

सच की हुंकार

sanskarujala@gmail.com

संस्थापक स्व० सुखराम शर्मा एवम शिवकुमार शर्मा, श्री प्रकाशवीर

सच की हुंकार

संस्थापक
स्व. श्री आर. के. शर्मा

गाजियाबाद से प्रकाशित, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, हरियाणा, सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, हापुड, बुलंदशहर, मथुरा आगरा, इटावा, कानपुर एंव लखनऊ से प्रसारित

वर्ष : 12 अंक : 206 | शनिवार 16 नवंबर 2024, गाजियाबाद | RNI No-UPHIN / 2013 / 50466 | पेज: 8 मूल्य : 2 रुपया

राहुल के हेलिकॉप्टर को झारखंड के गोड्डा में रोका

डेढ़ घंटे के बाद मिली उड़ान भरने की अनुमति

बोकारो/गोड्डा। झारखंड के गोड्डा में चुनावी सभा के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी का हेलिकॉप्टर डेढ़ घंटे तक रुका रहा।बताया जा रहा है कि एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) से गोड्डा के बेलबड्डा से हेलिकॉप्टर को उड़ान भरने की अनुमति नहीं मिली थी। पूरी घटना के दौरान राहुल गांधी हेलिकॉप्टर में ही बैठे रहे और मोबाइल देखते रहे। कांग्रेस ने इसकी शिकायत चुनाव आयोग से की है। महगामा क्षेत्र से विधायक और कांग्रेस कैंडिडेट दीपिका पांडे सिंह ने कहा कि हेलिकॉप्टर को सिर्फ इसलिए रोका गया कि प्रधानमंत्री देवघर में हैं। राहुल गांधी को उस क्षेत्र से गुजरने की अनुमति नहीं दी गई। प्रोटोकॉल है, जिसे हम समझते हैं लेकिन कांग्रेस ने 70 वर्षों तक देश पर शासन किया और किसी भी विपक्षी नेता के साथ ऐसी घटना कभी नहीं हुई। यह स्वीकार्य नहीं है। सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिहार के जमुई से सभा कर देवघर एयरपोर्ट आने वाले हैं, इस कारण राहुल के हेलिकॉप्टर को उड़ान भरने की अनुमति नहीं मिली थी। कांग्रेस नेता को गोड्डा से बोकारो के बेरमो जाना है, जहां उनकी चुनावी सभा है। हेलिपैड के आसपास राहुल गांधी की सुरक्षा में तैनात कर्मचारी भी खड़े हुए हैं। इससे पहले महगामा विधानसभा क्षेत्र में चुनावी सभा के दौरान राहुल गांधी ने कहा- मुंबई के धारावी की जमीन एक लाख करोड़ रुपए की है। इसको महाराष्ट्र सरकार और नरेंद्र मोदी, गौतम अडाणी को देना चाह रहे हैं। वहां हमारी सरकार थी, ऐसा नहीं हो पा रहा था तो उन्होंने सरकार गिरा दी। राहुल ने कहा कि नरेंद्र मोदी कहते हैं कि राहुल गांधी लाल किताब दिखा रहा है। मैं कहता हूं कि इसका रंग जरूरी नहीं है। इसमें जो लिखा है, वह जरूरी है। इसे आपने जिंदगी भर नहीं पढ़ा है। आप इसे एक बार खोल लेते तो देश में हिंसा फैलाने का काम नहीं करते। आप ऐसा इसलिए करते हो क्योंकि आपने यह नहीं पढ़ा। राहुल बोले- देश में बंद कमरे में नफरत फैलाने का काम बीजेपी-आरएसएस के लोग करते हैं। संविधान को नरेंद्र मोदी, क्या दुनिया की कोई ताकत नहीं मिटा सकती है। अगर मिटाना है तो सामने आइए, फिर पता चलेगा कि जनता क्या करती है। उन्होंने कहा- हम नरेंद्र मोदी से नहीं डरते हैं। हम 56 इंच की छाती और मन की बात से भी नहीं डरते। इंडिया गठबंधन संविधान की रक्षा कर रहा है। संविधान में अंबेडकर, गांधी और बिरसा मुंडा की सोच है। यह हिंदुस्तान की जनता की आत्मा है। राहुल गांधी बोले- नरेंद्र मोदी अरबपतियों की कठपुतली हैं। वह वही करते हैं जो अरबपति कहते हैं। मोदी जी पहले मन की बात सुनाते हैं। फिर अंबानी की शादी में चले जाएंगे। खाना खाएंगे, नाच गाना सुनेंगे। कांग्रेस नेता ने कहा- आप जितनी जीएसटी देते हैं उतना ही अडाणी भी देते हैं। पांच हजार कमाने वाला 18 फीसदी जीएसटी दे रहा, अडाणी भी उतना ही देगा।

राहुल गांधी को अमित शाह ने दी चुनौती

प्रधानमंत्री मोदी वक्फ अधिनियम में करेंगे संशोधनः अमित शाह

नई दिल्ली।
मुंबई। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को जोर देकर कहा कि उद्धव ठाकरे और शरद पवार जैसे प्रमुख विपक्षी नेताओं के विरोध के बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वक्फ अधिनियम में संशोधन के लिए दृढ़ हैं। साथ ही घोषणा की कि मोदी सरकार 31 मार्च, 2026 तक छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद का खात्मा कर देगी। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी को चुनौती दी कि वह हिंदुत्व विचारक वीडी सावरकर और शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करके दिखाएं। महाराष्ट्र के चंद्रपुर, यवतमाल और हिंगोली में तीन चुनावी रैलियों को संबोधित करते हुए शाह ने कहा, 'कर्नाटक में वक्फ बोर्ड ने गांवों, मंदिरों, किसानों की जमीनों और लोगों के घरों को वक्फ संपत्तियां घोषित कर दिया है। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी वक्फ बोर्ड कानून में बदलाव करना चाहते हैं, लेकिन उद्धव ठाकरे, शरद पवार और सुप्रिया सुले इसका विरोध कर रहे हैं। उद्धव जी ध्यान से सुन लीजिए, आप लोग जितना चाहे विरोध कर लीजिए, लेकिन मोदी जी वक्फ अधिनियम में संशोधन करके रहेंगे।'उन्होंने कहा कि इस विधानसभा चुनाव में दो शिविर हैं। एक पांडवों का जिसका प्रतिनिधित्व भाजपा के नेतृत्व वाला महायुति कर रहा है। दूसरा कौरवों का जिसका प्रतिनिधित्व विपक्ष का महाविकास आघाड़ी कर रहा है। शाह ने कहा, 'उद्धव दावा करते हैं कि उनकी शिवसेना असली है। क्या असली शिवसेना औरंगाबाद का नाम संभाजीनगर करने का विरोध कर सकती है? क्या असली शिवसेना अहमदनगर का नाम अहिल्यानगर करने के विरुद्ध जा सकती है?

दैनिक संस्कार उजाला
न्यूज एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें

संस्कार उजाला समाचार पत्र में रिपोर्टर, ब्यूरोचीफ, मार्केटिंग करने वालों लोगों की जरुरत है। तुरंत संपर्क करे।

महेश शर्मा
प्रबंध संपादक
मो.नं:–9911733939

[सुविचार]

रामायण में दो व्यक्ति थे, एक विभीषण और एक कैकेई, विभीषण रावण के राज में रहता था, फिर भी नहीं बिगड़ा, कैकेई राम के राज में रहती थी, फिर भी नहीं सुधरी, तात्पर्य सुधरना और बिगड़ना मनुष्य की सोच और स्वभाव पर निर्भर करता है।

संक्षिप्त समाचार

जमुई में ढट के सामने नीतीश बोले- अब कहीं नहीं जाऊंगा

जमुइ पीएम नरेंद्र मोदी तीन दिन में दूसरी बार बिहार आए। जमुई के बल्लोपुर में शुक्रवार को वो भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए। पीएम ने बिरसा मुंडा के नाम पर 150 रुपए का सिक्का और 5 रुपए का स्मारक डाक टिकट जारी किया है। पीएम ने ये स्मारक सिक्का और डाक टिकट बिरसा मुंडा के वंशज को भेंट भी किया। इस दौरान पीएम ने 6,640 करोड़ रुपए से अधिक की योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इसके अलावा दो जनजातीय फ्रीडम फाइटर म्यूजियम और दो जनजातीय रिसर्च सेंटर का उद्घाटन भी किया।नीतीश कुमार के बाद पीएम मोदी मंच पर पहुंचे। करीब 40 मिनट के भाषण में प्रधानमंत्री ने आदिवासियों पर फोकस किया। परिवारवाद और आदिवासियों की अनदेखी को लेकर पिछली सरकारों को घेरा। नीतीश कुमार की तारीफ भी की।

उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने संजीव शर्मा के जरिए गाजियाबाद को नंबर एक बनाने का किया वादा। ,नेता नहीं सेवक कार्यकर्ता के रूप में संजीव शर्मा ही कराएगा क्षेत्र का विकासझ्रपाठक

गाजियाबाद (आशा चौधरी)
शहर विधानसभा उपचुनाव में अकबर बहरामपुर के माया फार्म में जनसभा का आयोजन भाजपा प्रत्याशी संजीव शर्मा को जनसमर्थन जुटाने के लिए किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ ब्राह्मण एवं पुजारी की टोली के द्वारा मंत्र उपचार के साथ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने अपने संबोधन में कहा पूरे उत्तर प्रदेश एवं भारत की निगाहें उत्तर प्रदेश के प्रमुख जिला गाजियाबाद के शहर विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव पर टिकी हुई है उन्होंनेकहा हमें तो बचपन में ही मैन सिखाया है कि सब्जी तरकारी भी खरीदो तो पहले उसकी गुणवत्ता की जांच कर लो तो जरा सोचो अगर अपने शहर की विकास की चिंता करने वाला अपने शहर की शिक्षा की चिंता करने वाला अपने शहर की रोजगार की चिंता करने वाला अपने शहर के आमजन की चिंता करने वाला भला हम बिना जांच पर रखकर कैसे चुन डालेंगे इसलिए मैं आप सभी के बीच यह निवेदन करने आया हूं भाजपा के देश में और प्रदेश में सरकार ने सबका साथ सबका विकास सबका प्रयास और सभी में विश्वास के आधार पर अपने कार्य को अंजाम दिया है जाति बिरादरी से ऊपर उठकर विकास और सुशासन के मापदंड पर काम किया है। उन्होंने कहा यूपी का इंफ्रास्ट्रक्चर और कानून व्यवस्था पूरे देश में नंबर एक बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। राज्य सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य किए हैं, जिनका सकारात्मक प्रभाव हर स्तर पर देखा जा रहा है। विपक्ष पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि उनकी वास्तविकता अब जनता के सामने आ चुकी है। प्रदेश की जनता विकास को प्राथमिकता दे रही है, जबकि विपक्ष के पास आलोचना के अलावा कोई ठोस योजना नहीं है। उन्होंने सपा शासन और सपा की मानसिकता के बारे में बताते हुए बोला सपा के शासन में गाजियाबाद से लेकर ललितपुर तक के जिलों में मिनी मुख्यमंत्री बैठा दिए गए थे जो ठेकेदारी अपहरण और गुंडाराज को पनपाने का काम करते थे। और कांग्रेस ने 60 साल देश को लूटने का काम किया उनके शासन काल में भ्रष्टाचार चरम पर था। पीडीए गठबंधन के बारे में उन्होंने बताया इनका गठबंधन परिवार डेवलपमेंट अथॉरिटी है इनके दलों में परिवारवाद है उनके दल का मुखिया उनके परिवार के आदमी को ही बनाया जाएगा जबकि भाजपा में आज भी चुनाव की व्यवस्था के साथ यह बिल्कुल स्पष्ट है कि बूथ का अध्यक्ष भी पार्टी का अगला जिला अध्यक्ष प्रदेश अध्यक्ष अथवा राष्ट्रीय अध्यक्ष हो सकता है। उन्होंने बताया युवा शहजादे के बहकावे में आकर अभी हाल ही के लोकसभा चुनाव में जनता ने लाखों खाते में आने की बात का प्रलोभन कर गुमराह होने का काम किया। परिणाम आने के बाद इन्होंने माता बहनों और देशवासियों को अंगूठा दिखाने का काम किया। संविधान के साथ अपने शासनकाल में सबसे ज्यादा बदलाव कर छेड़छाड़ करने वालो संविधान के बदले जाने का खतरा बताकर लोगों की भावनाओं से खेलने का काम किया लेकिन फिर भी जानता के मजबूत निर्णय के आगे यह 100 का आंकड़ा भी पर नहीं कर पाए। सपा बसपा कांग्रेस लोगों को बका कर जाति पाति और धर्म में उलझा कर येन केन प्रकरेण सत्ता पर काबिज होना चाहती है मगर जनता जाग चुकी है और उनके खिलौने विचारों को पहचान चुकी है। जनता भाजपा के प्रत्याशी को जीताकर इन दलों को आईना दिखाने का काम करेगी। सुबह के उपमुख्यमंत्री ने अपने भूषण की शुरूआत पुरवइया भोजपुरी लेजर में करते हुए कहा का होईल बा, ठीक बा। उप मुख्यमंत्री पाठक ने विश्वास जताया कि 20 नम्बर को उपचुनाव में भी मतदाता जनता सरकार की जन-हितैषी नीतियों और विकास कार्यों का समर्थन करते हुए भाजपा के पक्ष में अपना मतदान करेगी और एक कार्यकर्ता के रूप में भाजपा प्रत्याशी बने संजीव शर्मा को भारी मतों में विजई करते हुए लखनऊ विधानसभा सदन में पहुंचाएगी। उन्होंने भाजपा प्रत्याशी संजीव शर्मा का हाथ पकड़ कर अपने हाथ के साथ हाथ उठाकर संजीव शर्मा के कार्य कुशलता पर विश्वास करते हुए ऐलान किया कि आप अगर संजीव शर्मा को जिताकर लखनऊ भेजते हैं तो मैं लखनऊ में रहकर आपके संजीव शर्मा के साथ आपके शहर के बाबत बात करते हुए उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद को नंबर एक जिला बनाने में भरसक प्रयास करूंगा। प्रदेश के महामंत्री और क्षेत्रीय प्रभारी सुभाष यदुवंशी ने अपने संबोधन में कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दोनों के दिलों में जनता के प्रति एक सच्चा लगाव है उसी के फल स्वरुप आज देश और प्रदेश की सरकार केवल और केवल विकास ,सुशासन,सुरक्षा के एजेंडे पर निरंतर कार्य कर रही है। भाजपा ने एक प्रत्याशी के रूप में आज आपके बीच में एक कार्यकर्ता को चुनाव मैदान में उतारा है तो सभी का यह है और भी अधिक दायित्व बन जाता है कि एक कार्यकर्ता की जीत नया रिकॉर्ड हासिल करें। योगी सरकार के मंत्री एक और बृजेश सिंह ने कहा कि मैं गाजियाबाद के कार्यकताओं को नमन करता हूं की जिन्होंने अपने प्रत्याशी संजीव शर्मा की जीत का पूरा खाता तैयार कर रखा है। बूथ से लेकर उच्च पदाधिकारी तक सभी चुनाव में पूरी सकता के साथ जीत को ऐतिहासिक बनाने में लगे हुए हैं। क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिसोदिया ने कहा भाजपा कैडर बेस पार्टी है हमारा कार्यकर्ता दिशा जीता चुनाव जीत के आधार पर चुनाव को जितने की कुबत रखा है पार्टी ने आपके बीच के कार्यकर्ता को ही टिकट देकर आपके बीच भेजा है। अब आपको जनता के बीच जाना है और इस जीत को ऐतिहासिक जीत बनाना है। पूर्व महापौर आशु वर्मा ने कहा की शीर्ष नेतृत्व ने हमें संगठन का कार्यकर्ता, युवा, ऊजार्वान प्रत्याशी के रूप में संजीव शर्मा को चुनकर भाजपा की जीत को सुनिश्चित करने का काम किया है। संजीव शर्मा ने अपने संबोधन में सभी कार्यकताओं के चरणों में अपना नमन करते हुए कहा कि मैंने अपने संगठन के 17 साल में भाजपा को चुनाव लड़वाते हुए गुजारे हैं और अब अपने चुनाव में भी कई बार यह पता नहीं पड़ता कि कि मैं चुनाव लाडवा रहा हूं अथवा चुनाव लड़ रहा हूं। उन्होंने कहा कि मैं अपने संगठन के कार्यकाल में हाथ कार्यकर्ता के लिए कंधे से गंदा मिलकर खड़ा रहा हूं ठीक इसी प्रकार अपने क्षेत्र वासियों के व्यक्तिगत अथवा सार्वजनिक कार्यों के लिए सहजता और सरलता से जनता के बीच मौजूद रहूंगा। कार्यक्रम का समापन जिला अध्यक्ष सतपाल प्रधान ने किया और मंच संचालन युवा नेता संदीप त्यागी ने किया । मंच पर प्रमुख रूप से उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक, प्रदेश सरकार के मंत्री कुमार बृजेश सिंह, प्रदेश महामंत्री एवं क्षेत्रीय प्रभारी सुभाष यदुवंशी, क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिसोदिया , चुनाव संयोजक पूर्व महापौर आशु वर्मा, भाजपा प्रत्याशी संजीव शर्मा क्षेत्रीय महामंत्री हरिओम शर्मा जिला अध्यक्ष सतपाल प्रधान , पूर्व एमएलसी सुरेश कश्यप,महानगर महामंत्री पप्पू पहलवान, चुनाव सहसंयोजक सुनील यादव, मीडिया प्रभारी प्रदीप चौधरी,करण शर्मा, प्रतीक माथुर,धर्मेंद्र चौधरी, ओम राजपूत, अशोक यादव, जोगिंद्र सिंह, पिंटू भाई, धर्मेंद्र चौधरी, मीनल रानी पार्षद आदि पदाधिकारीगण मौजूद रहे।

बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर पीएम मोदी ने युवाओं से की खास अपील

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर सभी को बधाई दी। राष्ट्रपति मुर्मू ने जयंती के वर्ष भर चलने वाले समारोह की शुरूआत की घोषणा भी की। राष्ट्रपति ने कहा कि सभी साथी नागरिकों की ओर से मैं भगवान बिरसा मुंडा की पवित्र स्मृति को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। राष्ट्रपति ने इसी के साथ दैनिक जागरण में बिरसा मुंडा पर एक आलेख भी लिखा, जिसका जिक्र पीएम मोदी ने भी किया।
पीएम मोदी ने कहा भगवान बिरसा मुंडा जी के आदर्श न केवल जनजातीय, बल्कि देश के सभी समुदायों के युवाओं के लिए गर्व और प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी 150वीं जन्म-जयंती पर माननीय राष्ट्रपति जी का ये आलेख हम सभी को जरूर पढ़ना चाहिएङ्खपोस्ट में मुर्मु ने कहा, मैं देख रही हूं कि आदिवासी गौरव और संविधान के आदर्शों के लिए पूरे देश में एक नई चेतना फैल रही है। यह चेतना कार्य में परिवर्तित हो रही है।
यह भावना आदिवासी समाज सहित पूरे देश के उज्ज्वल भविष्य की नींव बनेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उलिहातू यात्रा को याद करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, पिछले साल 'जनजातीय गौरव दिवस' के अवसर पर मोदी जी ने भी उलिहातू का दौरा किया था और भगवान बिरसा मुंडा का आशीर्वाद लिया था।
वह किसी भी प्रधानमंत्री की उलिहातू की पहली यात्रा थी। इससे आदिवासी समाज के लोग बहुत खुश हुए थे। उसी दिन झारखंड से 'पीएम जनजातीय आदिवासी न्याय महा-अभियान' यानी पीएम-जनमन की शुरूआत की गई थी। संविधान की आठवीं अनुसूची में 'संथाली' को शामिल करने पर राष्ट्रपति ने कहा कि मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि आदिवासी भाषा 'संथाली' को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के प्रयासों में मैंने भी योगदान दिया है। यह आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के कार्यकाल में संभव हुआ।

पाकिस्तान में हिंदू श्रद्धालु की गोली मारकर हत्या

लाहौर। पाकिस्तान के लाहौर में एक हिंदू श्रद्धालु की गोली मारकर हत्या करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। जानकारी के मुताबिक हिंदू श्रद्धालु श्री गुरु नानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व पर शामिल होने श्री ननकाना साहिब जा रहा था। रास्ते में लुटेरों ने गोली मारकर उसे मौत के घाट उतार दिया। पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना शहर के रहने वाले राजेश कुमार अपने दोस्त और एक रिश्तेदार के साथ कार से लाहौर से ननकाना साहिब जा रहे थे। रास्ते में लाहौर से करीब 60 किलोमीटर दूर मनानवाला-ननकाना साहिब रोड पर तीन लुटेरों ने उन्हें रोका। पुलिस के मुताबिक लुटेरों ने तीनों से साढ़े चार लाख पाकिस्तानी रुपये लूटे। कार चालक से भी 10 हजार पाकिस्तानी रुपये छीने। मगर इस दौरान राजेश कुमार ने लुटेरों को विरोध कर दिया। बदले में लुटेरों ने उन पर फायरिंग शुरू कर दी।गोली लगने के बाद राजेश कुमार को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। जहां उन्होंने गुरुवार को दम तोड़ दिया। रिश्तेदार की शिकायत पर अज्ञात लोगों के खिलाफ पाकिस्तान दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। उल्लेखनीय है कि शुक्रवार को श्री गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व पर उनकी जन्मस्थली गुरुद्वारा श्री ननकाना साहिब में मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भारत से भी 2,500 से अधिक सिख श्रद्धालु प्रकाश पर्व में शामिल होने पाकिस्तान पहुंचे हैं।

जनजाति समाज के लिए चलाई जा रही आर्थिक विकास की योजनाएं

प्रहलाद सबनानी

जनजाति समाज के लिए केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं को दो प्रकार से चलाया जा रहा है। कई योजनाओं का सीधा लाभ जनजाति समाज के सदस्यों को प्रदान किया जाता है। साथ ही, कुछ योजनाओं के अंतर्गत राज्य सरकारों को विशेष केंद्रीय सहायता एवं अनुदान प्रदान किया जाता है और इन योजनाओं को राज्य सरकारों द्वारा क्रियान्वित किया जाता है। जैसे, जनजातीय उप-योजना के माध्यम से राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को जनजातीय विकास हेतु किए गए प्रयासों को पूरा करने के लिए विशेष केंद्रीय सहायता प्रदान की जाती है।

जनजाति समाज बहुत ही कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए देश में दूर दराज इलाकों के सघन जंगलो के बीच वनों में रहता है। जनजाति समाज के सदस्य बहुत ही कठिन जीवन व्यतीत करते रहे हैं एवं देश के वनों की सुरक्षा में इस समाज का योगदान अतुलनीय रहा है। चूंकि यह समाज भारत के सुदूर इलाकों में रहता है अतः देश के आर्थिक विकास का लाभ इस समाज के सदस्यों को कम ही मिलता रहा है। इसी संदर्भ में केंद्र सरकार एवं कई राज्य सरकारों ने विशेष रूप से जनजाति समाज के लिए कई योजनाएं इस उद्देश्य से प्रारम्भ की हैं कि इस समाज के सदस्यों को राष्ट्र विकास की मुख्य धारा में शामिल किया जा सके एवं इस समाज की कठिन जीवनशैली को कुछ हद तक आसान बनाया जा सके। भारत में सम्पन्न हुई वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 10.43 करोड़ है, जो भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है। जनजाति समाज के सदस्यों को भारतीय राजनीति की मुख्यधारा में शामिल किए जाने के प्रयास भी किए जाते रहे हैं एवं इस समाज के कई प्रतिभाशाली सदस्य तो कई बार केंद्र सरकार के मंत्री, राज्यपाल एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री के पदों तक भी पहुंचे हैं। आज भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू भी आदिवासी समाज से ही आती हैं।

केंद्र सरकार द्वारा जनजाति समाज को केंद्र में रखकर उनके लाभार्थ चलाई जा रही विभिन योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से एक विशेष पोर्टल का निर्माण किया है। जिसकी लिंक है - भारत सरकार का राष्ट्रीय पोर्टल https://www.इंडिया.सरकार.भारत/ - इस लिंक को क्लिक करने के बाद 'खोजें' के बॉक्स में जनजाति समाज को दी जाने वाली सुविधाएं टाइप करने से, भारत सरकार द्वारा प्रदान की जा रही विभिन्न सुविधाओं की सूची निकल आएगी एवं इन योजनाओं का लाभ उठाने के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रपत्रों की सूची भी डाउनलोड की जा सकती है।

जनजाति समाज के लिए केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं को दो प्रकार से चलाया जा रहा है। कई योजनाओं का सीधा लाभ जनजाति समाज के सदस्यों को प्रदान किया जाता है। साथ ही, कुछ योजनाओं के अंतर्गत राज्य सरकारों को विशेष केंद्रीय सहायता एवं अनुदान प्रदान किया जाता है और इन योजनाओं को राज्य सरकारों द्वारा क्रियान्वित किया जाता है। जैसे, जनजातीय उप-योजना के माध्यम से राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को जनजातीय विकास हेतु किए गए प्रयासों को पूरा करने के लिए विशेष केंद्रीय सहायता प्रदान की जाती है। इस सहायता का मूल प्रयोजन पारिवारिक आय सृजन की निम्न योजनाओं जैसे कृषि, बागवानी, लघु सिंचाई, मृदा संरक्षण, पशुपालन, वन, शिक्षा, सहकारिता, मत्स्य पालन, गांव, लघु उद्योगों तथा न्यूनतम आवश्यकता संबंधी कार्यक्रमों से है। इसी प्रकार, जनजातीय विकास हेतु परियोजनाओं की लागत को पूरा करने तथा अनुसूचित क्षेत्र के प्रशासन स्तर को राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के बराबर लाने के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को भी अनुदान दिया जाता है। जनजातीय समाज के विद्यार्थियों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने के लिए आवासीय विद्यालय स्थापित करने हेतु भी उक्त निधियों के कुछ हिस्से का प्रयोग किया जाता है।

राज्य सरकारों को वित्त उपलब्ध कराने सम्बंधी उक्त दो योजनाओं का केवल उदाहरण के लिए वर्णन किया गया है, अन्यथा इसी प्रकार की कई योजनाएं केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही हैं। इसी कड़ी में जनजाति समाज के सदस्यों को सीधे ही लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से भी केंद्र सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। जिनमे मुख्य रूप से शामिल हैं - (1) आदिवासी उत्पादों और उत्पादन विपणन विकास की योजना; (2) एमएसपी योजना की मूल्य श्रृंखला के विकास के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के माध्यम से लघु वनोपज के विपणन हेतु योजना; (3) आदिवासी उत्पादों या निर्माण योजना के विकास और विपणन के लिए संस्थागत सहयोग की योजना; (4) आदिवासी क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने की योजना; (5) जनजातीय क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की योजना; (6) जनजातीय अनुसंधान संस्थानों के लिए अनुदान योजना; (7) उत्कृष्ट केन्द्रों के समर्थन के लिए वित्तीय सहायता योजना जिसका लाभ जनजातीय विकास और अनुसंधान क्षेत्र में काम कर रहे विश्वविद्यालयों और संस्थानों को दिया जाता है। इस योजना का उद्देश्य विभिन्न गैर सरकारी संगठनों की संस्थागत संसाधन क्षमताओं को बढ़ाना और मजबूत बनाना है ताकि इन अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालय के विभागों द्वारा आदिवासी समुदायों पर गुणात्मक, क्रिया उन्मुख और नीति अनुसंधान का संचालन किया जा सके; (8) राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास निगम (एनएसटीएफडीसी) और राज्य अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास निगम (एसटीएफडीसी) को न्यायसम्य (इक्विटी) सहायता प्रदान करने की योजना। यह योजना केन्द्र सरकार द्वारा वित्त पोषित है और आदिवासी मामले मंत्रालय द्वारा शुरू की गई है; (9) आदिवासी आवासीय विद्यालयों की स्थापना सम्बंधी योजना; (10) अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए केन्द्रीय क्षेत्र की छात्रवृत्ति योजना; (11) अनुसूचित जनजाति के छात्रों की योग्यता उन्नयन संबंधी योजना; (12) अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए राष्ट्रीय प्रवासी छात्रवृत्ति योजना। उक्त समस्त योजनाओं की विस्तृत जानकारी उक्त वर्णित पोर्टल पर उपलब्ध है।

इसी प्रकार केंद्र सरकार के साथ साथ कई राज्य सरकारें भी जनजाति समाज के लाभार्थ स्वतंत्र रूप से कुछ योजनाओं का संचालन करती है। मध्यप्रदेश, भारत के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में गिना जाता है एवं मध्यप्रदेश में विविध, समृद्ध एवं गौरवशाली जनजातीय विरासत है जिसका कि मध्यप्रदेश में न केवल संरक्षण एवं संवर्धन किया जा रहा है, अपितु जनजातीय क्षेत्रों के समग्र विकास तथा जनजातीय वर्ग के कल्याण के लिए निरंतर कई प्रकार के कार्य भी किए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश में भारत की कुल जनजातीय जनसंख्या की 14.64% जनसंख्या निवास करती है। भारत में 10 करोड़ 45 लाख जनजाति जनसंख्या है, वहीं मध्यप्रदेश में 01 करोड़ 53 लाख जनजाति जनसंख्या है। भारत की कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत 8.63 है और मध्यप्रदेश में कुल जनसंख्या में जनजाति जनसंख्या का प्रतिशत 21.09 है। मध्यप्रदेश में जनजाति उपयोजना क्षेत्रफल, कुल क्षेत्रफल का 30.19% है। प्रदेश में 26 वृहद, 5 मध्यम एवं 6 लघु जनजाति विकास परियोजनाएं संचालित हैं तथा 30 माडा पॉकेट हैं। मध्यप्रदेश में कुल 52 जिलों में 21 आदिवासी जिले हैं, जिनमें 6 पूर्ण रूप से जनजाति बहुल जिले तथा 15 आंशिक जनजाति बहुल जिले हैं। मध्यप्रदेश में 89 जनजाति विकास खंड हैं। मध्यप्रदेश के 15 जिलों में विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा, भारिया एवं सहरिया के 11 विशेष पिछड़ी जाति समूह अभिकरण संचालित हैं।

मध्यप्रदेश सरकार जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक और शैक्षणिक विकास के साथ ही उनके स्वास्थ्य एवं जनजाति बहुल क्षेत्रों के विकास के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित कर रही हैं। (1) मध्यप्रदेश के विशेष पिछड़ी जनजाति बहुल 15 जिलों में आहार अनुदान योजना संचालित की जा रही है, जिसके अंतर्गत विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा, भारिया और सहरिया परिवारों की महिला मुखिया के बैंक खाते में प्रतिमाह रू. 1000 की राशि जमा की जाती रही है। (2) आकांक्षा योजना के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति वर्ग के 11वीं एवं 12वीं कक्षा के प्रतिभावान विद्यार्थियों को राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे जईई, नीट, क्लेट की तैयारी के लिए निःशुल्क कोचिंग एवं छात्रावास की सुविधा प्रदान की जाती है। (3) प्रतिभा योजना के अंतर्गत जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों को उच्च शासकीय शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। (4) आईआईटी, एम्स, क्लेट तथा एनडीए की परीक्षा उत्तीर्ण कर उच्च शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश पर रू. 50 हजार रुपए की राशि तथा अन्य परीक्षाओं जेईई, नीट, एनआईआईटी, एफडीडीआई, एनआईएफटी, आईएचएम के माध्यम से प्रवेश लेने पर रू. 25 हजार रुपए की राशि प्रदान की जाती रही है। (5) महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले अनुसूचित जनजाति के जो विद्यार्थी गृह नगर से बाहर अन्य शहरों में अध्ययन कर रहे हैं, उन्हें वहां आवास के लिए संभाग स्तर पर 2000 रुपए, जिला स्तर पर 1250 रुपए तथा विकास खंड एवं तहसील स्तर पर 1000 रुपए प्रतिमाह की वित्तीय सहायता, आवास सहायता योजना के

अंतर्गत प्रदान की जाती रही है। (6) इसी प्रकार की सहायता अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को विदेश स्थित उच्च शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययन के लिए भी प्रदान की जाती है।(7) अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के लिए प्रदेश के 89 जनजाति विकास खंडों में प्राथमिक शालाओं से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर की शालाएं संचालित की जा रही हैं जिनमें विद्यार्थियों को प्री-मेट्रिक तथा पोस्ट मेट्रिक छात्रवृत्ति दी जा रही है। (8) मध्यप्रदेश के अनुसूचित जनजाति के ऐसे विद्यार्थियों, जो सिविल सेवा परीक्षा में निजी संस्थाओं द्वारा कोचिंग प्राप्त कर रहे हैं, को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। साथ ही अनसूचित जनजाति के प्रदेश के ऐसे विद्यार्थी, जो सिविल सेवा परीक्षा की प्राथमिक परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, उन्हें 40 हजार रुपए, जो मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं उन्हें 60 हजार रुपए तथा साक्षात्कार सफल होने पर 50 हजार रुपए की राशि दी जाती रही है। (9) मध्यप्रदेश में जनजातीय लोक कलाकृतियों एवं उत्पादों को लोकप्रिय करने तथा उनसे जनजाति वर्ग को लाभ दिलाए जाने के उद्देश्य से उनकी जी आई टैगिंग कराई जा रही है। प्रथम चरण में 10 जनजाति लोक कलाकृतियों एवं उत्पादों की जीआई ट्रैगिंग कराए जाने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। इस प्रकार, केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा जनजाति समाज के लाभार्थ अन्य कई प्रकार की विशेष योजनाएं सफलता पूर्वक चलाई जा रही हैं ताकि जनजाति समाज की कठिन जीवन शैली को कुछ आसान बनाया जा सके एवं जनजाति समाज को देश की मुख्य धारा में शामिल किया जा सके।

संपादकीय

बुलडोजर पर लक्ष्मण रेखा

सुप्रीम कोर्ट ने बुलड़ोजर से की जा रही कार्रवाई पर दूरदर्शी फैसला सुनाते हुए इसे असंवैधानिक बताया है, जिसका स्वागत किया जाना चाहिए। कुछ महीनों से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, झारखंड़ और दिल्ली में बुलड़ोजर न्याय के तहत आपराधिक मामलों में आरोपियों के मकानों और अन्य संपत्तियों को ध्वस्त किया जा रहा है। शीर्ष अदालत ने इस कार्रवाई पर लक्ष्मण रेखा खींच दी है। जस्टिस बीआर गवई और केवी विश्वनाथन की बेंच ने अपने फैसले में कहा है कि किसी आरोपी का घर सिर्फ इसलिए नहीं गिराया जा सकता कि उस पर किसी अपराध का आरोप है। विद्वान जजों ने फ्रांस में प्रबुद्धता युग के राजनीतिक विचारक और न्यायविद् चार्ल्स ड़ी मॉन्टेस्क्यू के शक्तियों के पृथ्क्करण सिद्धांत के तहत कहा कि आरोपों पर फैसला करना न्यायपालिका का काम है, कार्यपालिका का नहीं। जाहिर है कि भारतीय संविधान में सरकार के तीनों अंगों के कार्यों के विभाजन का प्रावधान है। न्यायाधीश और न्यायपालिका का काम पुलिस और प्रशासन के अधिकारी कैसे कर सकते हैं। उदार लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था नागरिकों के राजनीतिक अधिकारों के साथ-साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करने के उद्देश्य से राज्य की शक्तियों को सीमित करती है। यह फैसला राज्य के कार्यों को सीमित करने और कानून का शासन स्थापित करने वाला है। अदालत ने कहा है कि विधि का शासन लोकतांत्रिक शासन का मूल आधार है जो सुनिश्चित करता है कि कोई व्यक्ति जघण्य अपराध का दोषी पाया भी जाता है, तो भी राज्य कानून की उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना उसके घर पर बुलड़ोजर नहीं चला सकता। अदालत ने बुलड़ोजर कार्रवाई के संबंध में सख्त गाइड़लाइंस जारी की हैं। कोई अधिकारी अदालत के निदेशों का पालन नहीं करता है और किसी के घर पर बुलड़ोजर चलाता है तो उस पर अवमानना और अभियोजन की कार्रवाई की जाएगी और ध्वस्त संपत्ति की लागत उसकी जेब से वसूली जाएगी। अतिक्रमण के आरोपी को नोटिस भेजने, जवाब देने का मौका आदि प्रावधान बनाए गए हैं। लेकिन अदालत ने सार्वजनिक स्थलों पर अवैध निर्माण को इन निदेशों के दायरे से मुक्त रखा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि विधि के शासन को मजबूत करने की दिशा में यह फैसला मील का पत्थर साबित होगा।

चिंतन-मनन

चैतन्यता जरूरी

स्मृति और विस्मृति दोनों संतुलन अपेक्षित हैं। कुछेक व्यक्तियों में विस्मृति की बड़ी मात्रा होती है। वह हमारी चेतना की स्थिति को बहुत स्पष्ट करता है। एक व्यंग्य है। दो बहनें मिलीं। एक स्त्री ने कहा, मेरा पति बहुत भुलक्कड़ है। एक दिन बाजार में गया सब्जी लाने के लिए। बाजार में घूम-घामकर घर लौटा। आते ही पूछा, अरे! मैं बाजार गया था, पर याद नहीं रहा कि मैं बाजार क्यों गया हूं? कितना भुलक्कड़!

दूसरी स्त्री बोली, अरे! बस इतना ही भुलक्कड़! मेरा पति इससे बहुत आगे है। उसके भुलक्कड़पन की बात सुनोगी तो आश्चर्यचकित रह जाओगी। एक दिन की बात है। वह मित्रों के साथ बाजार में घूम रहा था। अकस्मात ऐसा योग मिल गया कि मैं उधर से निकली। मुझे देखते ही उसने कहा, बहनजी! नमस्ते। आपको कहीं देखा है। आपकी सूरत परिचित-सी लगती है। कितनी विस्मृति!

विस्मृति एक व्यापक बीमारी है। कुछेक लोग इसके शिकार हो जाते हैं। उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जीवन में स्मृति और विस्मृति का संतुलन होना चाहिए। हम याद भी रख सकें और भूल भी सकें। याद रखना ही पर्याप्त नहीं होता, भूलना भी आवश्यक होता है। जीवन की अनेक घटनाएं ऐसी होती हैं जिनको भूल जाना ही श्रेयस्कर होता है। कुछ प्रिय घटनाएं भी भूलने योग्य होती हैं और अप्रिय घटनाएं भी भूलने योग्य होती हैं। यदि उनका भार ढोते ही जाएं तो दुख का कहीं अन्त नहीं होगा। हम आवश्यक बातों को याद रखें और अनावश्यक बातों को भूलते चले जाएं। अपने कर्तव्य की विस्मृति शिक्षा की बहुत बड़ी बाधा है।

एक बार फिर प्रमाणित- न्यायपालिका ही प्रजातंत्र की सही संरक्षक....!

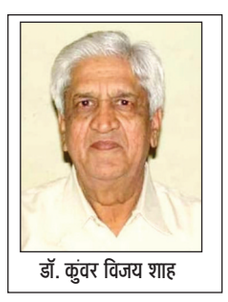

डॉ. कुंवर विजय शाह

सर्वोच्च न्यायालय के एक फैसले ने आज पुनः यह सिद्ध कर दिया है कि प्रजातंत्र के चार अंगों- विधायिका, कार्यपालिका, न्याय पालिका और खबर पालिका में न्याय पालिका ही प्रजातंत्र की सही संरक्षक है, कथित अवैध निमार्णों के नाम पर लोगों के घरों को 'जमींदोज' कर देने की शासकीय मनमानी पूर्ण प्रक्रिया को सर्वोच्च न्यायालय ने एकदम गैर कानूनी व गलत माना है तथा शासन-प्रशासन को सख्त निर्देश दिए है कि बिना ठोस गैरकानूनी सबूतों के ऐसी कार्यवाही कतई नही की जानी चाहिए। इस तरह आज फिर एक बार यह स्पष्ट हो गया है कि प्रजातंत्र की सही संरक्षक न्यायपालिका ही शेष बची है, प्रजातंत्र के शेष अंग विधायिका, कार्यपालिका और खबर पालिका अब अपने कर्तव्यों, मंसूबों, अधिकारों व कार्यों के प्रति ईमानदार कतई नही रहे है, इसीलिए आज आम भारतीय का विश्वास सिर्फ और सिर्फ न्यायपालिका पर ही केन्द्रित हो गया है।

प्रजातंत्र के अंगों में प्रमुख तौर पर विधायिका की भूमिका अहम् मानी जाती रही है, किंतु अब इस अंग में स्वार्थ की राजनीति इतनी अधिक हावी हो गई है कि इसने आम जनप्रतिनिधि को जनसेवा के मार्ग से बिल्कुल अलग कर दिया है, आज तो इस अंग में यह धारणा समाहित हो गई है कि किसी भी तरह के कानूनी या गैर कानूनी हथकण्डों का सहारा लेकर एक बार सांसद या विधायक बन जाओं और फिर अपने आपको अगली सात पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित रखने की क्षमता हासिल कर लो, और अब यही हो रहा है, एक बार येन-केन- प्रकारेण सांसद, विधायक चूने जाने के बाद फिर राजनेता 'जनसेवा' भूलकर 'स्वयंसेवा' में संलग्न हो जाते है और पांच साल में सत्ता की लूट के सहारे अपने भविष्य को सपरिवार 'स्वर्णिम' बना लेते है और उन्हें इस स्थान तक पहुंचाने वालों को पूरी तरह बिसरा देते है, फिर इनकी याद अगले चुनाव अर्थात् पांच साल बाद ही आती है। यह तो हुआ प्रजातंत्र के सबसे अहम् अंग विधायिका का हाल, अब यदि दूसरे अंग कार्यपालिका की बात करें तो मेरी दृष्टि में उसका नाम कार्यपालिका से बदलकर 'जी-हुजूरी पालिका' रख देना चाहिए, क्योंकि इस अंग से जुड़ सरकारी अमला अपने जनसेवा के मूल दायित्वों को त्याग कर सिर्फ और सिर्फ विधायिका के सदस्यों (राजनेताओं) व उच्च अधिकारियों की जी-हुजूरी में ही लगा रहता है, उसे न अपने मूल कर्तव्यों या दायित्वों की परवाह है न स्वयं की प्रतिष्ठा या इज्जत की। उसे सिर्फ अपने आकाओं को पटाकर रखकर अपने स्वार्थ सिद्ध करना है, इन दो अंगों के बाद तीसरा अंग न्यायपालिका है, जो सही अर्थों में अपने कर्तव्यों, दायित्वों व कानूनों का पालन कर रही है, इसीलिए अब यही अंग भरोसे के काबिल रह गया है और यह अंग अभी तक कई बार यह सिद्ध भी कर चुका है कि वह अपने दायित्वों व कर्तव्यों की पूर्ति पूरी निष्ठा व ईमानदारी से कर रहा है।

अब जहां तक प्रजातंत्र के चौथे अघोषित अंग खबर पालिका की बात करें तो वह जमाना कभी का गुजर गया, जब अधिकारपूर्ण लिखे गए शब्दों का कोई वजन होता था और लिखे हुए शब्द पूरी कायनात को बदलकर रख देने का माद्दा रखते थे, अब तो प्रजातंत्र का यह अघोषित अंग भी सिर्फ और सिर्फ स्वार्थ सिद्धी और 'ब्लेकमेल' का माध्यम बनकर रह गया है, अब लोक सिर्फ अपना रसूख और आय का माध्यम बनाए रखने के लिए अपना अखबार निकालते है, इसलिए इस अंग पर से जनविश्वास पूरी तरह खत्म हो चुका है और यह जन नेताओं की 'कुठपुतली' बनकर रह गया है।

इस प्रकार कुल मिलाकर अब भारत में प्रजातंत्र का एकमात्र आधार स्तंभ न्यायपालिका ही रह गया है और इसकी न्यायिक व्यवस्था ने भारतीय प्रजातंत्र पर अपनी छाप छोड़ी है और आज सर्वोच्च न्यायालय ने फिर एक बार सिद्ध करके भी दिखा दिया है।

प्रदूषणः जटिल होता जा रहा समाधान

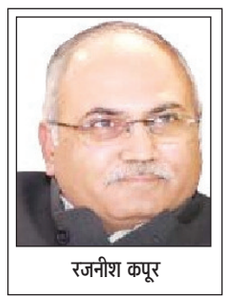

रजनीश कपूर

दीपावली के आसपास दिल्ली में वायु प्रदूषण के आंकड़े बढ़ने लग जाते हैं। यह समस्या कई सालों से सुनाई देती रही है। वैज्ञानिक रिपोर्टों को हमें भूलना नहीं चाहिए। यह भी नहीं कि दिल्ली से निकलने वाले गंदे कचरे, कूड़ा-करकट को ठिकाने लगाने का पुख्ता इंतजाम अभी तक नहीं हो पाया है। सरकार यही सोचने में लगी है कि पूरा का पूरा कूड़ा कहां फिंकवाया जाए या कूड़े का निस्तारण यानी ठोस कचरा प्रबंधन कैसे किया जाए? जाहिर है कि इस गुत्थी को सुलझाए बगैर जलाए जाने लायक कूड़े को चोरी-छुपे जलाने के अलावा और क्या चारा बचता होगा? इस गैर-कानूनी हरकत से उपजे धुएं और जहरीली गैसों की मात्रा कितनी है, इसका कोई हिसाब किसी भी स्तर पर नहीं लगाया जा रहा है। इस सबके चलते आम नागरिकों को सरकार द्वारा लगाए जा रहे प्रतिबंधों से असुविधा हो रही है, और सरकार या उसकी प्रदूषण नियंत्रक एजेंसियां असल कारण तक नहीं पहुंच पा रहीं।

पिछले दिनों पड़ोसी पाकिस्तान से ऐसी खबर आई जिसने काफी चिंता बढ़ाई। पाकिस्तान के लाहौर शहर के एयर क्वालिटी इंडेक्स ने 2000 का आंकड़ा छू लिया। इसके चलते वहां के प्रशासन ने जनभलाई के लिए कई तरह के प्रतबंध लगाने शुरू कर दिए। पाकिस्तान ने बढ़ते प्रदूषण के लिए भारत को जिम्मेदार ठहराया। पराली जलाए जाने की समस्या हर वर्ष प्रदूषण का कारण बनती है। हर वर्ष बड़ी-बड़ी घोषणाएं की जाती हैं, लेकिन इस समस्या के समाधान के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जाते। इस वर्ष भी वायु प्रदूषण के आंकड़े चिंताजनक स्थिति तक पहुंच गए हैं। दिल्ली सरकार द्वारा कभी भी प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। इनमें निर्माण कार्य पर रोक लगाना, भवनों की तोड़-फोड़ पर रोक लगाना, पुराने डीजल-पेट्रोल वाहनों पर रोक लगाना और कूड़ा जलाने पर रोक लगाना आदि उपाय शामिल हैं। निर्माण कार्यों पर रोक लगाना तो समझ में आता है परंतु जिन पुराने वाहनों पर रोक लगती है, उससे सरकार को क्या हासिल होता है, यह समझ नहीं आता।

यदि आपका वाहन दस साल से अधिक पुराना है, और उसमें वैध पीयूसी सर्टिफिकेट है, तो आपका वाहन प्रदूषण के तय मानकों की सीमा में ही हुआ न यानी आपका वाहन अनियंत्रित प्रदूषण नहीं कर रहा। इसके बावजूद अपनी गाड़ियों में नियमित 'पीयूसी' जांच करवाने वालों को प्रतिबंध के चलते वाहन सड़क पर लाने की इजाजत नहीं दी जाती। क्या यह उचित है? कोई उपभोक्ता एक-एक पाई जोड़ कर अपने सपनों का वाहन खरीदता है, तो उसे रोड टैक्स, जीएसटी आदि टैक्स भी देने पड़ते हैं। इन सब टैक्सों का मतलब है कि यह सब राशि सरकार की जेब में जाएगी और घूम कर जनता के विकास के लिए इस्तेमाल की जाएगी परंतु रोड टैक्स के नाम पर ली जाने वाली मोटी रकम क्या वास्तव में जनता पर खर्च होती है? क्या हमें अपनी महंगी गाड़ियों को चलाने के लिए साफ-सुथरी और बेहतरीन सड़कें मिलती हैं? क्या टूटी-फूटी सड़कों की समय से मरम्मत होती है? अधिकतर सवालों के जवाब आपको न में ही मिलेंगे। टूटी-फूटी सड़कों पर वाहन अवरोधों के साथ चलने पर मजबूर होते हैं, नतीजा होता है जगह-जगह ट्रैफिक जाम। जाम में खड़े रह कर आप न सिर्फ समय जाया करते हैं, बल्कि महंगा ईधन भी जाया करते हैं। देर तक जाम लगा रहेगा, वाहन बंपर-टू-बंपर चलेगा तो बढ़ते प्रदूषण की आग में घी का काम करेगा। ऐसे में जिन वाहनों को पुराना समझ कर प्रतिबंधित किया जाता है, उनसे कहीं जयादा मात्रा में नये वाहनों द्वारा प्रदूषण होता है। इसलिए लोक निर्माण विभाग या अन्य एजेंसियों की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि सड़कों को दुरुस्त रखें ताकि प्रदूषण को बढ़ावा न मिले।

सरकार द्वारा वाहनों के प्रदूषण के स्तर को नियंत्रित रखने की दृष्टि से कई नियम लागू किए गए हैं। इनमें से अहम है दस साल पुराने डीजल और पंद्रह वर्ष से अधिक पुराने पेट्रोल वाहनों को महानगरों की सड़कों पर चलने की अनुमति न देना। इसके साथ ही जिन-जिन वाहनों को चलने की अनुमति है, उन सभी में वैध प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र यानी 'पीयूसी' होना अनिवार्य है। सीधा मतलब यह कि आपके वाहन में वैध प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र है तो आपका वाहन तय मानकों से अधिक प्रदूषण नहीं कर रहा है, और तभी

आपके वाहन को सड़क पर आने की अनुमति है। हर वर्ष नवम्बर के महीने में दिल्ली सरकार अपने आदेश के तहत बिना पीयूसी चलने वाले वाहनों पर 10,000 रुपये का मोटा जुमार्ना लगाने के आदेश जारी कर देती है। इसका पालन भी सख्ती से होता दिखाई देता है। पर्यावरण विशेषज्ञ, नेता और संबंधित सरकारी विभागों के अफसर इस बार भी इस समस्या को लेकर सिर खपा रहे हैं। उन्होंने सोच-विचार का नतीजा बताया है कि फसल कटने के बाद जो ठूंठ बचते हैं, उन्हें खेत में जलाए जाने के कारण यह धुआं बना है जो एनसीआर के ऊपर छा गया है। लेकिन सवाल उठता है कि यह तो हर साल ही होता है तो नये जवाबों की तलाश क्यों हो रही है? सरकार को प्रदूषण की समस्या से छुटकारा पाना है तो उसे असल कारणों पर वार करना होगा।

गंगा मेला कार्यक्रम को भव्य, शांतिपूर्वक, हर्षोल्लास के साथ सफल सम्पन्न कराने पर सभी का हार्दिक धन्यवादः जिलाधिकारी श्रीमती प्रेरणा शर्मा

गंगा घाटों की सफाई हेतु 16—17 नवम्बर को चलाया जायेगा "विशेष सफाई अभियान": जिलाधिकारी श्रीमती प्रेरणा शर्मा

संस्कार उजाला ब्यूरो

हापुड़:/ गढ़ गंगा कार्तिक पूर्णिमा मेला—2024 के भव्य एवं सफलतापूर्ण सम्पन्न होने पर जिलाधिकारी महोदया श्रीमती प्रेरणा शर्मा ने पतित पावनी मां गंगा के चरणों में वन्दना करते हुए गढ़ गंगा कार्तिक पूर्णिमा मेला—2024 को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करने पर जिला प्रशासन, पुलिस विभाग, जिला पंचायती राज विभाग, विद्युत विभाग, नगर पालिका, स्वास्थ्य विभाग, पेयजल विभाग, राजनेताओं, उच्चाधिकारियों, मीडिया बंधुओं, कलाकारों, समाजसेवियों, जनपदवासियों, श्रद्धालुओ, दर्शकों, मेला प्रबधकों सहित अन्य सभी सहयोगकताओं का हृदय की गहराईयों से आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद

प्रेषित करती हूं। जिलाधिकारी महोदया श्रीमती प्रेरणा शर्मा ने कहा कि मुझे आशा है कि जिस प्रकार आप सभी विभागों, जनपदवासियों सहित अन्य सभी ने गंगा मेला का कार्यक्रम भव्य, शांतिपूर्वक, हर्षोल्लास के साथ सफल सम्पन्न कराया है, ठीक उसी प्रकार आप लोगों का सहयोग हमें अन्य सभी कार्यक्रमों एवं सरकार की मंशारूपी जनहित, जनकल्याण की योजनाओं को शत—प्रतिशत पूर्ण करने में भी मिलता रहे, धन्यवाद। जिलाधिकारी महोदया श्रीमती प्रेरणा शर्मा ने कहा कि गंगा स्नान के उपरान्त अब विशेष सफाई अभियान चलाकर घाटों की सफाई कराई जायेगी। यह अभियान 16—17 नवम्बर को चलाया जायेगा, यह अभियान विशेषतः कच्चा घाट गढ़मुक्तेश्वर व ब्रजघाट पर चलाया जायेगा। जिसमें जिला पंचायती राज विभाग, अधिशासी अधिकारी नगरपालिका हापुड़, ब्रजघाट व पिलखुआ द्वारा सयुक्त रूप से विशेष टीम गठित करते हुए विशेष सफाई अभियान चलाया जायेगा। कच्चा घाट गढ़मुक्तेश्वर को स्वच्छ कराने हेतु 390 सफाई कर्मचारी, 07 पानी टैंकर, 05 मोबाइल टॉयलेट, 04 कूड़ा उठाने की मशीन, 100 डस्टबिन, 01 सैफ्टी टैंक, 01 स्प्रे टैंकर, 02 कूड़ा कम्पैक्टर, 02 ट्रैक्टर ट्रोली लगेगी। इसके साथ ही ब्रजघाट की विशेष सफाई अभियान हेतु 01 डम्फर, 03 ट्रैक्टर ट्रोली, 02 जेसीबी, 60 सफाई कर्मचारी लगेंगे। सफाई अभियान के अन्तर्गत सभी कूड़ा एकत्र कर डम्फर व ट्रैक्टर ट्रोली के माध्यम से डम्पिंग ग्राउड भेजा जायेगा। इसके अतिरिक्त 60 सफाई कर्मचारी व 05 टिम्पर गाड़ियां शहर मार्ग की सफाई में नियमित रूप से रहेंगे। उन्होंने कहा कहा कि सफाई अभियान के तहत जो भी कूड़ा एकत्रित किया जाए उसको डंपिंग ग्राउंड में निस्तारित करना सुनिश्चित किया जाए।

जिला प्रशासन की यातायात व्यवस्था पूर्ण रूप से हुई धराशायी जाम ने तोड़े सारे रिकॉर्ड 3 किलोमीटर का जाम 6 घंटे में श्रद्धालुओं ने किया पास

संस्कार उजाला

गढ़मुक्तेश्वर/ कार्तिक पूर्णिमा गंगा स्नान मेला जिला प्रशासन के द्वारा सकुशल संपन्न तो करा दिया गया। लेकिन मेला संपन्न होने पर अपने अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान करने के लिए दुकानदारों एवं श्रद्धालुओं का उमड़ा जन सैलाब मेला स्थल से नेशनल हाईवे की तरफ जाने पर जाम को लेकर सारे रिकॉर्ड हुए ध्वस्त।

बता दे की जिला प्रशासन की अफसर शाही टीम के द्वारा सभी संबंधित विभागीय अधिकारियों के सहयोग से कार्तिक पूर्णिमा गंगा स्नान मेला 2024 सकुशल हुआ संपन्न। लेकिन मेला संपन्न होने पर दुकानदारों एवं श्रद्धालुओं ने जैसे ही घर की तरफ प्रस्थान करना शुरू किया। तो नेशनल हाईवे पर जाम के झाम में फंस गए। यहां तक की 3 किलोमीटर लंबा जाम लगने के चलते इस 3 किलोमीटर के टुकड़े को पार करने में 6 घंटे का लगा समय जाम में फंसे दुकानदारों एवं श्रद्धालुओं में मचा त्राहीमाम त्राहिमाम। मेला संपन्न होने पर यातायात पुलिस ने अपनाया दुलमुल रवैया और यातायात व्यवस्था चरमरा गई। सूत्रों की माने तो ठीक यही हाल हुआ था बीती रात्रि तीर्थ नगरी ब्रजघाट में गंगा जी पर जाने वाले यातायात पुलिस के द्वारा सभी कट बंद किए हुए थे। दूसरी साइड में गंगा जी की तरफ प्रवेश करने के लिए लोगों को 4 किलोमीटर लोगों को जाम के झाम में फंस कर कबीरपुर कट से यूटर्न लेकर गंगा जी आना पड़ा।

संक्षिप्त डायरी

पिलखुवा कोतवाली पुलिस ने अपराधिक घटना में वांछित चल रहे अभियुक्त को किया गिरफ्तार

संस्कार उजाला

रिपोर्टर भूपेंद्रवर्मा

हापुड़/एसपी कुंवर ज्ञानेंज सिंह के कुशल आदेश अनुपालन में हापुड़ पुलिस के द्वारा अपराधिक घटनाओं पर विराम लगाने को लेकर आपराधिक मामलों में वांछित एवं माननीय न्यायालय से गैर हाजिर चल रहे। अपराधियों की धर पकड़ को लेकर चलाए जा रहे। अभियान के तहत पिलखुवा कोतवाली पुलिस ने म०अ०स०604/24/धारा 137(2)352,351(2) बीएनएस से संबंधित अभिषेक पुत्र मुकेश निवासी ग्राम डूहरी थाना पिलखुवा को गिरफ्तार पर विधिक वैधानिक कार्यवाही करते हुए माननीय न्यायालय में किया पेश।

बाबूगढ़ पुलिस ने एक दिन पूर्व मारपीट के मामले में दर्ज मुकदमे में वांछित दो अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

संस्कार उजाला

रिपोर्टर भूपेंद्रवर्मा

हापुड़/बाबूगढ़ थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव चक्रसेनपुर में एक दिन पूर्व कहासुनी होने को लेकर हुई मारपीट में दर्ज मु०अ०स० 339/24/धारा 191(2) 191 (3) 109, 115 (2) बी एन एस में वांछित चल रहे। चक्रसेनपुर निवासी अमरजीत पुत्र यशपाल, साहिल पुत्र मुकेश को गिरफ्तार कर विधिक वैधानिक कार्यवाही करते हुए माननीय न्यायालय में किया पेश।

योगी सरकार का मिशन शक्ति अभियान बनता जा रहा है फोटो सेशन रजिस्टर में एक दर्जन एंट्री करने पर मिशन शक्ति अभियान पूरा

संस्कार उजाला

हापुड़/उत्तर प्रदेश की योगी सरकार के द्वारा प्रदेश के सभी थानों में एंटी रोमियो स्क्वायड टीम का गठन किया हुआ है। जिसके द्वारा मिशन शक्ति अभियान एंटी रोमियो अभियान नारी सशक्तिकरण अभियान चलाकर बालिकाओं महिलाओं को जागरूक की जिम्मेदारी दी गई है। जिसको लेकर यह अभियान अब फोटो सेशन तक सीमित होता जा रहा है। मिशन शक्ति हो एंटी रोमियो हो नारी सशक्तिकरण हो इन सभी अभियानों के चेकिंग के नाम पर महिला कांस्टेबलों के द्वारा लगभग एक दर्जन एंट्री रजिस्टर में कर फोटो सेशन करने और पुलिस प्रशासन के आला अधिकारियों को फोटो व्हाट्सएप करने कर इन सभी अभियान की इतिश्री कर दी जाती है।

बुंदेलखंड के प्रसिद्ध दिवारी नृत्य कार्यक्रम में प्रतिभाशालियों को किया गया सम्मानित

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बुंदेलखंड की दिवारी नृत्य एक मशहूर कला है जोकि हर जगह जानी जाती है, यह बुंदेलखंड की संस्कृति का प्रतीक भी है तथा आज भी गांवों में दिवारी कला का आनंद लिया जा सकता है। वहीं बांदा जनपद के माटा ग्राम में भव्य दिवारी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बांदा जनपदकी दर्जनों टीमों ने प्रतिभाग किया। इस दौरान कलाकारों ने अपनी कलाकारी से दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया जहां एक ओर कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते नजर आए तो वही दूसरी तरफ दर्शकों ने भी टकटकी लगाए उनकी सुंदर प्रस्तुति का लुत्फ उठाया और तालियां बजाकर कलाकारों का उत्साहवर्धन किया। इस कार्यक्रम के संचालक पंकज यादव ने बताया कि यह कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष ही आयोजित किया जाता है जिसमें जनपद की कई टीमें प्रतिभाग करती हैं और उन्हें सम्मानित भी किया जाता है। इस दौरान सभी टीमों ने अपना सुंदर प्रदर्शन किया जिसमें प्रथम स्थान पर छोटी बड़ोखर, द्वितीय स्थान पर बड़ी बड़ोखर तथा तृतीय वर्ष पर भाखंडा टीम रही। इस मौके पर टीमों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया तथा उनकी कला की सराहना की गई। इस मौके पर सैकड़ों की संख्या में लोगों की भीड़ इकट्ठा रही।

जनजाति गौरव दिवस के अवसर पर किया गया कार्यक्रम का आयोजन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा में शुक्रवार 15 नवंबर को नेहरू युवा केन्द्र बांदा, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के जिला युवा अधिकारी विनीत गहलावत के निदेर्शानुसार राजकीय आश्रम पद्धति इण्टर कॉलेज हरदौली बांदा के प्रांगण में जनजाति गौरव दिवसस्र कार्यक्रम के अंतर्गत भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर जनजाति गौरव दिवस के उपलक्ष में मुख्य अतिथि कैलाश कुमार प्रधानाचार्य ने सरस्वती मां की प्रतिमा में माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। कैलाश कुमार ने भगवान बिरसा मुंडा के बारे में छात्राओं को बताया गया और इस कार्यक्रम में छात्र मुकेश कुमार ने सरस्वती वंदना, लवलेश ने स्वागत गीत, मुकेश कुमार ने भजन, अंश ने कविता, संदीप ने भगवान बिरसा मुंडा के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में उपस्थित प्रधानाचार्य कैलाश कुमार, सीमा देवी, बृजेश, कृष्ण कुमार समस्त अध्यापक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन में नेहरु युवा केंद्र बांदा युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के एमटीएस रवि अवस्थी और युवा मंडल अध्यक्ष धनीराम के द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

ग्रामीणों ने रतुपुरा राशन डीलर पर फिंगरप्रिंट लगवा कर दो माह का राशन डकारने के लगाए गंभीर आरोप

संस्कार उजाला

गढ़मुक्तेश्वर/गढ़मुक्तेश्वर तहसील क्षेत्र में राशन डीलरों की हठधर्मिता और घटौली थमने का नाम नहीं ले रही है। क्षेत्र में राशन डीलरों के द्वारा घटिया क्वालिटी के सर्फ, साबुन,नमक, उपभोक्ताओं को जबरन देने का सिलसिला चल रहा है। तो वही अपनी मनमानी के चलते इलेक्ट्रिक कांटे पर बांट एवं खाद्य सामग्री रखकर घटौली करने का यह नया तरीका शुरू किया गया है। बता दें कि क्षेत्र में राशन डीलरों के द्वारा अपनी इच्छा के अनुसार राशन का वितरण किया जा रहा है। तो कहीं जबरदस्ती सर्फ,तेल साबुन दिए जा रहे हैं। जो इन सामानों को लेने से इनकार करता है उसको राशन भी नहीं दिया जा रहा है।ऐसा ही एक मामला सिंभावली थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने

वाले गांवर रतुपुरा से निकलकर प्रकाश में आया है। जिसमें राशन डीलर पर ग्रामीणों के द्वारा गंभीर आरोप लगाते हुए बताया गया है कि दो माह का राशन देने को लेकर राशन डीलर के द्वारा उनके अंगूठे फिंगरप्रिंट मशीन में ले लिए गए हैं। और उनको दो माह का राशन नहीं दिया गया है। जिसको लेकर पीड़ित ग्रामीणों ने उप जिला अधिकारी गढ़मुक्तेश्वर एवं आपूर्ति निरीक्षक को शिकायत की थी। जिसको लेकर रतुपुरा के राशन डीलर के द्वारा राशन वितरण पर रोक लगाने के साथ राशन वितरण करने का जिम्मा पड़ोसी गांव रझैडा के राशन डीलर को सोपा गया है। जिसको लेकर ग्रामीणों ने दूसरे गांव में जाने पर होने वाली परेशानियों का बखान करने के साथ राशन डीलर की जांच कर अधिकारियों से गांव में ही राशन वितरण करने की मांग की है। सूत्रों की माने राशन डीलर दबंग प्रवृत्ति का व्यक्ति है। यदि उसके विरुद्ध कोई आवाज उठाने की कोशिश करता है तो वह उसको झूठे मुकदमे में फंसा कर जेल भिजवाने तक की भी धमकी देता है।इन सभी तथ्यों के मद्देनजर ग्रामीणों ने राशन डीलर की जांच कर विधिक वैधानिक कार्यवाही करने की मांग की है।

साहब ड्यूटी छोड़ सकता हूं लेकिन मोबाइल नहीं कार्तिक पूर्णिमा मेले में आने जाने वालों की सुरक्षा व्यवस्था राम भरोसे पुलिसकर्मी मोबाइल में मशगूल आए नजर

संस्कार उजाला

रिपोर्टर भूपेंद्रवर्मा

गढ़मुक्तेश्वर/जिला प्रशासन की अफसर शाही टीम के द्वारा ऐड़ी चोटी का जोर लगाने के बावजूद कार्तिक पूर्णिमा मेले में आने जाने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था कायम रखने को लेकर ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मियों को मोबाइल में देखा गया मशगूल कानून सुरक्षा व्यवस्था चलती रही राम भरोसे। जाम लगने के चलते वहां रेंगते रहे चींटी की चाल। शुक्रवार को बक्सर में लगने वाले साप्ताहिक बाजार में भी यही है हाल। हाय रे मोबाइल ना खाने देता है ना सोने देता है ना नहाने देता है ना ड्यूटी करने देता है। ऐसा ही नजारा देखने

को मिला कार्तिक पूर्णिमा मेले में जाने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था में ड्यूटी पर तैनात शुक्रवार को लगने वाले बाजार में पुलिस कर्मियों का जहां सुरक्षा व्यवस्था बनाने के बजाय मोबाइल में मशगूल नजर आ रहे हैं। बता दें कि कार्तिक पूर्णिमा गंगा स्नान मेले में आने जाने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टिगत जिला प्रशासन के द्वारा कड़ी मशक्कत की जा रही है और साथ ही यातायात सुरक्षा व्यवस्था कायम रखने को लेकर पुलिस कर्मियों की ड्यूटी भी जगह-जगह लगाई हुई है। लेकिन कार्तिक पूर्णिमा गंगा स्नान मेले में आने जाने वाले श्रद्धालुओं की व्यवस्था को लेकर ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों के द्वारा सुरक्षा व्यवस्था कायम नहीं रखने के चलते शुक्रवार के बाजार में अवस्थाओं का दौर देखा गया। जो व्यवस्था बनाने के बजाय अपनी कुर्सियों पर बैठे मोबाइल में मस्त नजर आए। और श्रद्धालुओं का आवागमन राम भरोसे चल रहा है।

किसानों की धान की फसल चौपट होने के एवज में जेडीयू नेत्री ने मुआवजा की मांग की

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा जनपद के जिन-जिन ग्राम पंचायतो में धान की फसल होती है उन सभी ग्राम पंचायतो में खैरा माहू व नरैनी क्षेत्र में धान में कीड़े लग जाने के कारण जहां किसानों की उपज 4 कुंतल होती थी वही कीड़े लग जाने के कारण दो ही कुंतल धान की उपज किसानों को मिल रही है जैसे बबेरू तहसील गांव बड़ागांव, शिव, कोरम, पल्हरी, मवई समेत अन्य गांव में कई दर्जनों किसानों के धान की फसलों में खैरा रोग हो जाने से किसान की फसल बर्बाद हो गई है किसानों की समस्या को लेकर गुरुवार को जनता दल यूनाइटेड महिला विंग प्रदेश अध्यक्ष शालनी सिंह पटेल ने मंडला आयुक्त को ज्ञापन सौंपा है और किसानों को मुआवजा दिए जाने की मांग की है। बता दे की देश का अन्यदाता कहें जाने वाला किसान अपनी बर्बाद फसल को लेकर परेशान हैं जिन स्थानों पर किसानों की धान खराब हुई है संबंधित लेखपालों की एक टीम गठित कर इसकी समुचित जांच करवाकर किसानों के धान का मुआवजा किसानों को दिए जाने की मांग जेडीयू नेत्री ने की है। बताया गया की बुंदेलखंड में किसान आए दिन मौत को गले लगा रहा है बुंदेलखंड में किसानों का एकमात्र साधन है कृषि जब फसलो की उपज किसानों को सही नहीं मिलती है किसान कर्ज लेकर के खाद, बीज भी खरीदता है जब फसल की उपज अच्छी नहीं होती किसानो को कर्ज भी वापस करना होता है लेकिन जब किसान कर्ज अदा करने पर असमर्थ होता है तो सिर्फ और सिर्फ किसान मौत को गले लगाता है

एक वारन्टी अभियुक्त को गिरफ्तार कर सम्बन्धित न्यायालय में किया गया पेश

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा में पुलिस अधीक्षक बांदा अंकुर अग्रवाल के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने तथा विभिन्न अभियोगों में वांछित/वारंटी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में शुक्रवार 15 नवंबर 2024 को थाना बबेरू पुलिस द्वारा अ0सं0 251/2007 धारा 279/338/304A IPC U 182 MV ACT थाना बबेरू से सम्बन्धित 01 वारन्टी अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायिक मजिस्ट्रेट बबेरू के समक्ष पेश किया गया। गिरफ्तार वारन्टी अभियुक्त का नाम व पता रामसुमेर पुत्र रामगोपाल निवासी ग्राम बडनपुर थाना क्षेत्र राधानगर (पूर्व थाना गाजीपुर) जनपद फतेहपुर उम्र करीब 48 वर्ष है। उक्त व्यक्ति पर मु0अ0सं0 251/2007 धारा 279/338/304A 304A IPC व 182 MV ACT थाना बबेरू जनपद बांदा में अभियोग पंजीकृत किया गया है।

हापुड़ देहात पुलिस ने युवक को गोली मारने के मामले में वांछित चल रहे तीन आरोपियों को दो तमंचे दो जिंदा कारतूस सहित किया गिरफ्तार

संस्कार उजाला

संवाददाता विक्की राज

हापुड़/थाना हापुड़ देहात क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव श्यामपुर में 11 अक्टूबर को हथियारबंद बाइक सवार लोगों ने पूर्व हुए दर्ज मुकदमे में फैसले का दबाव बनाने को लेकर फायरिंग कर युवक को गोली मारने के मामले में वांछित चल रहे तीन अभियुक्तों को पुलिस ने किया गिरफ्तार।

बता दें कि हापुड़ देहात थाना क्षेत्र के गांव श्यामपुर निवासी सेंसर पाल ने बताया कि 11 अक्टूबर को घर पर दुर्गा पूजा चल रही थी।जिसमें रिश्तेदार और परिचित भी शामिल थे। इसी दौरान दोपहर को दो बाईकों पर सवार गांव के ही शुभम,जयविद, विनोद, व एक अन्य अज्ञात नकाबपोश घर के बाहर पहुंचे। और पूर्व में कुछ लोगों के विरुद्ध दर्ज कराए गए। मुकदमे में फैसला करने को लेकर धमकी देते हुए फायरिंग शुरू कर दी। जिसमें सेंसेरपाल के बेटे के कुल्हे और जांघ में गोली लगी थी। वही इस मामले को लेकर को सिटी जितेंद्र शर्मा ने बताया कि जरौठी के मनीष मौहल्ला शिवनगर के पिंकू शर्मा बाबूगढ़ थाना क्षेत्र के गांव गोहरा आलमगीरपुर के देवेंद्र ने फायरिंग करने वाले आरोपियों से मिलकर षड्यंत्र के तहत घटना को अंजाम दिया था। जिसमें वांछित चल रहे। तीन लोगों को दो तमंचे दो जिंदा कारतूस सहित गिरफ्तार कर विधिक वैधानिक कार्यवाही करते हुए जेल भेजा गया है।

77वें वार्षिक निरंकारी संत समागम की तैयारियां जोरों पर

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आनंद के दिव्य स्वरूप - 77वें वार्षिक निरंकारी संत समागम का भव्य आयोजन 16 से 18 नवम्बर को संत निरंकारी आध्यात्मिक स्थल, समालखा (हरियाणा) में सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं निरंकारी राजपिता रमित जी की पावन छत्रछाया में होने जा रहा है जिसकी तैयारियां अंतिम चरण पर है। निसंदेह इस दिव्य संत समागम में सभी संतों को हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ज्ञान, प्रेम और भक्ति का अनुपम संगम दृश्यमान होगा। यह जानकारी बांदा जोन के जोनल इंचार्ज डॉ० दर्शन सिंह द्वारा दी गई। उल्लेखनीय है कि विश्वभर के समस्त श्रद्धालुओं को प्रति वर्ष इस भक्ति-उत्सव की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा रहती है जिसमें विभिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यताओं का अद्भुत संगम अपनी बहुरंगी छठा द्वारा अनेकता में एकता का अनुपम चित्रण प्रदर्शित करते हुए विश्वबन्धुत्व की साकार भावना को दर्शाता है। दिव्यता के इस अनुपम आयोजन में लाखों की संख्या में श्रद्धालु भक्त सम्मिलित होकर सतगुरु के दिव्य दर्शन और अमूल्य प्रवचनों का लाभ प्राप्त करेंगे। इस पावन अवसर की तैयारियां पूर्ण समर्पण एवं सजगता के साथ श्रद्धालु भक्तों द्वारा निभाई जा रही है। समागम परिसर को भव्य रूप से सजाया गया है जिसमें विशाल पण्डालों में सभी भक्तों के बैठने की समुचित व्यवस्था की गई है। भक्तों की सुविधा हेतु सम्पूर्ण समागम परिक्षेत्र में अनेक एल. ई. डी. स्क्रीन लगाई जा रही हैं जिससे मंच पर होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम को हजारों की संख्या में उपस्थित दर्शक स्पष्ट रूप से देख सके। समागम व्यवस्था के अंतर्गत प्रतिवर्ष निर्मित भव्य गेट की संरचना मुम्बई की गोपी एण्ड पार्टी टीम द्वारा निभाई जाती है जो उनकी कला और निष्ठा को जीवंत रूप में प्रदर्शित करती है। इस आकर्षक स्वरूप को देखकर हजारों की संख्या में आये हुए श्रद्धालु भक्त प्रफ्फुलित महसूस करते है। संपूर्ण समागम परिसर को चार भागों में वितरित किया गया है - ए, बी, सी एवं डी ग्राउंड में। जिसके अंतर्गत ह्यएह्ल भाग प्रायः मुख्य सत्संग स्थल, निरंकारी प्रदर्शनी तथा संत निरंकारी मण्डल के प्रशासकीय विभागों के कार्यालयों, निरंकारी प्रकाशन, कैंटीन, सेवादल रैली स्थल एवं पार्किंग इत्यादि में वितरित किया गया है। अन्य तीनों भागों में श्रद्धालु भक्तों के लिए रिहायशी टैंट की व्यवस्था की गई है जिनमें पानी, बिजली, सीवरेज इत्यादि जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवायी गयी हैं। समागम में स्वच्छता का भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। समागम परिसर के सभी मैदानों में लंगर बनाने एवं वितरण का भी उचित प्रबंध किया गया है जिसमें निरंकारी सेवादल दिन-रात अपना योगदान दे रहे हैं। निरंकारी मिशन के सचिव जोगिंदर सुखीजा ने बताया कि समागम संबंधित सारी प्रबंध व्यवस्थाएं सतगुरु के आशीर्वाद द्वारा आयोजित की जा रही हैं क्योंकि सतगुरु माता जी की सदैव यही इच्छा रहती है कि संत समागम में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक श्रद्धालु भक्त को किसी प्रकार की कोई भी असुविधा न हो। निःसंदेह सतगुरु की दिव्य शिक्षाओं का ही यह सुंदर परिणाम है कि इस पावन संत समागम में हर ओर केवल प्रेम, सदभाव और एकत्व का ही दिव्य संदेश प्रदर्शित हो रहा है। मानवता के इस महा समागम में सभी भाई-बहन आमंत्रित है।

तीर्थ नगरी में कार्तिक पूर्णिमा मेले पर पांच लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किया दीपदान,तीर्थ नगरी में आस्था का प्रतीक बना दीपदान

संस्कार उजाला

जिला प्रभारी अमित शर्मा

जनपद हापुड़ के गढ़मुक्तेश्वर तीर्थ नगरी ब्रजघाट में कार्तिक पूर्णिमा मेले पर श्रद्धालुओ का उमड़ा सैलाब।कार्तिक पूर्णिमा मेले पर पांच लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने दीपदान कर लगाई आस्था की डुबकी।

वही तीर्थ नगरी में नगर पालिका परिषद द्वारा लगाया गया।खोया पाया केंद्र ,स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगाया गया स्वास्थ्य शिविर,

प्रशासन द्वारा समस्त गंगा किनारे से लेकर समस्त चौराहे तक पुलिस कर्मियों की ड्यूटी भी तैनात की गई। पंडित विनोद शास्त्री ने बताया कि कार्तिक पूर्णिमा मेला पौराणिक एवं धार्मिक मान्यताओं के अनुसार गंगा किनारे दीपदान कर अपने पितरों की आत्मा शांति के लिए दीप जलाकर गंगा में प्रवाहित किए जाते हैं।

कार्तिक पूर्णिमा मेले के दिन भी श्रद्धालुओं को जाम की समस्या का सामना करना पड़ा। स्याना चौराहे से लेकर जीरो मोहम्दाबाद तक जाम में रहे। देर शाम को पहुंचे श्रद्धालुओं ने तीर्थ नगरी में दीपदान किए।नगर पालिका द्वारा समस्त गंगा किनारे पालिका कर्मियों की ड्यूटी भी तैनात की गई।

समाजवादी पार्टी के कार्यकताओं ने जोरदार प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा में शुक्रवार को समाजवादी पार्टी के कार्यकताओं ने सपा की राष्ट्रीय सचिव नीलम गुप्ता एवं एजाज अहमद छात्र सभा जिलाध्यक्ष के तत्वाधान में जिला कलेक्ट्रेट परिसर पहुंचकर जोरदार प्रदर्शन किया। इस दौरान कार्यकताओं ने 9 सूत्रीय मांगों को लेकर जिलाधिकारी कार्यालय में प्रदर्शन किया। समाजवादी पार्टी के कार्यकताओं ने खाद वितरण में हो रही धांधली के विरोध में महामहिम राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन सौंपा। बताया गया कि चाहे दिन हो या रात हो लेकिन किसान खाद के लिए लाइनों में लगा है। वही महिला किसानों को भी अपने नौनिहालों के साथ रात भर लाइन में लगना पड़ता है। किसानों की कड़ी मेहनत के बाद भी किसानों को खाद नहीं मिल पाती है। सपा कार्यकताओं ने प्रदर्शन करते हुए कहा कि प्रदेश में भ्रष्टाचार और बेरोजगारी चरम पर है। भाजपा सरकार पर भी तीखे सवाल दागे और कहा कि किसानो के साथ ही साथ युवाओं का भी भविष्य अंधेरे में है। इस मौके पर सैकड़ो की संख्या में समाजवादी पार्टी के कार्यकताओं ने मिलकर महामहिम राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन सौंपा है।

संक्षिप्त डायरी

पुलिस ने यूट्यूबरों के साथ बैठक करते हुए मिशन शक्ति अभियान में सहयोग करने की अपील की

संस्कार उजाला
बडगांव सहारनपुर।
बड़गांव। महिला एवं बालिकाओं की सुरक्षा एवं जागरूकता के लिए मिशन शक्ति अभियान फेज-5 में चल रहा है। शुक्रवार को थाना परिसर में थानाध्यक्ष विनय कुमार शर्मा ने मिशन शक्ति की टीम के साथ क्षेत्र के समस्त यूट्यूबरों की बैठक में कहा कि प्रशासन द्वारा महिलाओं को जागरूक करते हुए उनके अधिकारों व उनकी सुरक्षा के बारे जो मिशन शक्ति अभियान चलाया जा रहा इसलिए वें भी अपने चैनलों पर प्रसारित कर इस अभियान में पुलिस का सहयोग करे। इस मौके पर यूट्यूबर मोहित उर्फ छोटू, शंकर, नितिन, विवेक काला, प्रवेश आदि मौजूद रहे।

ऋषिकुलम कन्या गुरुकुल ग्राम बेरखेड़ी हिन्दू में जाकर बालिकाओं से बात की गई...

संस्कार उजाला संवाददाता
एंटी रोमियो टीम थाना तीतरो जिला सहारनपुर के कस्बा तीतरों के ऋषिकुलम कन्या गुरुकुल ग्राम बेरखेड़ी हिन्दू (सहारनपुर) में जाकर बालिकाओं से बात की गई और वहां पर सरकार द्वारा चलाए जा रही विभिन्न योजनाएं व मिशन शक्तिअभियान फेज 5 के तहत जानकारी दी गई क सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नंबर आपातकालीन नंबर 112 वूमेन पावर , हेल्पलाइन नंबर 181 चाइल्ड , हेल्पलाइन नंबर 1098 एंबुलेंस, सुविधा हेल्पलाइन नंबर 102 , मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर 1076 , महिला सुरक्षा हेल्पलाइन नंबर 1090 , साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 आदि हेल्पलाइन नंबरों से ssi राजकुमार सिंह, उप निरीक्षक कमलेश , महिला कांस्टेबल दिशा द्वारा अवगत कराया गया और पंपलेट भी वितरित किए गए

नागल में एमएलसी मोहित बेनीवाल का स्वागत,फीता काटकर काम्प्लेक्स का उद्घाटन करते मोहित बेनीवाल

संस्कार उजाला संवाददाता
नागल। शुक्रवार शाम एमएलसी व भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष मोहित बेनीवाल ने जीटी रोड स्थित एक कांप्लेक्स का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए कहा कि वर्तमान के परिवर्तनशील युग में छोटे कस्बों में भी इस तरह के माल की जरूरत बढ़ रही है। समय के अनुसार चलना व आगे बढ़ना ही प्रखर व्यक्तित्व की निशानी है। जिला पंचायत अध्यक्ष चौधरी मांगेराम व पूर्व ब्लॉक प्रमुख विजेंद्र चौधरी आदि ने भाजपा नेता मोहित बेनीवाल को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष मांगेराम चौधरी, पूर्व ब्लाक प्रमुख विजेंद्र सिंह, गन्ना समिति चेयरमैन मनोज पुंडीर, ईशांत चौधरी, पपिन चौधरी, निशांत चौधरी, वत्सराज स्वाधीन, मेनपाल सिंह, इंद्रसिंह मलिक, हरीश त्यागी, नरेंद्र राणा, रविंद्र काका, अजीत राणा आदि रहे।

ऋषिकुलम कन्या गुरुकुल ग्राम बेरखेड़ी हिन्दू में जाकर बालिकाओं से बात की गई...

संस्कार उजाला
संवाददाता सहारनपुर एंटी रोमियो टीम थाना तीतरो जिला सहारनपुर के कस्बा तीतरों के ऋषिकुलम कन्या गुरुकुल ग्राम बेरखेड़ी हिन्दू (सहारनपुर) में जाकर बालिकाओं से बात की गई और वहां पर सरकार द्वारा चलाए जा रही विभिन्न योजनाएं व मिशन शक्तिअभियान फेज 5 के तहत जानकारी दी गई क सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नंबर आपातकालीन नंबर 112 वूमेन पावर , हेल्पलाइन नंबर 181 चाइल्ड , हेल्पलाइन नंबर 1098 एंबुलेंस, सुविधा हेल्पलाइन नंबर 102 , मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर 1076 , महिला सुरक्षा हेल्पलाइन नंबर 1090 , साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 आदि हेल्पलाइन नंबरों से २१ राजकुमार सिंह, उप निरीक्षक कमलेश , महिला कांस्टेबल दिशा द्वारा अवगत कराया गया और पंपलेट भी वितरित किए गए

मानसिक रूप से परेशान चल रहे युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या

संस्कार उजाला
सचिन यादव गागलहेड़ी
गागलहेड़ी। मानसिक रूप से परेशान चल रहे युवक ने फांसी लगा कर आत्महत्या की। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। जानकारी के अनुसार रसूलपुर पापडेकी निवासी जसबीर सैनी के छोटे पुत्र विशु सैनी उम्र 24 वर्ष ने घर के जाल मे मफलर से फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली। परिजनों ने बताया की विशु की माँ का चार माह पहले स्वर्गवास हो गया था।
तभी से विशु मानसिक रूप से परेशान चल रहा था।विशु कुछ दिनों से एकांत मे रहता था तथा कम ही लोगो से बातचीत करता था। परिजनों ने बताया की विशु अविवाहित था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

युवक के पीछे पड़ी नागिन चार बार डसा सपेरे को बुलाकर पकड़वाया तो उसे भी डसा

यह नागिन युवक का पीछा क्यों कर रही है और उसे बार-बार डस लेती है। क्यो कर रही हैं बार बार युवक की जान लेने का प्रयास ।

संस्कार उजाला
बडगांव सहारनपुर।
बड़ागांव थाना क्षेत्र के गांव चिराऊ में एक नागिन युवक के पीछे पडी हुई है नागिन युवक को चार-पांच बार डस चुकी है। परिजनों ने सपेरे को बुलवाया और नागिन को पकड़वाया सपेरे ने नागिन को गांव से दूर ले जाकर छोड़ दिया उसने सपेरे को भी डस लिया युवक जब खेत पर गया तो नागिन ने उसे फिरसे काठ लिया हालांकि युवक और सपेरे का इलाज कराया जा चुका है और वे दोनों खतरे से बाहर है। गांव चिराऊ निवासी गौरव पुत्र चरण सिंह के पीछे

एक नागिन करीब डेढ़ महीने से पड़ी हुई है परिजनों ने बताया कि गौरव के घर में भी नागिन आ गई थी युवक को खेत में तीन बार दशा और एक बार घेर में डसा इस घटना से घबराए परिजनों ने एक सपेरे को सांप पकड़ने के लिए बुलवाया तो सपेरे ने नागिन को पकड़ लिया सपेरे ने ही ग्रामीणों को बताया कि यह नागिन है सपेरा नागिन को पकड़ कर गांव से दूर हिंडन नदी के किनारे ले गया और जैसे ही नागिन को छोड़ने लगा तो गुसाई नागिन ने तुरंत ही सपेरे पर हमला कर उसे डस लिया और सपेरे को डस कर तुरंत झाड़ियां में जाकर छिप गई सपेरे ने खुद ही अपना इलाज कर लिया है मंगलवार को गौरव खेत पर पानी चलाने के लिए गया था लेकिन नागिन ने फिर गौरव के पास आकर उस युवक को दो बार डस लिया परिजनों नेआनंद-खनन में युवक को डॉक्टर के पास ले जाकर उसका इलाज कराया और झाड़ फूंक भी कराई गई यह घटना क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है ग्रामीण और युवक के परिजन इस घटना से दहशत में है यह पता नहीं लग पा रहा है कि नागिन युवक के पीछे क्यों पड़ी है और युवक को बार-बार डस रही है युवक का नागिन से क्या लेना देना है ।क्यों नागिन बार बार युवक की जान लेने का प्रयास कर रही हैंयह बात किसी की भी समझ मे नहीं आ रही हैं सब लोग इस बात से अनभिग हैं और तरह तरह की चचाएं हो रही है

नगर पंचायत छुटमलपुर के वृद्ध आश्रम में भारतीय मानवाधिकार सुरक्षा संगठन की तरफ से कंबल वितरित किए गए

आश्रम में वृद्धाजनो के जीवन को सुख मय बनाने के लिए भजन कीर्तन कर खुशी की लहर चेहरे पर लाये

संस्कार उजाला
संवाददाता सहारनपुर

नगर पंचायत छुटमलपुर मे भारतीय मानवाधिकार सुरक्षा संगठन की ओर से संगठन की सचिव उषा राठौर के दिशा निर्देशन में फतेहपुर स्थित वृद्ध आश्रम में माता रानी के भजन कीर्तन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वृद्ध आश्रम के संचालक श्री देवी दत्त रेखरी एवं समस्त स्टाफ का बहुत अधिक सहयोग रहा, श्रीमती संगीता रोहिल्ला द्वारा भजन कीर्तन में माता रानी के बहुत सुंदर-सुंदर भजन गाए गए जिसका सभी वृद्धाजन और कार्यक्रम में आए हुए संगठन के पदाधिकारीयों ने आनंद लिया। संगठन की ओर से माता के प्रसाद हलवे की व्यवस्था भी की गई, कस्बे की ही रहने वाली रंजना सैनी जो सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं, ने सभी वृद्ध जनों को कंबल देकर उन्हें सम्मानित किया। संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारी राणा सोम कुमार, कन्हैया मंडोरा, एवं शाकंभरी पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष संजय राणा के द्वारा वृद्ध आश्रम में सभी के लिए फल वितरण की व्यवस्था कराई गई। यह दोनों क्षत्रीय महासभा के वरिष्ठ पदाधिकारी भी हैं। संगठन की ओर से सभी पदाधिकारीयों ने वृद्ध आश्रम के संचालक देवीदत्त रिक्खरी का हृदय से धन्यवाद किया गया और आगे भी इस प्रकार के कार्यक्रम में सहयोग करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में भारतीय मानव अधिकार संगठन की राष्ट्रीय सचिव उषा राठौर, उपाध्यक्ष रेखा पुनेठा , वरिष्ठ पदाधिकारी राणा सोम कुमार ,कन्हैया मंडोरा, प्रमिला सैनी, लोकेश पाल, स्नेह लता,रेनू कंबोज, मोनिका शर्मा,प्रतिभा बालेश ,जतिन राठौर, नीतू राणा आदि आदि का भी कार्यक्रम में बहुत सहयोग रहा।

बाल दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जलवायु फाउंडेशन के बैनर तले,राष्ट्रीय सचिव ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं

संस्कार उजाला संवाददाता
सहारनपुर। नगर पंचायत छुटमलपुर के फतेहपुर स्थित लॉर्ड कृष्णा एकेडमी में बाल दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें बढ़ चढ़कर बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर जलवायु फाउंडेशन की राष्ट्रीय सचिव उषा राठौर ने कहा कि बच्चे हमारे भारत का भविष्य है इनके समुचित विकास और सर्वांगीण विकास पर ध्यान रखना बहुत जरूरी है। बच्चों की देखरेख और उनका विकास हमारे राष्ट्र की प्रगति का एक

हिस्सा है। आज के बच्चे ही हमारे कल का भविष्य है । बच्चे हमारे राष्ट्र के निमार्ता है। बाल दिवस एक उत्सव ही नहीं बल्कि एक अवसर है ,जहां हमें बच्चों के अधिकारों उनके कल्याण और भविष्य की सुरक्षा के बारे में सोचने का समय मिलता है। बाल दिवस का उद्देश्य बच्चों के अधिकारों उनके कल्याण एवं खुशहाली के बारे में समाज को जागरूक करना है। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी बच्चों को जलवायु फाउंडेशन की राष्ट्रीय सचिव उषा राठौर ,जिला अध्यक्ष नीतू राणा ,प्रदेश उपाध्यक्ष रेखा पुनेठा ,जिला सचिव मोनिका शर्मा, अनीता एवं विद्यालय के समस्त स्टाफ ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया,और उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

मण्डलायुक्त ने ओवर रेटिंग करने वालों पर की कार्रवाई

ओवर रेटिंग रोकने के मंडलायुक्त के प्रस्ताव को शासन ने किया मंजूर

☛शराब क्रय करने वाले ग्राहकों को मिलेगी भुगतान पर्ची, जिससे ओवर रेटिंग पर लगेगा अंकुश

संस्कार उजाला ब्यूरो
सहारनपुर मण्डलायुक्त डा० ह्रषिकेश भास्कर यशोद द्वारा शराब बिक्री में ओवर रेटिंग की शिकायतों को गम्भीरता से लेते हुये मण्डल के सभी जनपदों में उप जिलाधिकारियों के माध्यम से शराब की दुकानों की जाँच करायी गयी। जनपद मुजफ्फरनगर एवं शामली में ओवर रेटिंग की शिकायतें सही पायी गयी। जिसके सम्बन्ध में मण्डलायुक्त द्वारा शासन एवं आबकारी आयुक्त को पत्र भेजकर कार्यवाही हेतु लिख दिया गया है।
साथ ही ओवर रेटिंग रोकने हेतु कुछ प्रस्ताव भी मण्डलायुक्त द्वारा शासन को भेजे गये है जिन पर शासन द्वारा अपनी सहमति व्यक्त की गयी है।
अब मण्डलायुक्त के प्रस्ताव अनुसार शराब क्रय करने वाले ग्राहकों को निकट भविष्य में खरीदारी के समय पी०ओ०एस० मशीन से स्कैनिंग के बाद बिल / भुगतान पर्ची भी प्राप्त होगी जिससे ओवर रेटिंग पर अंकुश लग सकेगा। मण्डलायुक्त द्वारा यह भी अवगत कराया गया है कि यदि किसी भी व्यक्ति को ओवर रेटिंग के सम्बन्ध में अथवा कोई अन्य शिकायत करनी है
तो वह आबकारी विभाग के टोल फ्री नम्बर 14405 पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है जिसकी मॉनिटरिंग सम्बन्धित जिले के जिलाधिकारी द्वारा की जायेगी।

बालदिवस पर बच्चों ने सभ्य नागरिक बनने का लिया सामूहिक संकल्प

संस्कार उजाला
डॉ0सै0अब्दुल खबीर
बहराइच मांटेसरी कॉलेज (नगर क्षेत्र मेवातीपुरा) परिसर में बाल दिवस समारोह भव्यता एवं दिव्यता के साथ मनाया गया। बच्चों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में सहभागिता कर बेहतर प्रदर्शन किया और अनुशासन में रहकर सभ्य नागरिक बनने का सामूहिक संकल्प लिया। विद्यालय परिसर में आयोजित बाल दिवस समारोह को संबोधित करते हुए संविधान विशेषज्ञ अनिल त्रिपाठी एडवोकेट ने कहा कि देश के प्रथम प्रधानमंत्री का हृदय विशाल था बच्चों से वे स्नेह करते थे हम सब को उनके विचारों को आत्मसात कर देश एवं

समाज के नवनिर्माण में सहभागी बनाना चाहिए। मुख्य अतिथि संजीव श्रीवास्तव एडवोकेट (अध्यक्ष जिला वित्तविहीन विद्यालय प्रबंधक महासभा) ने विद्यार्थियों को राष्ट्र विधाता बताते हुए शिक्षा के साथ साथ खेल के प्रति समर्पण एवँ नशा आदि से दूर रहने का आवाहन किया। सुलह अधिकारी अनिल मिश्र ने विद्यार्थियों को आशीर्वचन देते हए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय प्रबंधक शिक्षाविद आर पी एन श्रीवास्तव ने बाल दिवस के अवसर पर बेहतर आयोजन के लिए शिक्षक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को आशीर्वचन देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा विद्यालय के उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए सभी से सहभाग का आवाहन किया। संचालन प्राचार्या दिलशाद बानो ने किया। आयोजित समारोह में विद्यार्थियों ने पाक कला का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का स्टॉल भी लगाया। खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को विद्यालय प्रबंधन की ओर से पारितोषिक देकर सम्मानित भी किया गया। आयोजित समारोह में प्रमुख रूप से शिक्षिका प्रीति कौर, शबाना, सुमन बाला, अरुणिमा, रीता वर्मा, सतेंद्र कौर, राजेश मिश्रा, सुधा अवस्थी, सुचिता, रचना, शिखा, सविता, निखत समेत सैकड़ो विद्यार्थी एवँ अभिभावक उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय कर्मी संतोष कुमार सक्सेना ने किया।

आईआईएमटी कॉलेज में खो-खो चैंपियनशिप आयोजित

संस्कार उजाला
संवाददाता सहारनपुर
नागल। शुक्रवार को आईआईएमटी कॉलेज में आयोजित इंटर कॉलेजिएट खो-खो चैंपियनशिप का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि एसपी देहात सागर जैन ने कहा कि खेल में लचीलापन व टीम वर्क जरूरी है। उन्होंने खिलाडियों से खेल भावना व अनुशासन को सर्वोपरि रखने की अपील की। प्रतियोगिता में आईआईएमटी कॉलेज, राम कॉलेज मुजफ्फरनगर, एसडी कॉलेज मुजफ्फरनगर, डीएवी कॉलेज मुजफ्फरनगर, हरी कॉलेज सहारनपुर, जेके पीजी कॉलेज मुजफ्फरनगर, बीएसपी गवर्नमेंट पीजी कॉलेज कैराना, एसकेडी डिग्री कॉलेज मुजफ्फरनगर आदि कालेजों के

एथलीटों ने भाग लिया। पुरुष व महिला वर्ग में श्रीराम कॉलेज की टीम विजेता रही। इसके अलावा पुरुष वर्ग में एसडी कॉलेज मुजफ्फरनगर व महिला वर्ग में एसडी कॉलेज ऑफ कॉमर्स मुजफ्फरनगर ने दूसरी स्थान प्राप्त किया। विजेता टीमों को संस्था निदेशक अंजू वालिया व अतिथियों ने चैंपियनशिप ट्रॉफी से नवाजा। प्रतियोगिता का द्वीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते एसपी देहात सागर जैन

गुरुपुर्ब्ब के पावन अवसर पर असोटेक विंडसर कोर्ट, सेक्टर 78 के निवासियों ने श्रद्धा से एकजुट होकर प्रभातफेरी का आयोजन किया।

संस्कार उजाला
गुरुपुर्ब्ब के पावन अवसर पर असोटेक विंडसर कोर्ट, सेक्टर 78 के निवासियों ने श्रद्धा से एकजुट होकर प्रभातफेरी का आयोजन किया। 10 नवम्बर से 15 नवम्बर तक रोज सुबह निवासियो ने प्रभातफेरी निकाली। एसोटेक विंडसर कोर्ट, सेक्टर 78 के निवासियो ने गुरुपुरब के अवसर पर मिलकर प्रातः 5 बजे प्रभातफेरी का आयोजन किया। प्रभात फेरी में हर उम्र वर्ग के लोगो ने भाग लिया और वाहेगुरु जी नाम लेकर प्रभातफेरी प्रसादा ग्रहण कर संपन्न की। प्रभातफेरी कार्यक्रम में नारी शक्ति का विशेष योगदान रहा। आज के कार्यक्रम में प्रबजीत कौर, बलबीर

कौर, सुनीता गुप्ता, स्वाति जी, ज्योति गिरधर, रागनी जी, पूनम सुखवाल, गरिमा जी, आरती कालरा, आकांक्षा गोयल, पुनीत कौर, सरिता जी व निवासी उपस्थित थे। कल शनिवार 16 नवम्बर को सोसाइटी में सभी निवासीयों द्वारा सुंदरकांड पाठ और भंडारे का आयोजन किया जायेगा। धन्यवाद गिरिराज बहेड़िया

सनातन धर्म बोर्ड का गठन श्री कृष्ण जन्मभूमि को मुक्त कराने की मांग है। संजय गोयल

संस्कार उजाला
रविन्द्र आर्य गाजियाबादः
उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के रमते राम रोड पर धर्म रक्षा संघ की बैठक आयोजित की गई। धर्म रक्षा संघ द्वारा आयोजित बैठक और आगामी कार्यक्रमों की जानकारी साझा करने के लिए सभी सहयोगियों का आभार। कहा, सनातन धर्म की रक्षा और प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से यह बैठक महत्वपूर्ण है। सनातन धर्म संसद में देशभर से धर्म प्रेमियों की भागीदारी से यह स्पष्ट होता है कि इस मुद्दे पर व्यापक जन समर्थन मिल रहा है। दल्ली में सनातन धर्म संसदः

दिनांक एवं समयः 16 नवंबर 2024, दोपहर 1:00 बजे आयोजकः धर्म रत्न श्री देवकीनंदन ठाकुर जिसका उद्देश्य मुख्य बिंदुः श्री कृष्ण जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए देश में सनातन धर्म बोर्ड बनाने की मांग। सनातन संस्कृति का प्रचार-प्रसार यह प्रयास धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के प्रति

जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। दिल्ली में सनातन धर्म संसद का आयोजन धर्म रत्न श्री देवकीनंदन ठाकुर द्वारा किया जा रहा है, धर्म की रक्षा से ही राष्ट्र की रक्षा संभव है, इसमें धर्म रक्षा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सौरभ गौड़ एवं सभी सनातन धर्म प्रेमी बड़ी संख्या में दिल्ली पहुंच रहे हैं, हमारी मांग है कि देश में सनातन धर्म बोर्ड का गठन हो तथा कृष्ण जन्मभूमि को भी मुक्त कराया जाए धर्म रक्षा संघ के सभी पदाधिकारी सनातन धर्म की रक्षा के साथ-साथ सनातन संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कृतसंकल्पित हैं। बैठक के आयोजकः धर्म रक्षा संघ मुख्य वक्ताः महानगर अध्यक्षः संजय गोयल, महामंत्रीः भुवन शर्मा, संरक्षकः प्रवीण बत्रा, एवं राकेश पंडित, उपाध्यक्षः प्रमोद गुप्ता, योगेश शर्मा आदि। महानगर अध्यक्ष संजय गोयल धर्म रक्षा संघ गाजियाबाद

थाना चिलकाना प्रभारी कपिल देव ने अपनी बडी पुलिस टीम के साथ चेकिंग के दौरान एचएस-56 ए गैंगलीडर एजाज हसन को किया गिरफ्तार ,अपराध की दुनिया का बादशाह एजाज हसन काफी मशक्कत के बाद 100 ग्राम अवैध स्मेक के बाद गिरफ्तार

संस्कार उजाला संवाददाता
थाना चिलकाना सहित थाना सरसावा एवम थाना बेहट में यूपी-गुंडा एक्ट,एनडीपीएस एक्ट,आर्म्स एक्ट,लूट चोरी,प्राण घातक हमले के 30 से अधिक मामले पंजीकृत सहारनपुर अपने समय में नशा तस्करी,लूट,चोरी,आर्म्स एक्ट एवम प्राण घातक जैसे हमलो से सहारनपुर में दहशत का माहौल उत्पन्न करने वाले अपराध की दुनिया के बादशाह एजाज हसन को आज इंस्पेक्टर कपिल देव ने अपनी एक बडी पुलिस टीम के साथ चेकिंग के दौरान 100 ग्राम नाजायज स्मेक के साथ पकड़ लिया,जिसे एक इलेक्ट्रॉनिक कांटा भी बरामद किया गया।इस बदमाश को पकड़ने में पुलिस टीम को लगभग आधा घंटे का समय लगा,तब कहीं जाकर इसकी गिरफ्तारी हुई का।आपको बता दें,कि थाना चिलकाना प्रभारी कपिल देव आज सुबह

लगभग 10,30 बजे दुमझेडा रोड पर अपनी एक बडी पुलिस टीम सब इंस्पेक्टर करन नागर,नरेश कुमार,हेड कांस्टेबल हेमंत कुमार एवम तरूण कुमार के साथ चेकिंग पर थे,कि अचानक सामने से आ रहा एक बड़ा नशा कारोबारी चेकिंग करती पुलिस टीम को देखते ही इधर उधर जंगलों की और भागने लगा,इस भागते नशा तस्कर को पकड़ने के लिए पुलिस टीम भी इसके पीछे लगातार दौड़ती रही,करीब आधा घंटे बाद इस नशा तस्कर एजाज हसन पुत्र बाबू निवासी ग्राम दुमझेडा की चारो और से जबरदस्त तरीके से घेराबंदी के बाद इसकी गिरफ्तारी हुई।पुलिस ने इस गैंग लीडर के कब्जे मौके से 100 ग्राम अवैध स्मेक एवम इलेक्ट्रॉनिक कांटा भी बरामद किया।बता दें,कि इस बदमाश को दुमझेडा रोड से कच्चे पक्के रास्ते पर बनी एक पुलिया से थोड़ा आगे ट्यूबवैल से गिरफ्तार किया गया।इस बदमाश के पकड़े जाने की सूचना मिलते ही क्षेत्राधिकारी सदर शशि प्रकाश शर्मा भी थाना चिलकाना पंहुचे,जहां पर क्षेत्राधिकारी द्वारा इस नशा तस्कर से पुछताछ की गई।पकड़े गए इस बदमाश पर,लूट,चोरी,आर्म्स एक्ट, एनडीपीएस, जानलेवा हमले सहित अनगिनत धाराओं में विभिन्न थानों में 30 से अधिक मुकदमे पंजीकृत हैं।इस बदमाश पर यूपी गुंडा एक्ट-3 की भी कार्रवाई हो चुकी हैं

विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल ओर वरदान सेवा ट्रस्ट द्वारा लगाया रक्तदान शिविर

संस्कार उजाला
सहारनपुर। चिलकाना सुल्तानपुर नगर में वरदान सेवा ट्रस्ट एवं विश्व हिंदू परिषद बजरंग के नेतृत्व में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 65 रक्तवीरो ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। शुक्रवार को सुल्तानपुर नगर के पैठ मैदान में आयोजित रक्तदान शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के जिलाध्यक्ष नायब सिंह, नगर पंचायत सभासद मनदीप सैनी व आयुष जी महाराज ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस

दौरान नायब सिंह ने कहा कि रक्तदान करना जहां स्वास्थ्य के फायदेमंद है वहीं हमारे द्वारा दान किये गए रक्त से किसी जरूरतमंद का जीवन बचाया जा सकता है। रक्तदान बहुत ही पुण्य का कार्य है। हम सभी को इस प्रकार के पुण्य के कार्यो में बढ़चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए।इस अवसर पर अम्बा चेरिटेबल ब्लड सेंटर शामली से डॉ अनुज कोरी, डॉ प्रदीप, डॉ हिमांशु सैनी, अतुल महाराजा व संजय सैनी आदि की टीम ने ब्लड एकत्र किया। वही आयोजन समिति में आयुष जी महाराज गौ रक्षा प्रमुख, कन्हैया सैनी, अमित सैनी, डॉ कुलदीप चौधरी, मनदीप सैनी, आकाश काशी, माँघे राम, प्रियांशु राजपूत, ललित सैनी, जयपाल सैनी, दीपक सैनी, संदीप सैनी आदि लोग मुख्य रूप से मौजूद रहे।

सबरीमला तीर्थयात्रा आज से होगी शुरु, सभी सुरक्षा इंतजाम पूरे

सबरीमला। केरल पुलिस ने 16 नवंबर से शुरू हो रही सबरीमला तीर्थयात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सुगम और सुरक्षित दर्शन कराने के लिए सभी जरुरी इंतजाम कर लिए हैं। राज्य पुलिस प्रमुख शेख दरवेश साहिब ने पंपा में मंडला-मकरविलक्कु तीर्थयात्रा की तैयारियों की समीक्षा कर कहा कि पंपा, सन्निधानम और निलक्कल में अधिकारियों के साथ बैठक करके सभी जरूरी सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं। पुलिस की प्राथमिक जिम्मेदारी श्रद्धालुओं को सन्निधानम में सुरक्षित और सुगम दर्शन का अनुभव प्रदान करना है। दरवेश साहिब ने कहा कि सबरीमला तीर्थयात्रा में हमारी भूमिका सिर्फ कर्तव्य पालन तक सीमित नहीं है, बल्कि हम मानवता की सेवा भी कर रहे हैं। इसके साथ ही हवाई मार्ग से सबरीमला जाने वाले तीर्थयात्रियों के लिए कोच्चि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक ठहराव बिंदु बनाया गया है। राज्य के उद्योग और कानून मंत्री पी राजीव ने इस सुविधा का उद्घाटन किया। मंत्री ने कहा कि सरकार ने श्रद्धालुओं को एक सुगम और सुविधाजनक यात्रा अनुभव देने के लिए सभी जरुरी व्यवस्थाएं कर ली हैं।

गोल्डन टेंपल और ननकाना साहिब में श्रद्धालुओं का तांता... 555वें प्रकाश पर्व दुनियाभर के गुरुद्वारों में भीड़

अमृतसर। गुरु नानक देव जी का 555वां प्रकाश पर्व पूरे विश्व में धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस मौके पर अमृतसर स्थित गोल्डन टेंपल और पाकिस्तान के ननकाना साहिब को खूबसूरती से सजाया गया है। इन स्थलों पर श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है, जहां 3 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के गोल्डन टेंपल और 1 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के ननकाना साहिब में माथा टेकने की बात कही जा रही है। शुक्रवार की सुबह पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, अभिनेता करमजीत अनमोल के साथ अमृतसर पहुंचे और गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर माथा टेका। सीएम मान ने कहा कि वे अमृतसर में थे, इसलिए उन्होंने छठी पातशाही गुरुद्वारा साहिब में माथा टेका। उन्होंने संगत से कहा कि गोल्डन टेंपल में भीड़ को ध्यान में रखते हुए उन्होंने वहां जाने का निर्णय नहीं लिया। इस बार गोल्डन टेंपल में विशेष सजावट की गई। रात को गोल्डन टेंपल में आतिशबाजी का आयोजन होगा। प्रदूषण को ध्यान में रखकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने विशेष प्रकार के पटाखे चलाने का निर्णय लिया है, जिससे कम धुआं और अधिक रंगीन रोशनी निकल सके। इसके साथ ही, गोल्डन टेंपल में 1 लाख से अधिक घी के दिए भी जलाए जाएंगे। वहीं पाकिस्तान स्थित ननकाना साहिब यात्रा में इस साल 2,244 श्रद्धालुओं के पासपोर्ट पाकिस्तान वीजा के लिए भेज गए थे, इसमें से 763 श्रद्धालुओं को वीजा मिल सका, जबकि 1481 वीजा आवेदन रिजेक्ट हो गए। करीब 3,000 श्रद्धालु इस साल पाकिस्तान के विभिन्न गुरुद्वारों, जैसे ननकाना साहिब, के दर्शन के लिए गए हैं। ये जत्थे 23 नवंबर तक वापस लौटने की उम्मीद है।

फारूक अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर की स्थिति पर जताई चिंता

- स्थानीय विकास की आवश्यकता जताई

श्रीनगर। नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने हाल ही में जम्मू-कश्मीर में बढ़ रही समस्याओं और विकास के मुद्दों पर चर्चा की। उनका कहना था कि राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में बर्बादी की चिंता है, जिससे अस्पतालों से लेकर स्कूलों तक प्रभावित हो रहा है। उन्होंने उज्जवल किया कि कई संस्थानों में कार्यक्षमता की कमी है और साफ पानी की समस्या भी गंभीर हो गई है, जिसके कारण स्वास्थ्य समस्याएँ दिखाई दे रही हैं। वे एक गांव की उदाहरण में जोंडिस के बढ़ते मामले को उठाते हुए बताए कि साफ पानी की कमी से बीमारी फैल रही है। फारूक अब्दुल्ला ने सरकार से इन मुद्दों का समाधान तेजी से करने की मांग की और राज्य के विकास के लिए कदम उठाने की भी पुनरावृत्ति दी। उन्होंने उमर अब्दुल्ला की संबोधन से उनकी गतिविधियों पर गृह मंत्री और अन्य अधिकारी के साथ चर्चा करने की योजना बताई ताकि जम्मू-कश्मीर में सुधार किया जा सके और स्थानीय लोगों को बेहतर जीने के अवसर मिलें। उन्होंने स्थानीय मजदूरों को रोजगार के लिए प्रोत्साहित किया और पूछा कि बाहरी ठेकेदारों को क्यों प्राथमिकता दी जाती है जबकि स्थानीय लोग समर्थ हैं। उनका मानना था कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन के माध्यम से ही क्षेत्र में विकास की संभावना है। उन्होंने बटोत को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की भी बात की। बटोत की प्राकृतिक सुंदरता को पर्यटन के लिए उपयोग में लाने की चर्चा की गई और उन्होंने इसे उन्नति देने के लिए प्रेरित किया। इसे एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाने का उद्देश्य रखा गया है ताकि यहाँ के पर्यटक बटोत की सुंदरता का आनंद ले सकें और इस से क्षेत्र में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिल सके।

शराबबंदी कानून शराब और अन्य अवैध सामानों की तस्करी को दे रहा बढ़ावा

-पटना हाईकोर्ट ने की टिप्पणी, पुलिस इंस्पेक्टर का डिमोशन आदेश को किया रद्द

पटना। पटना हाईकोर्ट ने एक पुलिस इंस्पेक्टर के खिलाफ जारी डिमोशन आदेश को रद्द करते हुए बिहार के शराबबंदी कानून पर गंभीर टिप्पणियां की हैं। कोर्ट ने कहा कि शराबबंदी कानून राज्य में शराब और अन्य अवैध सामानों की तस्करी को बढ़ावा दे रहा है। कोर्ट ने साफ कहा कि बिहार प्रोहिबिशन एंड एक्साइज एक्ट, 2016 को राज्य सरकार ने नागरिकों के जीवन स्तर और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए लागू किया था, लेकिन यह कानून गलत दिशा में चला गया है। न्यायमूर्ति पूर्णेंदु सिंह द्वारा 29 अक्टूबर को सुनाया गया यह फैसला 13 नवंबर को हाईकोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड किया है। यह फैसला मुकेश कुमार पासवान द्वारा दायर याचिका के जवाब में आया, जिन्होंने अपनी निलंबन और डिमोशन की सजा को चुनौती दी थी। मुकेश पासवान जो पटना बाईपास पुलिस स्टेशन में स्टेशन हाउस ऑफिसर के रूप में कार्यरत थे, उन पर आरोप था कि उनके क्षेत्राधिकार में विदेशी शराब की तस्करी हुई, जिसके कारण उन्हें सजा दी गई थी।

गलतबयानी या झूठे दावों की हेट स्पीच से तुलना नहीं की जा सकती

-सुप्रीम कोर्ट ने नेताओं द्वारा भड़काऊ बयान देने पर रोक लगाने की याचिका खारिज की

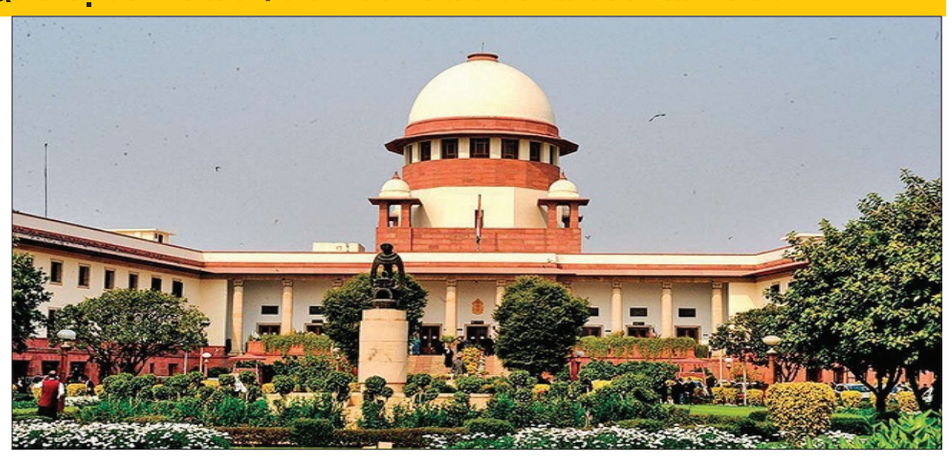

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने नेताओं द्वारा भड़काऊ भाषण देने पर रोकने लगाने के लिए गाइडलाइंस जारी करने की गुहार वाली जनहित याचिका को खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा कि गलतबयानी या झूठे दावों को हेट स्पीच से तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि दोनों में फर्क है। कोर्ट ने याचिकाकर्ता से कहा कि वह यह समझें कि हेट स्पीच क्या होती है। कोर्ट ने यह भी कहा कि याचिका में हेट स्पीच को गलत तरीके से पेश किया गया है। अगर किसी को कोई शिकायत है तो वह इसे कानून के मुताबिक उठाए।

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की पीठ ने जनहित याचिका पर सुनवाई से इनकार करते हुए कहा कि भड़काऊ भाषण और गलतबयानी के बीच अंतर है। पीठ ने याचिकाकर्ता हिंदू सेना समिति के वकील से यह भी कहा कि शीर्ष अदालत इस मामले में कोई नोटिस जारी करने को इच्छुक नहीं है। पीठ ने कहा कि वह इस याचिका पर विचार नहीं करना चाहती, जो कथित बयानों से संबंधित है। कोर्ट ने आगे कहा कि अगर याचिकाकर्ता को कोई शिकायत है, तो वह इसे संबंधित कानूनी प्रक्रिया के तहत उठाकर समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि वह मामले के गुण-दोष पर कोई टिप्पणी नहीं कर रही है। याचिकाकर्ता ने कोर्ट से भड़काऊ भाषणों को रोकने के लिए दिशानिर्देश तय करने और राष्ट्र की संप्रभुता और सार्वजनिक व्यवस्था को खतरे में डालने वाले बयानों पर दंडात्मक कार्रवाई का निर्देश देने की मांग की थी। याचिकाकर्ता के वकील ने तर्क दिया था कि राजनीतिक नेताओं के बयान अक्सर उकसावे वाले होते हैं, जो सार्वजनिक अशांति पैदा कर सकते हैं।

कार्तिक पूर्णिमा पर काशी के 80 घाटों पर श्रद्धालुओं का जनसैलाब, अयोध्या में दर्शन के लिए भक्तों की भीड़

वाराणसी। यूपी में कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा नदी के घाटों पर स्नान के लिए भीड़ उमड़ी है। काशी में सुबह 4 बजे से ही 80 घाटों पर श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा है। बिहार, झारखंड और मध्य प्रदेश सहित 10 राज्यों के लोग स्नान करने पहुंचे हैं। विदेशी पर्यटक स्नान को कैमरे में कैद कर रहे। सुबह 7 बजे तक 1 लाख से अधिक श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। हापुड़ के गढ़ मुक्तेश्वर मेले में पहुंचे दिव्यांग को मेला इंचार्ज इंस्पेक्टर महेंद्र सिंह पीठ पर लादकर गंगा किनारे तक ले गए और स्नान करवाया। उनका वीडियो भी सामने आया है। वहीं अयोध्या में रामलला के दर्शन के लिए भक्तों की कतार लगी हुई है। यहां लोग सरयू स्नान कर रहे हैं। अयोध्या में ड्रोन से निगरानी की जा रही है। प्रयागराज में भी संगम पर गंगा स्नान के लिए भीड़ लगी हुई है। यहां सुबह से लाखों श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। वाराणसी के सभी घाटों पर उत्साह का माहौल है। देव दीपावली पर शिव की नगरी काशी 25 लाख दीयों से जगमग होगी। देश-विदेश से 15 लाख श्रद्धालु जुटे हैं। कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर अयोध्या के सरयू घाट पर भक्तों की भीड़ उमड़ी। लाखों श्रद्धालुओं ने स्नान के बाद रामलला के दर्शन किए। दान-पुण्य करने के बाद अपने घरों को रवाना हुए। सुरक्षा व्यवस्था के लिए बड़ी संख्या में पुलिस के जवान तैनात किए गए हैं। ड्रोन से निगरानी की जा रही है।

पीएम मोदी की रैली में भीड़ कम, संजय राउत का तंज... जनता अब ऊब चुकी

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राउत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शिवाजी पार्क में दिए गए संबोधन पर तीखा हमला किया। राज्यसभा सांसद राउत ने कहा कि उन्हें यह जानकर बहुत दुख हुआ कि प्रधानमंत्री की रैली में अपेक्षित संख्या में लोग नहीं आए, जो साबित करता है कि अब लोग उनका भाषण सुनने में रुचि नहीं रखते। राउत ने आरोप लगाया कि महाराष्ट्र की जनता अब प्रधानमंत्री मोदी से ऊब चुकी है।

राउत ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के साथ मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी बैठे थे, लेकिन रैली में उनकी मौजूदगी के बावजूद कोई नहीं आया, यह साफ करता है कि अब लोग शिंदे को भी सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। राउत ने भाजपा पर आरोप लगाकर कहा कि बीजेपी पार्टी ने मुंबई को लूटा है, और इसकारण लोगों में भाजपा और मोदी के प्रति नाराजगी है। उन्होंने दावा किया कि आगामी चुनाव में साफ होगा कि महाराष्ट्र में किस पार्टी का दबदबा रहेगा।

प्रधानमंत्री मोदी के बयान पर भी राउत ने निशाना साधा, बयान में पीएम मोदी ने उद्धव ठाकरे की पार्टी को कांग्रेस के रिमोट कंट्रोल वाली पार्टी बताया था। राउत ने पलटवार कर कहा कि शिवसेना को तोड़कर जो नई शिवसेना बनाई गई है, उसका रिमोट कंट्रोल भाजपा के पास है। उन्होंने कहा कि शिवसेना (यूबीटी) का रिमोट कंट्रोल कभी भी भाजपा को नहीं दिया जाएगा, और इससे प्रधानमंत्री मोदी नाराज हैं। इसके अलावा, राउत ने मुख्यमंत्री शिंदे पर भी कटाक्ष किया। उन्होंने दावा किया कि आगामी महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महायुति को हार का सामना करना पड़ेगा, और महाविकास अघाड़ी की सरकार राज्य में बनेगी। राउत ने कहा कि शिंदे न मुख्यमंत्री बनने वाले हैं, न ही नेता प्रतिपक्ष।

सीएम शिंदे ने पूर्व की एमवीए सरकार पर लगाया आरोप

उद्धव ठाकरे ने बालासाहेब की विचारधारा से विश्वासघात किया, 2019 में मिले जनादेश का अपमान किया

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे की अगुवाई वाली पिछली महाविकास आघाड़ी (एमवीए) सरकार पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। सीएम शिंदे ने आरोप लगाया कि उद्धव सरकार ने राज्य की प्रमुख परियोजनाओं को रोक दिया था, इसमें अटल सेतु, कोस्टल रोड, मेट्रो, और नागपुर-मुंबई एक्सप्रेसवे जैसी महत्वपूर्ण योजनाएं शामिल थीं। शिंदे ने कहा कि उनकी सरकार ने इन परियोजनाओं में आई बाधाओं को दूर कर राज्य में विकास की गति को फिर से शुरू किया।

शिंदे ने उद्धव पर हिंदु नेता बालासाहेब ठाकरे की विचारधारा से विश्वासघात करने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा, उद्धव ने बालासाहेब की विचारधारा को छोड़ कर भाजपा से विश्वासघात किया। जो जनादेश शिवसेना-भाजपा गठबंधन को मिला था, उस जनादेश का उद्धव ठाकरे ने अपमान किया। मराठा आरक्षण के मुद्दे पर शिंदे ने अपनी महायुति सरकार का बचाव करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने मराठा समुदाय को 10 प्रतिशत आरक्षण दिया, जो पूर्व में नहीं मिला था। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछली सरकारों ने मराठा समुदाय का इस्तेमाल किया, लेकिन उनके वास्तविक अधिकारों का हनन किया गया। शिंदे ने कहा, हमारी महायुति सरकार ने मराठा समुदाय को वहां दिया, जो पहले दिया जाना चाहिए था और इस हाई कोर्ट में भी चुनौती दी है।

मुख्यमंत्री शिंदे ने अपनी सरकार पर राज्य एजेंसियों के दुरुपयोग के आरोपों का जवाब देकर कहा कि पूर्व एमवीए सरकार ने राजनीतिक विरोधियों को निशाना बनाया था। उन्होंने कहा, जब लोग हनुमान चालीसा का पाठ करते थे, तब उन्हें गिरफ्तार किया जाता था। इसमें महिलाएं और पत्रकार भी शामिल थे। क्या हमने किसी को गलत तरीके से जेल में डाला है? शिंदे ने स्पष्ट किया कि उनकी सरकार ने किसी भी विरोधी को राजनीतिक कारणों से गिरफ्तार नहीं किया है और न ही किसी प्रकार की बदले की राजनीति की है।

यूपी लोक सेवा आयोग ने मांगी मांग... फिर भी आंदोलन क्यों कर रहे छात्र

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हस्तक्षेप के बाद, यूपी लोक सेवा आयोग ने पीसीएस 2024 की प्रारंभिक परीक्षा को एक दिन और एक शिफ्ट में करने का फैसला किया है, इससे अभ्यर्थियों की मांग मान ली गई है। लोकसेवा आयोग ने साफ किया कि अब पीसीएस भर्ती परीक्षा में नॉर्मलाइजेशन लागू नहीं होगा। हालांकि, समीक्षा अधिकारी और सहायक समीक्षा अधिकारी 2023 की प्रारंभिक परीक्षा को स्थगित किया गया है। इसके अलावा, आयोग ने परीक्षा पैटर्न तय करने के लिए एक समिति गठित की है।

इस फैसले के बावजूद, प्रतियोगी छात्रों का विरोध शुक्रवार को पांचवें दिन भी जारी है। छात्रों का कहना है कि आयोग ने एक भर्ती परीक्षा की मांग पूरी की है, जबकि दूसरी की मांग अभी अधूरी है। आंदोलन कर रहे छात्रों ने कहा कि जब तक दोनों भर्ती परीक्षाओं के लिए उनकी सभी मांगें पूरी नहीं होती और आयोग द्वारा आधिकारिक नोटिफिकेशन जारी नहीं किया जाता, वे अपना विरोध जारी रखने वाले है। प्रतियोगी छात्रों ने 4 दिनों से अधिक समय से यूपी लोक सेवा आयोग की दो बड़ी भर्तियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया है। छात्र-छात्राएं पोस्टर-बैनर के साथ, बोतलें, थालियां और ड्रम पीटते हुए लगातार नारेबाजी कर रहे हैं। उनकी मुख्य मांग यह है कि परीक्षा एक दिन और एक शिफ्ट में आयोजित की जाए और नॉर्मलाइजेशन का फार्मूला लागू न किया जाए।

सुनील जाखड़ ने आखिरकार बता दिया क्यों दिया पंजाब प्रदेश अध्यक्ष पद से इस्तीफा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के पूर्व बीजेपी अध्यक्ष सुनील जाखड़ ने हाल ही में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के अपने फैसले की वजह साफ कर दी है। उन्होंने कांग्रेस और आम आदमी पार्टी (आप) सरकारों पर राज्य के मुद्दों को हल करने में नाकाम रहने का आरोप लगाकर कहा कि बीजेपी पंजाब को बर्बाद नहीं होने देगी।

जाखड़ ने खुलासा किया कि उन्होंने आम चुनावों में पार्टी की हार की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और इस कारण प्रदेश अध्यक्ष का पद छोड़ा। जाखड़ ने कहा कि हालांकि बीजेपी को पंजाब में 18.3 प्रतिशत वोट शेयर मिला, लेकिन पार्टी एक भी सीट जीतने में नाकाम रही। यह स्थिति उन्हें व्यक्तिगत रूप से दुखी कर रही थी और इसलिए उन्होंने पद से इस्तीफा दिया।

उन्होंने स्पष्ट किया कि वे कांग्रेस में कभी लौटने का विचार नहीं रखते। जाखड़ ने कांग्रेस पार्टी पर कड़ा हमला करते हुए कहा कि राहुल गांधी पार्टी पर कोई नियंत्रण नहीं रखते क्योंकि कांग्रेस कई गुटों में बंट चुकी है। उन्होंने आरोप लगाया कि पंजाब के कई प्रमुख कांग्रेस नेता, जैसे चरणजीत चन्नी और अंबिका सोनी, पार्टी में गहरे मतभेदों का कारण बने हुए है। जाखड़ ने कहा कि उन्हें गहरा आघात तब हुआ जब उन्हें यह बताया गया कि वह मुख्यमंत्री नहीं बन सकते क्योंकि वे हिंदू हैं, और इसके बाद उन्हें पार्टी से बिना नोटिस के हटा दिया गया।

जाखड़ ने कहा, 50 साल बाद अगर हाई कमांड मुझसे फोन पर भी बात नहीं कर सकता, तब कम से कम यह पूछे कि क्या हो रहा है? इसी कारण उन्होंने पंजाब को पहचान की राजनीति से बचाने के उद्देश्य से बीजेपी में शामिल हुए। हालांकि, जाखड़ ने स्वीकार किया कि बीजेपी में उनकी कोशिशें पूरी तरह से सफल नहीं हुई।

जाखड़ ने माना कि बीजेपी शायद पंजाब की राजनीतिक संवेदनाओं को पूरी तरह से समझ नहीं पाई। उन्होंने कहा कि पंजाब की एक अलग मानसिकता और पहचान है, इस मानसिकता को समझना जरूरी था। जाखड़ ने पंजाब की विशेष

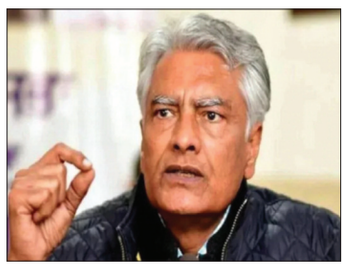

सांस्कृतिक और सामाजिक धारा की ओर इशारा करते हुए बताया कि पंजाबी जनता की सोच अलग होती है और इसका चुनावी परिणामों पर गहरा असर पड़ा। जाखड़ का इस्तीफा और उनकी टिप्पणी दिखाती हैं कि पंजाब में बीजेपी के लिए स्थिति चुनौतीपूर्ण है। पार्टी को राज्य के विशेष राजनीतिक, सांस्कृतिक और पहचान से जुड़ी संवेदनाओं को समझने की जरूरत है, साथ ही कांग्रेस और आप सरकारों की नीतियों से निपटने के लिए एक स्पष्ट रणनीति बनाने की आवश्यकता है।

भाजपा सांसद की दावत में बकरे की बोटी को लेकर हंगामा

--व्यवस्था थी 200 की और पहुंच गए हजार

मिर्जापुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में भारतीय जनता पार्टी के सांसद विनोद बिंद के कार्यालय पर आयोजित मीट पार्टी में बकरे की बोटी की कमी को लेकर जमकर हंगामा हुआ। मारपीट भी हुई और लोग घायल भी हुए, जिसे लेकर अब राजनीतिक हल्कों में इसकी चर्चा आम हो गई है।

जानकारी अनुसार मझवां के पूर्व विधायक और भदोही के मौजूदा सांसद विनोद बिंद ने अपने कार्यालय पर एक पार्टी का आयोजन किया था। इस पार्टी में महज 200 लोगों के भोजन का इंतजाम किया गया था, लेकिन करीब एक हजार लोग यहां पहुंच गए। इसके चलते बकरे की बोटी की कमी हो गई। इस पर आयोजकों ने ग्रेवी (मीट रस) परोसनी शुरू कर दी, जो कुछ लोगों को पसंद नहीं आई और इस पर हंगामा मच गया।

बताया जाता है कि हंगामे की शुरुआत एक युवक ने की, जिसे बोटी की जगह ग्रेवी दी गई थी। इस पर जब उसने आपत्ति जताई, तो भोजन परोस रहे युवक ने उसे तमीज से बात करने को कहा। गुस्साए युवक ने उसे थप्पड़ मार दिया, जिसके बाद दोनों पक्षों के लोग आपस में भिड़ गए। मारपीट के दौरान मौके पर रखे बर्तन और बाल्टियों का भी इस्तेमाल किया गया, जिससे कई लोग घायल हो गए। कुछ लोगों के सिर फटने और हाथ पर गहरी चोट लगने की खबर है। इस दौरान, भोजन कर रहे लोगों में भगदड़ मच गई।

घटना को लेकर सांसद विनोद बिंद के प्रतिनिधि उमा बिंद ने कहा कि यह सब विपक्ष की साजिश का हिस्सा था। उन्होंने आरोप लगाया कि कई ऐसे लोग, जिन्हें न्यौता नहीं दिया गया था, शराब पीकर कार्यक्रम में पहुंचे और मारपीट शुरू कर दी। बहरहाल पार्टी में बोटी प्रकरण की चर्चा अब राजनीतिक गलियारे से सोशल मीडिया पर जमकर हो रही है।

देश के कई राज्यों में ठंड ने दी दस्तक, दिल्ली-यूपी में कोहरे के साथ प्रदूषण भी बढ़ा

-मौसम विभाग ने पहाड़ी इलाकों में बारिश और बर्फबारी का जारी किया अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में अब धीरे-धीरे ठंड का असर बढ़ने लगा है और ठंड ने कई राज्यों में दस्तक दे दी है। उत्तर भारत में सुबह और शाम को घना कोहरा छाने लगा है। मौसम विभाग ने दिल्ली-एनसीआर में कोहरे को लेकर येलो अलर्ट जारी किया है। पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी शुरू हो गई है। ठंडी हवाओं और कोहरे के चलते सर्दी बढ़ गई है और लोग स्वेटर और जाकेट पहने नजर आने लगे हैं। इसके साथ ही दिल्ली और आसपास के इलाकों में प्रदूषण भी गंभीर स्तर पर पहुंच गया है।

दिल्ली में पिछले दो-तीन दिनों से घना कोहरा देखने को मिला। शुक्रवार सुबह कोहरे का असर दिखा। आईएमडी ने येलो अलर्ट जारी किया है और कहा कि सुबह के समय कुछ स्थानों पर घना कोहरा रहेगा। इसके बाद हवाओं की गति बढ़ेगी, जो दोपहर में 12 किमी प्रति घंटे तक पहुंच जाएगी। दिल्ली का तापमान 29.4 डिग्री सेल्सियस के आसपास दर्ज किया गया है।

उत्तराखंड में पहाड़ों पर बर्फबारी शुरू हो गई है। मौसम विभाग ने पहाड़ी क्षेत्रों में बारिश और बर्फबारी का अलर्ट जारी किया है। बर्फबारी से ठंड बढ़ेगी और दिन में गर्मी से राहत मिलेगी। उत्तराखंड में 16 नवंबर तक मौसम शुष्क रहेगा लेकिन 17 नवंबर से बारिश और बर्फबारी हो सकती है। प्रदूषण का असर भी पहाड़ी इलाकों में देखा जा रहा है, जहां एक्यूआई 250 तक पहुंच गया है।

वहीं यूपी के कई जिलों में ठंड महसूस होने लगी है। सुबह-शाम घना कोहरा और ठंडी हवाएं चल रही हैं। आईएमडी ने यूपी के कई जिलों में कोहरे का अलर्ट जारी किया है। मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, अलीगढ़, देवरिया, गोरखपुर, और कई अन्य जिलों में घना कोहरा छाने की संभावना है। इसके अलावा, यूपी के कुछ हिस्सों में प्रदूषण 400 तक पहुंच गया है, जिससे हवा जहरीली हो गई है।

अगर बिहार की बात करें तो यहां भी ठंड का असर बढ़ने वाला है। मौसम विभाग ने बिहार के कई इलाकों में कोहरे की चेतावनी जारी की है। पश्चिमी विक्षोभ के कारण पहाड़ी इलाकों और मैदानी क्षेत्रों में मौसम बदलने की संभावना है, जिससे पारा गिरने की उम्मीद है। बर्फबारी से बिहार में सर्दी का असर और बढ़ेगा।

उत्तर भारत के कई हिस्सों में ठंड और कोहरे के कारण दिनचर्या प्रभावित हो रही है। प्रदूषण का स्तर भी बढ़ रहा है, खासकर दिल्ली और उत्तरप्रदेश में। लोगों को सतर्क रहने और वायु प्रदूषण से बचने के लिए सलाह दी गई है।

संक्षिप्त समाचार

राष्ट्रपति चुनाव के नतीजों के बाद पहली बार मिले बाइडेन और ट्रंप, सत्ता सौंपने को लेकर हुई चर्चा

वाशिंगटन, एजेंसी। डोनाल्ड ट्रंप ने राष्ट्रपति पद के चुनाव में जीत दर्ज करने के बाद बुधवार को व्हाइट हाउस के ओवल कार्यालय में राष्ट्रपति जो बाइडेन से मुलाकात की और इस दौरान दोनों नेताओं ने अमेरिकी परंपरा के तहत सत्ता के सहज हस्तांतरण का संकल्प जताया। एक संक्षिप्त बैठक में दोनों नेताओं ने देश को अगले वर्ष 20 जनवरी को शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण का आश्वासन दिया। बाइडेन ट्रंप का स्वागत किया और दोनों नेताओं ने हाथ मिलाया। बाइडेन ने ट्रंप को उनकी जीत पर बधाई दी और कहा कि वह एक सहज सत्ता हस्तांतरण की आशा करते हैं। ट्रंप ने कहा, ''राजनीति कठिन है और कई मामलों में यह बहुत अच्छी दुनिया नहीं है, लेकिन आज यह एक अच्छी दुनिया है, और मैं इसकी बहुत सराहना करता हूं। यह बदलाव बहुत सहज है और यह जितना संभव हो उतना सहज होगा।

ईरान ने कई महिलाओं से रेप के दोषी को सरेआम फांसी पर लटकाया

तेहरान। पिछले दो दशक में कई महिलाओं से दुष्कर्म के दोषी एक ईरानी व्यक्ति को सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका दिया गया। ईरान के सरकारी मीडिया ने बुधवार को यह जानकारी दी। सरकारी अखबार ने बताया कि देश के उच्चतम न्यायालय ने अक्टूबर की शुरुआत में मोहम्मद अली सलामत की मौत की सजा बरकरार रखी थी जिसके बाद उसे फांसी दे दी गयी। उसे मंगलवार सुबह पश्चिमी हमेदान शहर में एक कब्रिस्तान में मौत की सजा दी गयी। करीब 200 महिलाओं ने दवा की दुकान और एक जिम चलाने वाले 43 वर्षीय सलामत पर दुष्कर्म का आरोप लगाया था। ऐसा आरोप था कि उसने पिछले 20 वर्ष में कई अपराधों को अंजाम दिया। ईरानी मीडिया में आयी खबरों में कहा गया है कि कई मामलों में सलामत ने महिलाओं को शादी का प्रस्ताव देने के बाद या प्रेम प्रसंग के दौरान उनका दुष्कर्म किया। उसने कुछ महिलाओं को कथित तौर पर गर्भपात की दवाएं भी दीं जो ईरान में गैरकानूनी है। उसे जनवरी में गिरफ्तार किया गया था। इसे ईरान में एक अपराधी द्वारा दुष्कर्म के सबसे अधिक अपराध को अंजाम देने का मामला बताया जा रहा है। उसकी गिरफ्तारी के बाद सैकड़ों लोग शहर के न्याय विभाग के सामने एकत्रित हो गए थे और उन्होंने सलामत को फांसी देने की मांग की थी। ईरान में दुष्कर्म और व्यभिचार के लिए मौत की सजा का प्रावधान है।

पाकिस्तान में अक्टूबर से दिसंबर तक शादी समारोहों पर लगेगा सख्त बैन

लाहौर , एजेंसी। पाकिस्तान में पंजाब प्रांत की सरकार ने स्मॉग पर नियंत्रण के लिए एक नई नीति लागू की है, जिसके तहत अब हर साल अक्टूबर से दिसंबर तक शादी समारोहों पर सख्त प्रतिबंध रहेगा। यह नीति लाहौर हाई कोर्ट में पेश की गई, जिसमें बताया गया कि शादी समारोहों से ट्रैफिक और ऊर्जा की खपत बढ़ती है, जो प्रदूषण में अहम भूमिका निभाती है। पंजाब के एडवोकेट जनरल ने कोर्ट को जानकारी दी कि इस बार पहली बार स्मॉग नियंत्रण के लिए विशेष बजट निर्धारित किया गया है। कोर्ट ने इन कदमों की सराहना करते हुए कहा कि यह प्रशासन पहले की सरकारों से अधिक प्रभावी तरीके से काम कर रहा है। इस नीति के तहत किसानों को पराली जलाने से रोकने के लिए सुपर सीडर मशीनें वितरित की जाएंगी, जो पराली जलाने की बजाय उसे खेत में नष्ट कर देती हैं, जिससे स्मॉग में कमी हो सके। कोर्ट ने सुझाव दिया कि शादी समारोहों में एक व्यंजन की व्यवस्था लागू की जाए और शादी के कार्यक्रमों की संख्या भी सीमित की जाए। कोर्ट ने वैश्विक उदाहरणों का हवाला देते हुए कहा कि कई देशों में शाम 5 बजे तक ही व्यवसायिक गतिविधियां बंद कर दी जाती हैं ताकि प्रदूषण कम हो, जबकि पाकिस्तान में देर रात तक बाजार खुले रहते हैं।लाहौर में प्रदूषण का स्तर खतरनाक स्थिति में पहुंच गया है, जिससे जनता को बाहर निकलने से बचने और मास्क तथा एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल करने की सलाह दी गई है। विशेषज्ञों ने पीएम 2.5 प्रदूषकों के कारण स्वास्थ्य पर पड़ रहे गंभीर असर को देखते हुए सरकार से दीर्घकालिक स्मॉग नियंत्रण रणनीति बनाने की मांग की है। बता दें कि गंभीर प्रदूषण से जूझ रही पाकिस्तानी पंजाब की राजधानी लाहौर की जहरीली धुंध अब अंतरिक्ष से भी दिखाई देने लगी है। जियो न्यूज के अनुसार, अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा द्वारा उपग्रह से ली गई तस्वीरों में यह स्थिति दिखाई दी है। पाकिस्तान में मुल्तान और इस्लामाबाद जैसे कई शहरों में धुंध छाई है। मुल्तान देश का सबसे प्रदूषित शहर बन गया जिससे प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए प्रयासरत अधिकारी भी असमंजस में पड़ गए।

ट्रंप ने नई टीम में भारत समर्थक मार्को रुबियो को चुना विदेश मंत्री

वाशिंगटन, एजेंसी। डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के बाद उनकी नई टीम में भारत के समर्थन में सक्रिय नेताओं को अहम जिम्मेदारियां देने की तैयारी है। खबरों के मुताबिक, ट्रंप ने फ्लोरिडा के सीनेटर मार्को रुबियो को विदेश मंत्री और कांग्रेस सदस्य माइक वॉल्ट्ज को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त करने का फैसला किया है। दोनों नेताओं को चीन के खिलाफ और भारत के पक्ष में मजबूत रुख रखने वाला माना जाता है, जिससे उम्मीद है कि ट्रंप प्रशासन में भारत-अमेरिका संबंध और प्रगाढ़ होंगे।

भारत के साथ गहरे संबंधों के समर्थक मार्को रुबियो : मार्को रुबियो, जो ट्रंप के विदेश मंत्री बनने जा रहे हैं, लंबे समय से भारत-अमेरिकी साझेदारी को समर्थन देते रहे हैं। पिछले साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वॉशिंगटन यात्रा से पहले, रुबियो ने एक बयान में कहा था कि हम वैश्विक इतिहास के एक नए दौर में हैं, जहां भारत और अमेरिका लोकतांत्रिक मूल्यों और साझे राष्ट्रीय हितों पर आधारित एक मजबूत गठबंधन बना सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि दोनों देशों के सुरक्षा और आर्थिक हित कई मुद्दों पर आपस में जुड़े हुए हैं, और इस गठजोड़ से वैश्विक मंच पर शक्ति संतुलन बनाए रखने में मदद मिलेगी। रुबियो का मानना है कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के साथ अमेरिका का मजबूत रिश्ता न केवल एशिया में, बल्कि पूरे विश्व में स्थिरता को बढ़ावा दे सकता है। उनके विदेश मंत्री बनने से चीन पर अमेरिका की रणनीतिक स्थिति और सख्त हो सकती है, क्योंकि रुबियो का रुख चीन के प्रति हमेशा कड़ा रहा है।

माइक वॉल्ट्ज-ट्रंप के कट्टर समर्थक माइक वॉल्ट्ज को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के तौर पर चुना गया है। वॉल्ट्ज, जो एक अनुभवी सैनिक और आर्मी नेशनल गार्ड से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं, ट्रंप के करीबी माने जाते हैं। वह भारत-अमेरिका संबंधों को बढ़ावा देने के लिए अमेरिकी कांग्रेस में कांग्रेसनल कॉकस के सह-अध्यक्ष भी रहे हैं। भारत के प्रति उनकी प्रतिबद्धता इस बात से जाहिर होती है कि उन्होंने कई मौकों पर दोनों देशों के बीच रक्षा और रणनीतिक साझेदारी को गहरा करने के लिए जोर दिया है।वॉल्ट्ज का मानना है कि भारत के साथ मजबूत रक्षा सहयोग, अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है, खासकर चीन की बढ़ती शक्ति को संतुलित करने के लिए। उनका कहना है कि भारत जैसे साथी देशों के साथ सुरक्षा सहयोग से क्षेत्रीय स्थिरता और अमेरिकी हितों की रक्षा में मदद मिलेगी। अमेरिका-भारत संबंधों में नई उम्मीदें फ्लोरिडा के सीनेटर रिक स्कॉट ने रुबियो की विदेश मंत्री पद पर नियुक्ति की पुष्टि की और उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि मार्को रुबियो का विदेश मंत्री बनना अमेरिका के लिए एक शानदार कदम है। वॉल्ट्ज की नियुक्ति से भारत के साथ सुरक्षा और रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ने की उम्मीद है। रुबियो और वॉल्ट्ज, दोनों के ट्रंप प्रशासन में प्रमुख पदों पर होने से अमेरिका-भारत संबंधों में गहरी मजबूती आने की उम्मीद की जा रही है। ट्रंप प्रशासन की इस नई रणनीतिक टीम से चीन के प्रति सख्त नीतियां और भारत-अमेरिका संबंधों में और मजबूती आने की संभावनाएं बढ़ गई हैं।

क्या ट्रंप बदलेंगे अमेरिका का संविधान ? तीसरा बार भी बनना चाहते हैं राष्ट्रपति

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक ऐसा बयान दिया है, जिससे अमेरिका में खलबली मच गई है। दूसरी बार राष्ट्रपति बनने वाले ट्रंप ने इशारों-इशारों में यह बात कहा है कि वो तीसरी बार भी राष्ट्रपति बनने के इच्छुक हैं। बुधवार को निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रतिनिधि सभा में चुनाव जीतकर आए अपनी रिपब्लिकन पार्टी के सांसदों से भी मिले। उन्होंने सदन में पार्टी की स्थिति पर संतोष जताया। कहा, जीत हमेशा अच्छी होती है। इस दौरान ट्रंप ने राष्ट्रपति पद के तीसरे कार्यकाल में भी कार्य करने की इच्छा जताई। प्रतिनिधि सभा के लिए चुने गए रिपब्लिकन नेताओं के सामने अपने भाषण के दौरान कहा, मुझे संदेह है कि मैं तब तक दोबारा चुनाव नहीं लड़ूंगा, जब तक आप यह नहीं कहते, वह अच्छे हैं, हमें कुछ और सोचना है। अमेरिका में वर्तमान संवैधानिक व्यवस्था में कोई भी व्यक्ति दो कार्यकाल से ज्यादा राष्ट्रपति पद पर नहीं रह सकता है। इस संवैधानिक व्यवस्था में बदलाव तभी हो सकता है जब अमेरिका के सभी राज्यों की असेंबली तीन चौथाई बहुमत से प्रस्ताव पारित करें। गौरतलब है कि राष्ट्रपति का कार्यकाल बढ़ाने के लिए संविधान में संशोधन की यह प्रक्रिया करीब सात वर्ष लंबी है। फ्रैंकलिन डी रुजवेल्ट 1933 में राष्ट्रपति बनने के बाद 1945 में मृत्यु होने तक राष्ट्रपति रहे थे। वह अमेरिका के दो कार्यकाल से ज्यादा राष्ट्रपति रहने वाले इकलौते व्यक्ति हैं।

ट्रंप रचेंगे इतिहास : राष्ट्रपति पद की शपथ लेने वाले अमेरिका के इतिहास के सबसे बुजुर्ग राष्ट्रपति होंगे। दरअसल, 20 जनवरी को जब ट्रंप राष्ट्रपति पद की शपथ लेंगे तो उनकी उम्र 78 साल 221 दिन होगी।

ट्रंप ने बाइडन से की मुलाकात : बता दें कि बुधवार को व्हाइट हाउस में मुलाकात हुई। मुलाकात में बाइडन ने पूर्व वादे के अनुसार जनवरी में सामान्य तरीके से सत्ता के हस्तांतरण का वचन दिया। ओवल हाउस में हुई दोनों नेताओं की मुलाकात सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई।

एक्सपर्ट्स की चेतावनी- टॉयलेट सीट पर 10 मिनट से ज्यादा बैठना हो सकता खतरनाक

लंदन, एजेंसी। आजकल कई लोग टॉयलेट में जाकर मोबाइल चलाने या अखबार पढ़ने में इतना मशगूल हो जाते हैं कि वक्त का ध्यान ही नहीं रहता। लेकिन क्या आप जानते हैं कि टॉयलेट सीट पर ज्यादा देर तक बैठना सेहत के लिए खतरनाक हो सकता है? एक्सपर्ट्स के अनुसार, टॉयलेट सीट पर 10 मिनट से ज्यादा बैठने से कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। टेक्सास साउथवेस्टर्न मेडिकल सेंटर के कोलोरेक्टल सर्जन डॉ. लाई जू का कहना है कि लंबे समय तक टॉयलेट सीट पर बैठने से बवासीर और कमजोर पेल्विक मसल्स का खतरा बढ़ता है। उनके अनुसार, टॉयलेट में अधिक समय बिताने वाले लोग अक्सर इन्हीं समस्याओं के कारण डॉक्टर के पास पहुंचते हैं। स्टोनी ब्रुक मेडिसिन के असिस्टेंट प्रोफेसर और इंफ्लेमेटरी बाउल डिजीज सेंटर की डायरेक्टर डॉ. फराह मोंजूर ने बताया कि टॉयलेट में 5 से 10 मिनट से ज्यादा समय बिताना नुकसानदायक हो सकता है। लंबे समय तक बैठे रहने से पेल्विक एरिया पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है, जिससे एनल मसल्स कमजोर हो सकती हैं और पेल्विक फ्लोर डिसफंक्शन जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। टॉयलेट सीट की ओवल शेप बट को संकुचित करती है और शरीर के निचले हिस्से को नीचे की ओर खींचती है।

ट्रंप का एक और शॉकिंग फैसला, विवादास्पद मैट गेट्ज़ को चुना अटॉर्नी जनरल, रिपब्लिकन नेताओं ने जताई नाराजगी

वाशिंगटन, एजेंसी। डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी अटॉर्नी जनरल पद के लिए फ्लोरिडा के कांग्रेस सदस्य मैट गेट्ज़ को नामांकित किया है, जिससे वॉशिंगटन डीसी में हलचल मच गई है। ट्रंप की इस नियुक्ति ने सभी को चौंका दिया है और यह स्पष्ट संदेश देती है कि ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में सत्ता के परंपरागत ढांचे को चुनौती देने का इरादा रखते हैं। मैट गेट्ज़ अपने विवादास्पद बयानों और आक्रामक रवैये के लिए जाने जाते हैं। 2018 में उन्होंने स्टेट ऑफ द यूनियन में एक विवादास्पद शख्स को बुलाया था और बंदूक नियंत्रण पर अपनी राय से असहमत लोगों को सुनवाई से बाहर करने की कोशिश की थी। उनकी तीखी शैली ने उन्हें कई दुश्मन बना दिए हैं, जिनमें कुछ रिपब्लिकन भी शामिल हैं। ट्रंप की ये नियुक्ति यह दर्शाती है कि उनका अगला प्रशासन उनके प्रति निष्ठावान लोगों से भरा होगा। कई रिपब्लिकन नेताओं ने गेट्ज़ की नियुक्ति पर नाराजगी जताई है। अलास्का की सीनेटर लिसा मर्कोवस्की ने कहा कि उन्हें यह नामांकन अप्रत्याशित लगा। वहीं हाउस स्पीकर माइक जॉनसन, जो ट्रंप के समर्थक हैं, ने गेट्ज़ को योग्य वकील बताया और कहा कि वे न्याय विभाग में सुधार ला सकते हैं। ट्रंप ने सोशल मीडिया पर कहा कि गेट्ज़ न्याय विभाग में फैले कथित भ्रष्टाचार को खत्म करेंगे और इसे असली मकसद पर लौटाएंगे। ट्रंप के खिलाफ की गई जांचों का बदला लेने के अपने चुनावी वादे को पूरा करने के लिए गेट्ज़ को मुख्य भूमिका दी जा रही है।

हालांकि, गेट्ज़ खुद भी न्याय विभाग की जांच के दायरे में रहे हैं। पिछले साल उन पर बहामास की यात्रा में यौन तस्करी कानूनों का उल्लंघन करने के आरोप थे, लेकिन विभाग ने उन्हें आरोपों से मुक्त कर दिया। हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स की नैतिकता समिति उनके खिलाफ अलग-अलग आरोपों की जांच कर रही थी, लेकिन उनके सांसद पद से इस्तीफे के बाद जांच बंद हो गई है।

गेट्ज़ ने इन सभी आरोपों का खंडन किया है। गेट्ज़ के पास कानून की डिग्री है और उन्होंने कांग्रेस में आठ साल बिताए हैं, लेकिन उनके पास किसी वरिष्ठ सरकारी अधिकारी की तरह व्यापक अनुभव नहीं है। सीनेट उनके नामांकन की पुष्टि करेगी, और वहां उन्होंने कई नेताओं को नाराज किया हुआ है। अगर चार रिपब्लिकन उनके खिलाफ मतदान करते हैं और डेमोक्रेट्स एकजुट रहते हैं, तो उनका नामांकन खारिज हो सकता है। गेट्ज़ का कहना है कि वे हमेशा अटॉर्नी जनरल बनना चाहते थे, भले ही इसे असंभव मानते थे।

ट्रंप ने फिर चौंकाया ! पहली हिंदू तुलसी गबार्ड को नेशनल इंटेलिजेंस डायरेक्टर बनाया

वाशिंगटन, एजेंसी। पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर अपनी टीम के चुनाव पर दुनिया को चौंका दिया है। उन्होंने पूर्व डेमोक्रेटिक सांसद तुलसी गबार्ड को नेशनल इंटेलिजेंस डायरेक्टर के पद के लिए नामांकित किया। गबार्ड, जिन्होंने 2020 में डेमोक्रेटिक पार्टी से राष्ट्रपति पद की दौड़ में हिस्सा लिया था, अब अपनी राजनीतिक विचारधारा बदल चुकी हैं और उनके करियर ने दोनों राजनीतिक पार्टियों से समर्थन पाया है। इस नए पद पर गबार्ड अमेरिका की 18 खुफिया एजेंसियों की देखरेख करेंगी। गबार्ड के इस महत्वपूर्ण खुफिया पद पर रहते हुए, ट्रंप की कैबिनेट संभवतः वर्तमान संघर्षों को कम करने और पारंपरिक नीतियों में बदलाव की ओर बढ़ सकती है। गबार्ड के विचार अमेरिका की पुरानी नीतियों पर पुनर्विचार को बढ़ावा दे सकते हैं और अमेरिकी विदेश नीति में एक नई दिशा ला सकते हैं।

ट्रंप ने की गबार्ड की तारीफ : ट्रंप ने गबार्ड की सराहना करते हुए कहा कि वह एक ऐसी नेता हैं, जिन्हें दोनों पार्टियों से

व्यापक समर्थन मिला है। उन्होंने कहा, तुलसी हमारे संविधानिक अधिकारों की रक्षा करेंगी और शांति के जरिए ताकत को बढ़ावा देंगी। तुलसी हम सभी को गर्व महसूस कराएंगी। ट्रंप का यह फैसला एक साहसिक कदम माना जा रहा है, खासकर जब उन्होंने आमतौर पर अपने विश्वासपात्रों को ही मुख्य पदों पर रखा है।

सेना में सेवा और कांग्रेस में पहली हिंदू सदस्य : गबार्ड ने 2012 में इतिहास रचते हुए अमेरिका की प्रतिनिधि सभा में हवाई की ओर से पहली हिंदू सदस्य बनने का गौरव हासिल किया था। वे एक पूर्व लेफ्टिनेंट कर्नल और कॉम्बैट वेटरन हैं, जो इस नई भूमिका में उनकी गहरी समझ और अनुभव को जोड़ते हैं। उनके नामांकन से यह संकेत मिलता है कि ट्रंप की विदेश नीति और खुफिया दृष्टिकोण में भी बदलाव देखने को मिल सकता है।

ट्रंप की अंतरराष्ट्रीय नीति को देंगे नई दिशा : गबार्ड ने बाइडन प्रशासन की विदेश नीति की खुलकर आलोचना की है और इसे परमाणु युद्ध के कगार पर बताया है। उन्होंने कहा कि ट्रंप का उद्देश्य वैश्विक तनाव को कम करना है, और इसी कारण उन्होंने उनका समर्थन किया है। उनका मानना है कि ट्रंप का सबसे पहला कार्य युद्ध की स्थिति से हमें पीछे ले जाना होगा। अमेरिकी विदेशी हस्तक्षेप की आलोचना- गबार्ड का पुराना रुख गबार्ड अमेरिकी विदेशी हस्तक्षेप की आलोचना करती रही हैं। उन्होंने बाइडेन के यूक्रेन को समर्थन और ओबामा प्रशासन के सीरिया में हस्तक्षेप की खुलकर निंदा की है।

रूस से युद्ध लड़ रहे यूक्रेन को अगले साल नहीं होगी दिक्कत ! जाते-जाते बाइडन करने जा रहे ऐसा इंतजाम

कीव , एजेंसी। डोनाल्ड ट्रंप की ओर से रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त कराने की योजना को देखते हुए दोनों देश अधिक से अधिक लाभ की स्थिति में रहने का प्रयास कर रही है। रूस जहां कु?र्स्क क्षेत्र से यूक्रेनी सेना को खदेड़ने का प्रयास कर रही है, वहीं यूक्रेन रूसी सेना को अपने क्षेत्र में बढ़ने से रोकने और कब्जे वाले क्षेत्रों से पीछे धकेलने का प्रयास कर रहा है। यूक्रेन के लिए बाइडन करने जा रहे इंतजाम इस बीच, जाते-जाते जो बाइडन यूक्रेन को युद्ध में अगले वर्ष दिक्कत न हो इसका इंतजाम करने जा रहे हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने कहा कि बाइडन यूक्रेन की मदद के लिए प्रतिबद्ध हैं, इसलिए वह यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि यूक्रेन अगले साल रूस के आक्रमण से लड़ सके। इसके लिए यथासंभव सहायता भेज रहे हैं, जिससे यूक्रेन रूसी सेनाओं को दूर रखने में सक्षम हो सके और संभावित हमले में मजबूत पकड़ बना सके। उन्होंने कहा कि बाइडन चाहते हैं कि जो भी मदद यूक्रेन को दिया जाना है, वह प्रत्येक डॉलर अब से 20 जनवरी के बीच उसे दे दिया जाए। ब्लिंकन ने ब्रसेल्स की यात्रा के दौरान कहा कि नाटो देशों को अपने प्रयासों को यह सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि यूक्रेन के पास 2025 में प्रभावी ढंग से लड़ने के लिए धन, युद्ध सामग्री और संगठित सेना हो और जरूरत पड़ने पर वह बेहतर स्थिति में शांति वार्ता करने

में सक्षम हो। ब्लिंकन ने विवरण दिए बिना कहा कि अमेरिका अपने द्वारा भेजे जा रहे नवीनतम उपकरणों के साथ अनुकूलन और समायोजन करेगा। इस बीच, रूस ने बुधवार को 73 दिनों में पहली बार यूक्रेन की राजधानी कीव पर मिसाइलों और ड्रोन के साथ हमला बोला। एक दिन पहले पेंटागन ने कहा था कि मास्को के युद्ध प्रयासों में मदद के लिए भेजे गए अधिकांश उत्तर कोरियाई सैनिक कुर्स्क सीमा क्षेत्र में यूक्रेनी सेना को रूसी धरती से खदेड़ने के लिए लड़ रहे हैं। रूस के हमले जारी यूक्रेन भी पूर्वी डोनेट्स्क में एक महीने से चल रहे रूसी हमले को रोकने के लिए दबाव बना रहा है। रूस ने बुधवार को यूक्रेन के आठ क्षेत्रों को निशाना बनाया। इस दौरान छह बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलें और 90 ड्रोन दागे गए। वायु रक्षा प्रणाली ने चार मिसाइलों और 37 ड्रोनों को मार गिराया। अन्य 47 ड्रोनों को इलेक्ट्रानिक जैमिंग द्वारा रोक दिया गया।

रिपब्लिकन ने ट्रंप के वफादार रिक स्कॉट को नकारा, जॉन थून को चुना अमेरिकी सीनेट का नेता

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी सीनेट में रिपब्लिकन पार्टी द्वारा दक्षिण डकोटा के सीनेटर जॉन थून को नया नेता चुनना एक महत्वपूर्ण राजनीतिक कदम माना जा रहा है, खासकर तब जब आने वाले राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन के लिए सीनेट की भूमिका और प्राथमिकताओं का निर्धारण हो रहा है। इस चुनाव में थून ने टेक्सास के अनुभवी सीनेटर जॉन कॉर्निन को हरा दिया, और फ्लोरिडा के सीनेटर रिक स्कॉट, जो ट्रंप के प्रमुख समर्थक माने जाते हैं, को भी पीछे छोड़ दिया। रिक स्कॉट, जो पूर्व फ्लोरिडा गवर्नर हैं और ट्रंप के प्रति अपनी निष्ठा के लिए जाने जाते हैं, को ट्रंप समर्थकों का पसंदीदा उम्मीदवार माना जा रहा था। उन्होंने ट्रंप के सभी प्रमुख नीतिगत एजेंडों को समर्थन देने का वादा किया था और उम्मीद जताई जा रही थी कि यदि वे नेता बनते हैं, तो ट्रंप का प्रभाव सीनेट में बढ़ जाएगा। हालांकि, ट्रंप ने स्कॉट की अलोकप्रियता को भांपते हुए उन्हें खुला समर्थन देने से बचा।

सीनेट का स्वतंत्र रुख : सीनेट, जो अपने स्वतंत्र और संरचनात्मक अधिकार को प्राथमिकता देती है, इस चुनाव में अपने पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखने की ओर झुकी नजर आई। जॉन थून को सीनेट का एक पारंपरिक रिपब्लिकन नेता माना जाता है, और वे पुराने नेता मिच मैककोनेल के करीबी हैं, जिनका लंबे समय से सीनेट पर गहरा प्रभाव रहा है। यह चुनाव इस बात का संकेत भी है कि रिपब्लिकन पार्टी के कई सदस्य ट्रंप के प्रभाव को सीनेट में सीमित रखना चाहते हैं और एक अधिक स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाना चाहते हैं। जॉन थून सीनेट में एक अनुभवी नेता हैं और वे रिपब्लिकन पार्टी के भीतर परंपरावादी विंग के

महत्वपूर्ण सदस्य माने जाते हैं। उनकी जीत से संकेत मिलता है कि पार्टी में अब भी परंपरावादी दृष्टिकोण का प्रभाव है और वे एक स्थिर नेतृत्व में विश्वास रखते हैं, जो अत्यधिक पक्षपातपूर्ण नीतियों से दूर रहे।

थून और कॉर्निन के खिलाफ ट्रंप के समर्थकों ने मजबूत अभियान चलाया। वे सीनेटरों पर व्यक्तिगत दबाव बना रहे थे ताकि ट्रंप समर्थित रिक स्कॉट को जीत मिल सके, लेकिन यह रणनीति उल्टी पड़ गई और कई सीनेटर इस दबाव से नाराज हुए।इस चुनाव का परिणाम दर्शाता है कि रिपब्लिकन पार्टी का एक बड़ा हिस्सा ट्रंप के अत्यधिक प्रभाव को संतुलित करना चाहता है। थून का नेतृत्व इस बात का संकेत हो सकता है कि पार्टी अगले कुछ वर्षों में किस प्रकार के फैसले लेगी और सीनेट में ट्रंप के प्रभाव को किस हद तक नियंत्रित रखा जाएगा।

स्वामी रामदेव सीनियर सेकेंडरी स्कूल बरवाला में लगायी आर्ट एंड क्राफ्ट विज्ञान प्रदर्शनी

ऐसी ऐसी प्रदर्शनी व प्रतियोगिताओं में भाग लेने से बढ़ता है आत्मविश्वास -- डॉक्टर सुभाष संदूजा

संस्कार उजाला

हरियाणा/ हिसार (गरिमा) : टोहाना मार्ग पर स्थित स्वामी रामदेव सीनियर सेकेंडरी स्कूल बरवाला के प्रांगण में बाल दिवस के उपलक्ष्य में आर्ट एंड क्राफ्ट विज्ञान प्रदर्शनी लगाई गई स्कूल के प्रिंसिपल विकास चोपड़ा ने बताया कि इस प्रदर्शन में विद्यार्थियों ने पर्यावरण बचाओ, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, मोबाइल फोन के दुष्प्रभाव, खेलों का महत्व, विज्ञान के लाभ और नशे से होने वाले दुष्परिणामों के अलग-अलग मॉडल बनाकर प्रदर्शित किए और अपनी अपनी कला व हुनर को प्रदर्शित किया` स्कूल के डायरेक्टर डॉक्टर सुभाष संदूजा, सत्या संदूजा, डॉक्टर विकास संदूजा व डॉक्टर अंजूम संदूजा ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया और विद्यार्थियों द्वारा कड़ी मेहनत व लगन से बनाए गए मॉडलों की सराहना की` स्कूल डायरेक्टर डॉक्टर सुभाष संदूजा ने अपने संबोधन में कहा कि बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ ऐसी-ऐसी प्रदर्शनी व प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिए` ऐसी प्रदर्शनी व प्रतियोगिताओं में भाग लेने से अंदर छिपी हुई प्रतिभा उभरकर सामने आती है और आत्मविश्वास बढ़ता है` उन्होंने विद्यार्थियों को बाल दिवस की बधाई दी इस दौरान स्कूल के अध्यापक अध्यापिकाओं को स्मृति चिन्ह प्रदान करके सम्मानित किया गया` इस अवसर पर डायरेक्टर अजय सोनी, प्रिंसिपल विकास चोपड़ा, वाइस प्रिंसिपल नीलम सरदाना, पूनम चोपड़ा, धीरज हंदुजा, कुणाल सैनी, तरुण ढींगडा, गीता पिलानी व दर्शन ढिल्लों आदि मौजूद रहे`

सड़क निर्माण में कोताही बरतने पर लोक निर्माण मंत्री रणबीर गंगवा ने एक्सईएन, एसडीओ व जेई को किया सस्पेंड

संस्कार उजाला

हरियाणा/हिसार (गरिमा) : हरियाणा के जन स्वास्थ्य एवं लोक निर्माण मंत्री रणबीर गंगवा ने शुक्रवार को धिकताना गांव से धांसू गांव की सड़क निर्माण में कोताही बरतने पर एक्सईएन रजनीश कुमार, एसडीओ दलबीर सिंह राठी व जेई सुरेश कुमार को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड करने के निर्देश दिए हैं। जनस्वास्थ्य एवं लोक निर्माण मंत्री रणबीर गंगवा ने शुक्रवार को धिकताना गांव से धांसू गांव की बनी नई सड़क(5.440 कि. मी.) का निरीक्षण करते हुए यह निर्देश दिए। कैबिनेट मंत्री ने एसई अजीत सिंह को सड़क के निर्माण में प्रयोग हुई सामग्री की जांच कराने तथा एजेंसी के खिलाफ अनुबंध के अनुसार सख़्त कार्यवाही के निर्देश दिये। लोक निर्माण मंत्री रणबीर गंगवा ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि प्रदेश में अच्छी क्वालिटी की सड़कों का निर्माण किया जाए। इन कामों को अच्छी क्वालिटी के साथ तय समय सीमा में पूरा किया जाए। कैबिनेट मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि टैक्सपेयर के पैसों का दुरुपयोग नहीं होने दिया जाएगा। निर्माण कार्यों की गुणवत्ता में किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा, माटी कला बोर्ड के चेयरमैन ईश्वर मालवाल व एसई अजीत सिंह उपस्थित रहे।

नालसा के नए कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत हुए न्यायाधीश भूषण रामकृष्ण गवई-इरम हसन

करनाल। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी इरम हसन ने बताया कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भूषण रामकृष्ण गवई को नालसा के नए कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया है। उन्होंने बताया कि महामहिम राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु द्वारा विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम 1987 की धारा की उप-धारा 2 के खंड बी द्वारा प्रदत्त शक्तियों के तहत यह नियुक्ति की गई है। यह 11 नवंबर 2024 से प्रभावी है। इससे पहले न्यायमूर्ति बीआर गवई माननीय सुप्रीम कोर्ट लीगल सर्विसेज कमेटी के अध्यक्ष थे। उन्होंने बताया कि कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई पूरे भारत में सभी नागरिकों, विशेष रूप से समाज के हाशिए पर रहने वाले और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लोगों को सुलभ और मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करने के नालसा के मिशन का नेतृत्व करेंगे। उनके नेतृत्व से अनुच्छेद 39-ए के संवैधानिक जनादेश को बनाए रखने के लिए नालसा की प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाने की उम्मीद है, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि वित्तीय या सामाजिक बाधाओं के कारण किसी भी नागरिक को न्याय से वंचित नहीं किया जाएगा।

राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने लोगों को जनजातीय गौरव दिवस पर दी शुभकामनाएं

चंडीगढ़- हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने आज जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर हरियाणा और पूरे देश के लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं दी।

श्री दत्तात्रेय ने कहा कि जनजातीय गौरव दिवस, जो प्रतिवर्ष श्रद्धेय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर मनाया जाता है, यह दिवस स्वतंत्रता संग्राम में भारत के आदिवासी समुदायों के अमूल्य योगदान और बलिदान की याद दिलाता है। जनजातीय समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, साहस और मनोबल की सराहना करते हुए श्री दत्तात्रेय ने कहा कि भारत की विविध परंपराओं और मान्यताओं को संरक्षित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राज्यपाल ने कहा कि जनजातीय गौरव दिवस हमारे आदिवासी नेताओं और समुदायों की बहादुरी और समर्पण का सम्मान करने का अवसर है, जिन्होंने हमारे देश के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को मजबूत करने का काम किया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर 15 नंवबर, 2024 से 15 नंवबर, 2025 तक वार्षिक समारोह का आयोजन करने का निर्णय लिया है, जो कि सराहनीय और जनजातीय समुदाय के लिए गौरव की बात है। 150वीं जयंती वर्ष के दौरान देशभर में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से आमजन को भगवान बिरसा मुंडा के उत्पीड़न व शोषण के खिलाफ प्रतिरोध व संघर्ष के जीवन को जानने का अवसर मिलेगा। दत्तात्रेय ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा सरकार आदिवासी समुदायों के कल्याण और उत्थान को बढ़ावा देने, सबका साथ-सबका विकास के दृष्टिकोण के अनुरूप समावेशी विकास और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने युवाओं से भगवान बिरसा मुंडा के आदर्शों से प्रेरणा लेने, राज्य और देश भर में सद्भाव, एकता और समृद्ध आदिवासी विरासत के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने का आग्रह किया।

गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर दीवान सजे, अटुट लंगर चला

करनाल। सतगुरु नानक प्रगट्या, मिटी धुंध जग चानन होया, कलतारण गुरु नानक आया, ज्यों कर सूरज निकलया तारे छपे अंधेर पोलावा .. गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व पर यह शबद गुरुद्वारों में गूंजायमान हो रहे थे। कथा वाचक अपनी वाणी व रागी ढाडी जत्थे अपने कीर्तन से गुरु की महिमा का जो बखान कर रहे थे उसे गुरु घर में पहुंची संगत आस्था के समंदर में गोते लगा रही थी। गुरुद्वारा डेरा कारसेवा में ऐसा ही नजारा था। जहां हजारों की तादाद में संगत माथा टेकने को उमड़ी। संगत ने जोड़ा घर, लंगर व बर्तन की सेवा की। डेरा कारसेवा मे पंथ प्रचारक जात्थेदार बाबा सुक्खा सिंह के मार्गदर्शन मे आयोजित किया गया। गुरुद्वारे में संगत माथा टेकने के लिए उमड़ी।डेरा कार सेवा के प्रमुख पंथ प्रचारक जात्थेदार सुक्खा सिंह ने गुरु नानक देव के प्रकाशोत्सव के अवसर पर सभी को गुरु नानक देव जी के प्रकाशोत्सव की शुभ कामनाएं दी।डेरा कार सेवा में सुबह से ही संगत माथा टेकने उमडऩे लगी थी। हालांकि, गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व पर यह सिलसिला पूरे साल भर चलने वाला ।

वहीं, लंगर में हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। यह सिलसिला देर रात तक चला। रात को भी गुरु घर में गुरुग्रंथ साहिब के शबदों का कीर्तन हुआ। दीवान सजाये गए। सिरोपा दे कर प्रबुद्ध जनो को सम्मानित किया। । गुरुपर्व प्रबंधक कमेटी के महासचिव इंद्रपाल सिंह ने बताया कि गुरुपर्व के अवसर पर आयोजित गुरमति समागम में दरबार साहेब अमृतसर के हजूरी रागी नरिंदर सिंह भाई गुरप्रीत सिंह पौंटा साहेब वाले गुरुद्वारा मंजी साहेब के हेड ग्रंथी भाई अमृत पाल सिंह,हजूरी रागी भाई बलविंदर सिंह, गुरु की महिमा का गुणगान किया। इस अवसर पर भाई मंजूर सिंह और गुरप्रीत सिंह नित्तनेम तथा पाठ सीरसि किया। भाई सूवा सिंह स्टेज सैकेट्री के दायत्वि के साथ गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल के बच्चे गुरवाणी का पाठ किया। इस अवसर पर अटुट लंगर बरता गया।इस अवसर पर विधायक जगमोहन सिंह, हरियाण स्टाफ सिलेक्शन कमीशन के सदस्य कपिल अत्रेजा,एचएसजीपीसी के उपाध्यक्ष गुलाब सिंह मूक बधिर कल्याण आयोग की चेयरमैन मेघा भंडारी,दर्शन सिंह सहगल मनप्रीत सिंह बाबा अंग्रेज सिंह पन्नूकांग्रेस के पूर्व शहर जिला अध्यक्ष अशोक खुराना ने मत्था टेका। उनको सिरौप भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर , गुरु पर्व प्रवंधक कमेटी के प्रधान वरींद्र सिंह, उप प्रधान तथा एचएसजीपीसी के सदस्य रतन सिंह महासचिव इंद्रपाल सिंह, गुरपाल सिंह डौनी, इंद्रजीत सिंह टीटू, ए पी एस चोपड़ा, जसपाल सिंह, हर प्रीत नरुला, जसपाल सिंह गगन मेहता,प्रीति पाल सिंह पन्नू ,गुरुतेज सिंह, राजेंद्र अरोड़ा, तेजेंद्र पाल सिंह डिम्पी, बेदी जसविंद सिंह बिल्ला ने भी मत्था टेका। इस अवसर पर देर रात तक कार्यक्रम चलते रहे। रात मे गुरुद्वारा रंग बिरंगी रोशनी से नहा उठा।

नरेंद्र बाली के जन्मदिन पर 44 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

करनाल। नेक्सा करनाल मोटर्स में करनाल राउंड टेबल के सौजन्य से स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर करनाल मोटर्स के प्रबंध निदेशक नरेंद्र बाली के 70 वें जन्मदिन पर आयोजित किया गया। प्रबंध निदेशक नरेंद्र बाली मुख्यातिथि के रूप में पधारे हुए थे जबकि करनाल मोटर्स के निदेशक गुरुजन्नत बाली ने शिविर की अध्यक्षता की। 172 बार रक्तदान और 84 बार प्लेटलेट्स दान कर चुके राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता डायमंड रक्तदाता एवं पर्यावरण प्रहरी डॉ. अशोक कुमार वर्मा शिविर के संयोजक थे। मुख्यातिथि पधारे नरेंद्र बाली ने अपने 70 वें जन्मदिन पर रक्तदाताओं को बैज लगाकर प्रोत्साहित किया और कहा कि आज के दिन रक्तदान शिविर के आयोजन करने का लक्ष्य समाज में ऐसे लोगों की सेवा करना है जो रक्त के अभाव से पीड़ित हैं। उन्होंने बताया कि वे अनेक बार रक्तदान कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है और एक स्वस्थ व्यक्ति ही दूसरे व्यक्ति को रक्तदान का उपहार दे सकता है। शिविर की अध्यक्षता कर रहे गुरुजन्नत बाली ने कहा कि करनाल राउंड टेबल विभिन्न क्षेत्रों में समाज और राष्ट्र कल्याण के कार्य करती है। उन्होंने बताया कि समय समय पर रक्तदान शिविर और अन्य सामाजिक कार्यों के माध्यम से कोई न कोई समाज सेवा का कार्य किया जाता है। हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी/ उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने प्रबंध निदेशक नरेंद्र बाली को जन्मदिन की बधाई देते हुए कहा कि समाज सेवा में आपका सहयोग सदैव स्मरणीय है। डॉ. वर्मा ने उपस्थित लोगों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि नशा मनुष्य के नाश का कारण

है तो दूसरी और रक्तदान समाज और राष्ट्र के लिए लाभकारी है। डॉ. वर्मा ने कहा कि युवा नशे की सुई नहीं अपितु रक्तदान की सुई लगवाकर रक्त के आभाव में पीड़ित की सहायता करें। नागरिक अस्पताल पानीपत के रक्त कोष से डॉ. सौरव गर्ग के नेतृत्व में दल आया जिसने 44 इकाई रक्त संग्रह किया। इस अवसर पर समूह प्रबंधक अनुज चौधरी, महाप्रबंधक मनोज कुमार, सन्नी, अजय शर्मा सहित सैकड़ों गणमान्य उपस्थित रहे।

वृंदावन धाम की यात्रा करने से मन को शांति और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है-कविन्द्र राणा

करनाल। कार्तिक पूर्णिमा व देव दीपावली के अवसर पर श्री श्याम बालाजी दर्शन सेवा समिति की ओर से वृंदावन धान के लिए बस यात्रा रवाना हुई। इस मौके पर पूर्व मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के प्रतिनिधि कविन्द्र राणा ने मुख्य अतिथि रूप में शिरकत। समिति के प्रधान प्रमोद मंगला व उप प्रधान विकास गर्ग ने पटका व फूलमालाएं पहनाकर कविन्द्र राणा का स्वागत किया। शहर के मुगल कनाल स्थित खेड़ा चौक से कविन्द्र राणा ने बस को झंडी देकर रवाना किया। इससे पूर्व कविन्द्र राणा व समिति के सदस्यों ने विधि-विधान पूजा अर्चना की और नारियल फोड़कर बस यात्रा का शुभारंभ गया। इस यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर कविन्द्र राणा ने कहा कि वृंदावन व अन्य धार्मिक यात्राएं करने से मन को शांति मिलती है और घर में सुख-समृद्धि आती है। श्री श्याम बालाजी दर्शन सेवा समिति सराहनीय कार्य कर रही है। हमें समीति के साथ जुड़कर परिवार

सहित धार्मिक यात्रा जरूर करनी चाहिए। इस अवसर पर समिति के प्रधान प्रमोद मंगला ने बताया कि श्री श्याम बालाजी दर्शन सेवा समिति द्वारा हर माह बस यात्रा रवाना की जाती है। पिछले पांच वर्षो से निर्स्वार्थ भाव से श्रद्धालुओं को श्री खाटू श्याम धाम, मेहंदीपुर बालाजी धाम, वृंदावन सहित अन्य धामों की यात्रा करवाई जा रही है। इस बार बस वृंदांवन धाम के लिए रवाना हो रही है। जिसमें भक्तजन बांके बिहारी मंदिर, राधाभल्लव लाल मंदिर, गोपीश्वर महादेव मंदिर, राधादामोदर, निधि वन, प्रेम मंदिर इस्कोन मंदिर आदि मंदिरों के दर्शन करेंगे। वहीं समिति के उपप्रधान विकास गर्ग ने बताया श्री श्याम बालाजी दर्शन सेवा समिति द्वारा हर माह श्रद्धालुओं को धार्मिक यात्रा करवाई जाती है। श्रद्धालुओं के लिए रहने व खाने पीने के लिए समिति की तरफ से उचित व्यवस्था की जाती है। इस अवसर पर मोहन लोदी, समिति के प्रधान प्रमोद मंगला, उप प्रधान विकास गर्ग, संजीव मित्तल, योगेन्द्र शर्मा, अनिल मित्तल, जतिन, रेनु मंगला, विपिन गुप्ता, ममता रानी व अशा रानी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार के लिए अब 26 नवंबर तक करें आवेदन-एडीसी

करनाल। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग, हरियाणा एवं हरेडा द्वारा राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कारों की एक अनूठी योजना चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत वर्ष 2023-24 के लिए विभिन्न श्रेणियों के पात्र उपभोक्ताओं से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि को बढ़ाकर 26 नवम्बर 2024 कर दिया गया है। अतिरिक्त उपायुक्त यश जालुका ने बताया कि हरियाणा राज्य में स्थित औद्योगिक, वाणिज्यिक, राजकीय, संस्थागत, समूह आवासीय भवनों को ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में श्रेष्ठ उपाय करने, तकनीक अपनाने, ऊर्जा दक्षता हासिल करने के फलस्वरूप राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कारों से अलंकृत किया जाता है। इसके अलावा इनोवेशन/नई प्रौद्योगिकियां/अनुसंधान एवं विकास परियोजनाएं जिनमें नवीन प्रचार परियोजनाएं शामिल हों, ऊर्जा संरक्षण में अनुसंधान और नवाचार, ऊर्जा दक्षता, अपशिष्ट से ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र, कुशल प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में श्रेष्ठ कार्य करने वाली संस्थाएं भी राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार के लिए आवेदन कर सकती हैं। इन पुरस्कारों में 2 लाख रुपये तक की नकद राशि, स्मृति चिह्न तथा प्रमाण पत्र प्रदान किये जाते हैं।

उन्होंने बताया कि नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग, हरियाणा एवं हरेडा द्वारा वर्ष 2023-24 के लिए राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार

प्रदान करने हेतु पात्र उपभोक्ताओं से आवेदन आमंत्रित किये गए हैं। इस योजना के दिशा-निर्देशों की एक प्रति हरेडा की वेबसाइट http://www.hareda.gov.in/ पर उपलब्ध है। आवेदन के बारे में अधिक जानकारी के लिए अतिरिक्त उपायुक्त कार्यालय करनाल के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग में किसी भी कार्य दिवस में संपर्क किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि पात्र उपभोक्ता अपना आवेदन अतिरिक्त उपायुक्त कार्यालय के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग में 26 नवम्बर 2024 तक जमा करवा सकते हैं।

एडीसी द्वारा जिला करनाल में स्थित औद्योगिक, वाणिज्यिक, राजकीय, संस्थागत, समूह आवासीय भवनों के मालिकों, इनोवेशन/नई प्रौद्योगिकियां/अनुसंधान एवं विकास परियोजनाएं जिनमें नवीन प्रचार परियोजनाएं शामिल हों , ऊर्जा संरक्षण में अनुसंधान और नवाचार, ऊर्जा दक्षता, अपशिष्ट से ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र तथा कुशल प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में श्रेष्ठ कार्य करने वाली संस्थाओं से आह्वान किया है वे इन पुरस्कारों के लिए अधिक से अधिक आवेदन करें। उन्होंने बताया कि केवल उन्हीं आवेदनों पर विचार किया जाएगा जो संबंधित जिले के अपर उपायुक्त-सह-मुख्य परियोजना अधिकारी से विधिवत सत्यापित हैं। अधिक जानकारी के लिए कार्यालय अतिरिक्त उपायुक्त, कमरा नं 16, दूसरी मंजिल, करनाल में संपर्क करें।

धर्म का प्रचार करने के साथ संस्कृति का संबर्धन करना ही साधु का लक्ष्य-मानवी जी महाराज

करनाल। जैन साध्वी विदुषी श्री मानवी जी महाराज ने कहा है कि साधु जीवन का टारगेट जन जन तक धर्म का प्रचार करने के साथ्सा संस्कृति की रक्षा करना हैं। उन्होंने कहा कि साधु प्रवाहित होने वाली धारा के समान हैं। चार मासह के लिए साधु और साध्वी की दिशाएं बंध जाती हैं। साधु का परिवार सरा संसार हैं। लालच सभी दुखों का मूल होता हैं। कर्म हमेशा निरपेक्ष भाव से करना चाहिए। जो भी अपेक्षा रखते हैं वह हमेशा दुखी रहते हें। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में सभी जीवों को समान माना गया हैं। हमे जीव हिंसा से बचना चाहिए। वह आज करनाल के हनुमान गली स्थित जैन स्थानक में प्रवचन कर रही थीं।चार माह बारह दिन की उनकी चातुर्मास की अवधि रही। आज जैन साध्वी को विदाई दी गई। इस अवसर पर जैन साध्वी मानवी जी महाराज, सोनाक्षी जी तथा दोक्षी जी महाराज को मान की चादर से सम्मनित किया। उनके प्रति उपस्थित जनों ने अपने भाव प्रस्तुत किए। पिछले चार माह से लगातार जैन स्थानक में जैन परमेष्ठी महामंत्र णमोकार मंत्र का जाप चल रहा हैं। जैन साध्वी मानवी जी महाराज के चातुर्मास का आज अंतिम दिन था।वह 16 नवंवर को यहां सें विहार कर आज का अखंड जाप राजैश जैन तथा उनके परिवार ने करवाया। ने करवाया था। सैक्टर 14 सिथत जैन स्थानक पहुंचेंगी। इस अवसर पर जैन साध्वी जी ने कहा कि जैन परमेष्ठी महामंत्र केवल एकस मात्र महासमंत्र है जो प्राकृत भाषा में लिखा गया है। यह आदि मंत्र हैं। इसमें सभी को नमन किया गया हें। यह कष्ट नाशक महामंत्र हैं। इस अवसर प कार्यक्रम का संचालन स्थानक के महामंत्री नवीन जैन ने किया। उन्होंने कहा कि धर्म की प्रभावना हो रही हैं। उन्होंने कहा पिछले चार सालों से करनाल धर्मनगरी बना हुआ हैं। इस अवसर पर प्रधान अशोक जैन, सतीश जैन, प्रदीप जैन, नवरन जैन, एसके जैन, सौरभ जैन, कृष्ण जैन विनोद कुमार जैन,इंदर जैन रमन जैन, सुजय जैन, गुलशसन गुलाटी, अतुल कोहली, ईश्वर जैन, प्रेम जैन, राजीव जैन, कृष्ण जैन, अनिल जैन, महेंद्र जैन, कर्मवीर चासैहान, प्रवीण जैन, जयपाल जैन,सुनील जैन, सुनीता जैन,निशा जैन नीतू जैन सरिता जैन,

एसपी चौहान ने हरियाणा में नशे जैसी बुराई को जड़ से खत्म करने के लिए मुख्यमंत्री नायब सैनी को लिखा पत्र

करनाल। नवचेतना मंच के संयोजक व एसपी चौहान द स्ट्रगलिंग मैन के असल नायक एसपी चौहान ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को पत्र लिखकर कहा है कि वे लंबे समय से समाज के दुख- सुख से जुड़े रहे हैं इस नाते समाज किस दिशा में बढ़ रहा है उनका ध्यान इस पर लगातार बना रहता है, इस बात से प्रसन्नता होती है कि हरियाणा इंफ्रास्ट्रक्चर में तेजी से बढ़ रहा है, विकसित देशो की तर्ज पर आर्थिक उन्नति हो रही है। सरकार के हाव भाव देखकर लगता है कि आने वाले समय में युवाओं को तेजी से रोजगार मिलेगा और युवाओं की दिक्कतें दूर होंगी। शिक्षा का फैलाव बढ़ेगा, इन तमाम विकास की सीढ़ियों के चलते आपका ध्यान नशे जैसी सामाजिक बुराई की तरफ दिलाना चाहता हूं जो ना केवल हमारे युवाओं को अपनी गिरफ्त में ले रही है बल्कि स्कूली बच्चों व कॉलेज के स्टूडेंटस के जीवन को अपने काफिर पंजों से मिटाने को आतुर है। आज समाज व देश के दुश्मन अपने नशे के

शिक्षा का फैलाव बढ़ेगा, इन तमाम विकास की सीढ़ियों के चलते आपका ध्यान नशे जैसी सामाजिक बुराई की तरफ दिलाना चाहता हूं जो ना केवल हमारे युवाओं को अपनी गिरफ्त में ले रही है बल्कि स्कूली बच्चों व कॉलेज के स्टूडेंटस के जीवन को अपने काफिर पंजों से मिटाने को आतुर है।

कारोबार को स्कूल व कॉलेजों की चारदीवारी में घुसकर करने लगे हैं। शिक्षा के मंदिरों को नशे जैसी बीमारी से बचाने के लिए गंभीर प्रयासों की जरूरत है। ऐसे में हम मुख्यमंत्री हरियाणा व हरियाणा सरकार से विनम्र भाव से निवेदन करते हैं कि वे हरियाणा के विकास के साथ -साथ इस नशे के बढ़ते साम्राज्य पर अंकुश लगाएं ताकि देश व राज्य अंधकार में जाने से बच सके। मुख्यमंत्री जी, हजारों लाखों घर मात्र नशे की वजह से उजड़ रहे हैं, इस अभियान में नवचेतना मंच जिसमे कई सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक संगठन जुड़े हैं वे हरियाणा सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने को तैयार हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन में हरियाणा प्रदेश से नशे की बीमारी सदा के लिए खत्म हो जाए और युवाओं का जीवन परिवार सहित खुशहाल हो, इसके लिए नशे के खिलाफ प्रदेश में गंभीर रणनीति बनाई जानी चाहिए। नशे को सुपोर्ट करने वाले लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। नशों पर प्रतिबंध के लिए सरकारी पॉलिसी सख्ती से लागू हो, इस विषय पर प्रदेश स्तर पर काम होना चाहिए। जीवन में वफ़ा के मायने बताने के साथ-साथ अश्लीलता व सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लगातार अभियान चलाने वाले नवचेतना मंच के संयोजक एसपी चौहान ने कहा कि वे चाहते हैं कि प्रदेश का युवाओं का जीवन खुशहाल हो, बच्चे पढ़लिखकर अपने मां बाप, गांव, जिले, प्रदेश व देश का नाम रोशन करें और नशे जैसे कलंक से दूर रहें। मुख्यमंत्री व हरियाणा सरकार के सहयोग से नशे के खिलाफ नवचेतना मंच गंभीर मुहिम चलाने को तैयार हैं। बता दें कि एसपी चौहान द स्ट्रगलिंग मैन फिल्म केअसल नायक एसपी चौहान पर बनी फिल्म नशे के कारोबार के खिलाफ है और यह उनके जीवन की सच्ची घटना पर आधारित है जिसमे उन्होंने अपने स्कूली जीवन में स्टूडेंटस और ग्रामीणो के साथ मिलकर करीब 4000 लोगों की शराब छुड़वाई थी। एसपी चौहान के जीवन पर लेखक संदीप साहिल द्वारा लिखी बॉयोग्राफी संघर्ष को सलाम में नशे जैसी बुराई को प्रमुखता से उठाया गया, बाद में जिस पर अभिनेता जिम्मी शेरगिल, यशपाल शर्मा अभिनीत फिल्म बनीं जिसे अमोजोन व अन्य चैनलों पर करोड़ों लोग देख चुके हैं। फिल्म नशे के अलावा समाज के असली मुद्दों को दर्शकों के सामने आईने की तरह पेश करती है।

गाजियाबाद जिला निर्वाचन अधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह ने किया पोलिंग पार्टी रवानगी स्थल व मतगणना स्थल का स्थलीय निरीक्षण

संस्कार उजाला
गाजियाबाद (आशा चौधरी)
जनपद गाजियाबाद विधानसभा 56 में उपनिर्वाचन के मद्देनजर जिला निर्वाचन अधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह द्वारा पोलिंग पार्टी रवानगी स्थल कमला नेहरू नगर व मतगणना स्थल गोविन्दपुरम अनाज मण्डी का स्थलीय निरीक्षण किया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह ने नगर निगम के अधिकारियों को निर्देशित किया कि वह समयान्तराल में ही निर्वाचन से सम्बंधित दोनो स्थलों पर सफाई कराते हुए कूड़ें का निस्तारण करें। इसके साथ ही नियमानुसार निर्वाचन सम्बंधी जो भी कार्य शेष हैं, उन्हें पूर्ण करें। उन्होने सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि मौसम अनुकूल परिस्थतियों को देखते हुए नियमानुसार टैंटेज, विद्युत, स्वास्थ्य, सुरक्षा, पेयजल, टायलेट सहित अन्य व्यवस्थाओं की तैयारियां रखें।निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी प्रशासन रणविजय सिंह, अधिशासी अधिकारी पीडब्लूडी राजाराम, एडीओ निर्वाचन हरिकिशन शर्मा सहित अन्य विभागों के अधिकारी,कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

गाजियाबाद उपचुनाव प्रचार मे उतरें दमखम से गुरुपर्व केअवसर पर सत्यपाल चौधरी को सिख समाज के गुरुद्वारों के गियानियो ने दिया आशीर्वाद*

संस्कार उजाला
गाज़ियाबाद(आशा चौधरी,)
15 नवंबर:आजाद समाज पार्टी के गाज़ियाबाद की 56-विधानसभा सीट से प्रत्याशी श्री सत्यपाल चौधरी ने आज क्षेत्र में जनसम्पर्क अभियान को तेजी से आगे बढ़ाया। उन्होंने जनता से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं और पार्टी के जनकल्याणकारी एजेंडे को साझा किया। सुबह 10 बजे, चौधरी ने हापुड़ मोड़, शिब्बनपुरा और बजरिया के गुरुद्वारों में जाकर श्रद्धालुओं से मुलाकात की और आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद 11 बजे उन्होंने बहरामपुर, राहुल विहार और अकबरपुर में घर-घर जाकर लोगों से संवाद किया। इस दौरान उन्होंने स्थानीय मुद्दों और पार्टी की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। दोपहर 1 बजे, मस्जिदों में जनसम्पर्क करते हुए उन्होंने सौहार्दपूर्ण वातावरण में समुदाय से

बातचीत की। दोपहर 2 बजे, आजाद समाज पार्टी के लोकप्रिय गुर्जर नेता श्री रवींद्र सिंह भाटी के साथ प्रताप विहार में नुक्कड़ सभा आयोजित की। सभा में भारी संख्या में उपस्थित लोगों ने पार्टी के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया। इसके बाद, विजयनगर सम्राट चौक पर नुक्कड़ सभा का आयोजन किया गया, जहां बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया और श्री चौधरी के विजन को समर्थन दिया। शाम 3 बजे बजरिया में एक और नुक्कड़ सभा का आयोजन हुआ, जिसमें श्री चौधरी ने जनता को आश्वस्त किया कि उनकी प्राथमिकता क्षेत्र की समस्याओं को सुलझाना और विकास को गति देना है। शाम 4 बजे गांधी नगर और 5 बजे कोटगांव में चौधरी ने जनसम्पर्क अभियान को आगे बढ़ाते हुए जनता का समर्थन मांगा। दिनभर चले इस अभियान में जनता का जोश और समर्थन देखने लायक था। बड़ी संख्या में लोगों ने आजाद समाज पार्टी के प्रति भरोसा जताया और श्री चौधरी के विजन की सराहना की। सत्यपाल चौधरी ने कहा, ₹यह जनसम्पर्क अभियान हमारे लिए जनता से जुड़ने और उनकी उम्मीदों को समझने का माध्यम है। जनता का यह उत्साह और समर्थन हमें बदलाव की दिशा में काम करने की प्रेरणा देता है

चाय पर चर्चाः जनसेवा और समर्पण का संकल्प के आधारभूत की वोट की अपील

संस्कार उजाला
गाजियाबाद (आशा चौधरी)
सदर विधानसभा 56 में शहर मंडल अध्यक्ष माहिम गुप्ता और मंडल प्रभारी मोनिका पण्डिता के नेतृत्व में शक्ति केंद्र 4, 9, 13, 15,16, 19, ,21,22 ,पर चाय पर चर्चा का आयोजन किया गया। इस आयोजन में शहर के कई वरिष्ठ नेताओं ने प्रमुख लोगों के साथ संवाद किया। विशेष रूप सेउत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री कुँवर बृजेश सिंह , पूर्व सांसद रमेश चन्द्र तोमर , विधान परिषद सदस्य दिनेश गोयल, पूर्व क्षेत्रीय महामंत्री अशोक मोगा, पूर्व क्षेत्र कोषाध्यक्ष पवन गोयल, भाजपा नेता तरुण शर्मा और क्षेत्रीय महामंत्री प्रदीप चौहान वाल्मीकि ने उपस्थित लोगों के साथ विचार-विमर्श कर आगामी 20 तारीख को प्रचंड बहुमत से भाजपा प्रत्याशी संजीव शर्मा को विजयी बनाने की अपील की। मंडल अध्यक्ष महिम गुप्ता एवं कार्यक्रम संयोजक शरद शर्मा के साथ पार्षद शीतल चौधरी , रोहित चौहान , बंटी वाल्मीकि , विनीत त्यागी , अनिल जिंदल, वंदना पांडेय, लवली कौर, जग्गी, राकेश त्यागी , जावेद मलिक के द्वारा बूथ से बूथ पर चलाए जा रहे सघन प्रचार अभियान के द्वारा निश्चित रूप से भाजपा प्रत्याशी संजीव शर्मा एक ऐतिहासिक जीत की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

गाजियाबाद समाजवादी व्यापार सभा, व्यापारियों का उत्पीड़न कर रही है डबल इंजन की सरकार व्यापारियों की सबसे बड़ी हितैषी समाजवादी पार्टीः प्रदीप जायसवाल, प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी व्यापार सभा

संस्कार उजाला
गाजियाबाद (आशा चौधरी)
समाजवादी व्यापार सभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल ने कहा कि इस उपचुनाव में 56-गाजियाबाद विधान सभा से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी सिंह राज जाटव को व्यापारियों का पूर्ण समर्थन मिल रहा है।प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि पूरे प्रदेश में व्यापारियों का उत्पीड़न, शोषण और दोहन चरम पर हैं, सरकारी विभाग लूट का अड्डा बन चुके हैं और उनके अधिकारी बेलगाम हैं।विभागीय जांच अभियान के नाम पर किया जा रहा व्यापारियों से अपराधियों जैसा व्यवहार, जिससे व्यापारी समाज दहशत के माहौल में जी रहा है और आने वाले 20 नवम्बर को उ०प्र० में होने वाले विधान सभा के उपचुनाव में खुदरा, छोटे, मध्य दुकानदारों, व्यापारियों एवं उद्यमियों ने इंडिया गठबन्धन से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों को भारी मतों से जिताकर भाजपा को देगी मुहतोड़ जवाब। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के निदेर्शानुसार गाजियाबाद उपचुनाव में अधिक से अधिक व्यापारियों का वोट समाजवादी पार्टी के पक्ष करने के लिए विगत 15 दिनों से कैंप कर जनपद में समाजवादी पार्टी में व्यापारियों की प्रकोष्ठ ₹समाजवादी व्यापार सभा, उ०प्र०₹ के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल ने आज एक निजी रेस्टोरेंट में जनपद के पत्र-प्रतिनिधियों के बीच प्रेस-कॉन्फ्रेंस कर व्यापारी समाज से उपचुनाव में समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी सिंह राज जाटव को अधिक से अधिक अपना और अपने परिवार का वोट समाजवादी पार्टी के चुनाव चिन्ह साइकिल को दिलवा कर जिताने की अपील किया। प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि अभी दशहरा, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज, डाला छठ के पर्व और अभी चल रहे शादियों के समय उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देश पर पूरे प्रदेश के समस्त जनपदों में जीएसटी विभाग द्वारा व्यापारियों संग लूट मचाया जा रहा है। विभागीय अधिकारी अभियान के अन्तर्गत जांच के नाम पर हमारे भोले-भाले, सीधे-सादे दुकानदारों के प्रतिष्ठान और गोदामों पर छापामार मानवीय चूक होने पर अपराधियों जैसी व्यवहार के साथ

कड़ी कार्रवाई कर रहे हैं, जिसकी हम पर जोर निंदा करते हैं और प्रदेश सरकार से ऐसी व्यापारी विरोधी और अव्यवहारिक कार्यवाही को तत्काल रोकने की मांग करते हैं। पत्रकार वार्ता प्रदेश उपाध्यक्ष अजय सूद ने बताया कि अपने आपको व्यापारियों की पार्टी होने का फर्जी दावा करने वाली भाजपा की डबल इंजन की सरकार में सबसे ज्यादा व्यापारी परेशान हैं, जबकि समाजवादी पार्टी की उत्तर प्रदेश में जब-जब सरकार रही है व्यापारी हमेशा फला-फूला है उनका उत्पीड़न नहीं हुआ बल्कि व्यापारिक हित में धारा 3/7 को शिथिल करना, चुंगी प्रथा समाप्त करना, इंस्पेक्टर राज समाप्त करना, तहबाजारी समाप्त करना और पंजीकृत व्यापारियों के लिए निःशुल्क व्यापारी दुर्घटना बीमा योजना प्रारम्भ करना आदि। पत्रकार वार्ता में समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव डा०अजय चौरसिया ने कहा कि समाजवादी पार्टी की पूर्व सरकार में पूरे प्रदेश में प्रत्येक जनपदों में समस्त जनहित के विकास कार्य हुए जिससे हर सम्प्रदाय, जाति, वर्ग और समाज आज भी लाभान्वित हो रहा है।गाजियाबाद में जैसे मेट्रो का जाल बिछाया, मेरठ तिराहा का निर्माण, पुराने बस अड्डा का पुल, प्रताप विहार जाने के लिए मार्ग, गाजियाबाद और नोएडा को जोड़ने का काम किया (2 घण्टे की दूरी को 20 मिनट में कर दिया), नए हिंडन पुल का निर्माण, दिलशाद गार्डन को जोड़ने के लिए एलिवेटेड पुल बनाया आदि कार्यों को आज भी जनपद गाजियाबाद की जनता याद कर रही है। प्रेस कॉन्फ्रेंस के अन्त में प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि सामान्य सीट पर समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति को अर्थात जाटव समाज को गाजियाबाद सदर सीट से लड़ाने का निर्णय केवल एक समाजवादी ही कर सकता है, इसलिए गाजियाबाद की सम्मानित जनता के आशीर्वाद और सहयोग से ढऊअ का प्रत्याशी सिंह राज जाटव भारी मतों से जीतने का रहे हैं। गाजियाबाद के वरिष्ठ सपा व व्यापारी नेता एवं राज्य वाणिज्य कर सलाहकार समिति उप्र शासन के पूर्व सदस्य नवीन गुप्ता को समाजवादी व्यापार सभा उ०प्र० के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल ने अपनी राज्य कार्यकारिणी में प्रदेश सचिव मनोनीत किया, मौजूद सभी व्यापारियों ने बधाई दी। पत्रकार वार्ता में मुख्य रूप से वरिष्ठ व्यापारी नेता अभिषेक गर्ग, कांग्रेस से पूर्व मंत्री सतीश शर्मा, समाजवादी व्यापार के जिलाध्यक्ष अनिल चौधरी, प्रदेश उपाध्यक्ष अजय सूद, सपा प्रदेश सचिव डा०अजय चौरसिया, सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता द्वय प्रो० भुवन भास्कर जोशी व डॉ०एस के दूबे, प्रदेश सचिव व गाजियाबाद मण्डल प्रभारी सौरभ अग्रवाल, मेरठ महानगर अध्यक्ष सोनू कुमार, वरिष्ठ व्यापारी नेता नवीन गुप्ता, पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष ओपी खण्डेलवाल, पूर्व प्रदेश सदस्य नरेश बत्रा आदि उपस्थित थे। प्रदीप जायसवाल)प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी व्यापार सभा, उ०प्र० मो. 8182000001

गाज़ियाबाद में सत्यपाल चौधरी के समर्थन में भीम आर्मी का ऐतिहासिक रोड शो बदलाव की नई लहर

संस्कार उजाला
गाजियाबाद(आशा चौधरी)
गाज़ियाबाद विधानसभा क्षेत्र 56 से आजाद समाज पार्टी के प्रत्याशी सत्यपाल चौधरी जी के समर्थन में भीम आर्मी भारत एकता मिशन द्वारा एक ऐतिहासिक और जोरदार रोड शो आयोजित किया गया, जिसने स्थानीय जनता में जबर दस्त जोश और समर्थन उत्पन्न किया। यह रोड शो, जो विनय रतन सिंह के नेतृत्व में हुआ, ने गाज़ियाबाद में राजनीतिक माहौल को पूरी तरह से बदल दिया। सुबह 11 बजे, भीम आर्मी भारत एकता मिशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विनय रतन सिंह का स्वागत उनके मुख्य

चुनाव कार्यालय पर हुआ। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा, भीम आर्मी हमेशा उस आवाज के साथ खड़ी है जो समाज में समानता और न्याय की बात करता है। हम सत्यपाल चौधरी जी के नेतृत्व में गाज़ियाबाद को एक नया दिशा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उनके शब्दों ने हर दिल में उमंग भर दी। सुबह 11:30 बजे, विनय रतन सिंह और सत्यपाल चौधरी जी ने केला भट्टा और इस्लाम नगर में एक विशाल रोड शो किया। लोग सड़क पर उमड़ पड़े, और हर तरफ नारे गूंजने लगे झ सत्यपाल चौधरी , तुम्हारा नाम चलेगा! इस दौरान उन्होंने स्थानीय निवासियों से मुलाकात की और उनके मुद्दों पर चर्चा की। शाम 5:30 बजे डूडा हेडा में आयोजित नुक्कड़ सभा में सत्यपाल चौधरी ने गाज़ियाबाद की समस्याओं पर खुलकर बात की और अपने समाधान प्रस्तुत किए। इसके बाद, शाम 7 बजे सुदामापुरी में भी एक नुक्कड़ सभा हुई, जहां उन्होंने जनता से सीधा संवाद किया और उनके सवालों का जवाब दिया। अंतिम कार्यक्रम शाम 8 बजे अंबेडकर नगर में हुआ, जहां जनसंपर्क अभियान ने क्षेत्रवासियों को एकजुट किया और चुनावी समर्थन की लहर पैदा की। इस पूरे अभियान में पूर्व मेयर प्रत्याशी मुन्नी चौधरी, वरिष्ठ नेता संगीता चौधरी, युवा नेता भीम आर्मी एकता सिंह, युवा नेत्री नीशू आजाद और वरिष्ठ अरढ नेत्री मीना जय जी ने भी भाग लिया और अपना समर्थन दिया। इन नेताओं ने मिलकर गाज़ियाबाद में सत्यपाल चौधरी जी की विजय सुनिश्चित करने का संकल्प लिया। यह रोड शो केवल एक चुनावी अभियान नहीं था, बल्कि यह गाज़ियाबाद में बदलाव की एक नई शुरूआत का प्रतीक बन गया। सत्यपाल चौधरी और उनके समर्थकों की यह पहल न केवल राजनीति, बल्कि समाज में समानता और समरसता के लिए एक मजबूत कदम साबित होगी।

राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस समारोह कार्यक्रम का आयोजन।

संस्कार उजाला
गाजियाबाद(आशा चौधरी)
विकास भवन सभागार कलेक्ट्रेट गाजियाबाद में प्रातः 10 बजे किया गया । कार्यक्रम का उद्घाटन जिला समाज कल्याण अधिकारी (विकास) दिग्विजय सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी वेद प्रकाश मिश्रा , जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी पीयूष चंद्र राय एवं आदिवासी विचारक डां बनवारी लाल गोंड अध्यक्ष, जनजातीय शोध एवं विकास संस्थान द्वारा राष्ट्र एवं जननायक क्रांतिदूत बिरसा मुंडा के चित्र पर माल्यार्पण और दीया जलाकर आदिवासी रीति-रिवाज से संयुक्त रुप से किया गया । गौरव दिवस समारोह कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे ज़िला समाज कल्याण अधिकारी(विकास) दिग्विजय

सिंह ने आज के दिवस को स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बलिदान से प्रेरणास्रोंत बताया ।राष्ट्रीय गौरव दिवस समारोह कार्यक्रम के स्वागत सम्बोधन में ज़िला समाज कल्याण अधिकारी वेद प्रकाश मिश्रा ने सभी के स्वागत के साथ जनजाति समाज के विकास सम्बन्धित योजनाओ पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला । गौरव दिवस समारोह को सम्बोधित करते हुए आदिवासी विचारक डॉ . बनवारी लाल गोंड ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्र एवं जननायक क्रांतिदूत बिरसा मुंडा का सम्पूर्ण जीवन स्वाधीनता संग्राम की चेतनायुक्त विद्रोह का नेतृत्व कर सिर्फ आदिवासी समुदाय के ही नही अपितु राष्ट्रीयस्तर पर धरती आबा के रुप विख्यात हो गये ।

सुनील त्यागी ने 20 नवंबर को विधानसभा सीट पर उप चुनाव है उस दिन सभी मतदाताओं से अपिल वोट अवश्य दे

संस्कार उजाला
गाजियाबाद (आशा चौधरी)
सुनील त्यागी ने कहा कि 20 नवंबर को गाजियाबाद सदर विधानसभा सीट पर उप चुनाव है। उस दिन सभी मतदाताओं से अपिल की वोट अवश्य दे सुनील त्यागी ने कहा कि चुनाव लोंकतंत्र के लिए महापर्व है और वोट हमारा सबसे अधिकार है। वोट से ही हम अपना व अपने शहर का भविष्य संवारते है अतः हमें 20 नवंबर को वोट देने अवश्य जाना है। हमें यह बात याद रखनी है कि लोकतंत्र में हर वोट की कीमत होती है। हमारा एक वोट हमारे मोहल्ले, वार्ड, शहर, प्रदेश व देश को विकास के पथ पर आगे बढा सकता है और हमें सभी आवश्यक सूविधाएं उपलब्ध करा सकता है। हमें यह बात भी याद रखनी

है कि घूमने के लिए तो कभी भी जा सकते हैं। पार्टी आदि भी हम किसी भी दिन कर सकते हैं, मगर वोट देने का मौका तो बहुत कम मिलता है। अतः हमें यह मौका गंवाना नहीं है। 20 नवंबर को अपने घर से बाहर निकले अपने वोट को पहचाने और वोट डालने अवश्य जाना है। उस दिन हमारा लक्ष्य पहले मतदान करें फिर जलपान करे सुनील त्यागी ।

गाजियाबाद पूछ रहा धर्म रक्षक जेल मे क्यों खड़ा? पूनम चौधरी

संस्कार उजाला
गाजियाबाद(आशा चौधरी)
विधानसभा -56 हिन्दू रक्षा दल प्रत्याशी पूनम चौधरी ने शांति नगर, विवेकानंद नगर, माता कॉलोनी, सेन विहार, और विभिन्न कॉलोनी मे जन सभा करके लोगो से 20 नवंबर को पानी के टेंक पर वोट करने की अपील करी और एक नया नारा दिया जिसमे प्रशासन से जवाब मांगती नजर आई- गाजियाबाद पूछ रहा धर्म रक्षक जेल मे क्यों खड़ा? और इसका मतलब भी समझाया कि, धर्म के कार्य करने वाले लोगो को इनाम मे क्या जेल मिलनी चाहिए? जो व्यक्ति दिन रात लव जिहाद से अपनी बहन बेटी को बचाता

रहा, कटती गौमाता के लिए आंदोलन करता रहा, हिन्दू परिवारों को ताकत देने का काम करता रहा, बंगलादेश मे हिन्दू बहन बेटिओं को जब जिहादी लोग उठा कर ले जा रहे थे वहा हिन्दू परिवारों के घरो मे आग लगाई जा रही थी तब केवल पिंकी चौधरी जी ने आवाज उठाई और उन्होंने प्रधानमंत्री को अल्टीमेट दिया था की अगर बांग्लादेश मे मेरे हिन्दू परिवारों पर अत्याचर नहीं रुका तो मे यहां बंग्लादेशीओ को खडेदने का काम करूंगा पर भारत सरकार ने बंगलादेश के हिन्दुओं की को सुध नहीं ली तब पिंकी भैया ने गाजियाबाद मे अवैध तरिके से रहने वाले जिहादिओं को भगाने का काम करा पर ये बात शासन को नागवारा गुजरी और एक हिन्दू शेर को सलाखो के पीछे डाल दिया पर उनकी इस लड़ाई को मे निरंतर लड़ूंगी और प्रयास करती रहूंगी की यहां बंगलादेश जैसी स्थिति कभी न बने अगर मुझे गाजियाबाद की जनता विधायक बना विधानसभा भेजती है तो नारी सुरक्षा के लिए अहम कदम उठाउंगी और अपने हिन्दू परिवारों को एकजुट करने के लिए हनुमान चालीसा, सुंदरकांड पाठ, प्रभात फेरी, सामुदायिक भोज, सेमिनार और यज्ञ जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। हर मंगलवार को धार्मिक स्थलों पर सामुदायिक बैठकें होंगी, जहां जल संरक्षण, गौ संरक्षण, और समाज में फैली हिंदू विरोधी गतिविधियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के प्रयास किए जाएंगे।

नौकरी के नाम पर बरेली के युवक से दो लाख ठगे,रिपोर्ट दर्ज

संस्कार उजाला
खुटार शाहजहांपुर।
खुटार ,,, बरेली के युवक से सरकारी नौकरी लगवाने के नाम पर दो लाख रुपए ठग लिए। पीड़ित की तहरीर के आधार पर मामले मे पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बरेली के थाना इज्जतनगर के मोहल्ला राजेंद्र नगर निवासी मयंक मिश्र ने पुलिस को बताया

कि खुटार में उसकी ससुराल है। क्षेत्र के गांव रौतापुर कलां निवासी मुनीश तिवारी का उसकी ससुराल में आना जाना लगा रहता था। जिससे मुनीश तिवारी से परिचय हो गया। जिसके बाद आदित्य तिवारी व रवि ने उसको बताया कि उसके चाचा मुनीश तिवारी यदि कोई काम हो तो बताना।जिसके बाद एक दिन पीड़ित दोनो के साथ मुनीश तिवारी से मिलने उनके घर गांव रौतापुर कलां पहुंच गया। मुनीश तिवारी ने मयंक मिश्र से उसकी नौकरी लगवाने की बात कही। और उसके बदले मे दो लाख रुपए की मांग की मयंक मिश्र ने दो लाख रुपए मुनीश तिवारी के खाते में आरटीजेएस के मध्यम से डाल दिए। काफी समय तक नौकरी न लगने पर पीड़ित ने मुनीश तिवारी से कई बार संपर्क किया लेकिन संपर्क नहीं हो सका। तब पीड़ित को धोखाधड़ी होने का एहसास होने लगा। पुलिस ने मयंक मिश्र की तहरीर के आधार पर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजकुमार शर्मा ने वैकुंठ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड सी -285, सेक्टर-11, विजय नगर, गाजियाबाद से छपवाकर कार्यालय 178 राहुल विहार विजय नगर,गाजियाबाद से प्रकाशित किया है। किसी खबर या लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
सभी विवादों का निस्तारण जिला न्यायालय गाजियाबाद में होगा। प्रबंध संपादक-महेश कुमार - 9911733939, कानूनी सलाह- नरेंद्र सिंह रणोत एडवोकेट, सलाहकार कुशल सिंह, RNI No-UPHIN/2013/50466, Editor R.K. Sharma : 09456278011